स्वेन



मूल लेखिका—

सेल्मा लेजरलाफ

[नोबुल पुरस्कार विजयिनी]



प्रकाशक—

एस० एस० मेहता ऐण्ड ब्रदर्स

६३ सूतटोला-बनारस



प्रथमबार] सं० १९९९ वि० [मूल्य ३)

प्रकाशक—
पं० गिरिजाशंकर मेहता
एस० एस० मेहता एंड ब्रदर्स
काशी।

नोबुल-पुरस्कार के निर्णायकों की राय:—

For reason of the noble idealism, the wealth of imagination, the soulful quality of style which characterise her books"

मुद्रक—
पं० गिरिजाशंकर मेहता
मेहता फाइन आर्ट प्रेस, काशी

सेवा में—

सप्रेम भेंट

दो शब्द

आज यौरप की सर्वश्रेष्ठ उपन्यास लेखिका [illegible] लिखित [illegible] का अंग्रेज़ी नाम 'Th[illegible]' का हिन्दी अनुवाद पाठकों की सेवा में भेंट करते हुए अपार आनन्द हो रहा है। पुस्तक कैसी है, इसका बताना मानो सूर्य को दीपक दिखाना है। फिर भी इतना लिखना अनुचित न होगा कि यह पुस्तक इस महान लेखिका की सर्वोत्तम औपन्यासिक रचना है।

इसमें मानव जीवन की अनन्त पवित्रता और महत्ता का अतिक्रमण करना कितना भयंकर अपराध है, युद्ध,

जो दिन-दहाड़े हजारों निर्दोष प्राणियों को तलवार के घाट उतार देता है, मानव-जाति का कितना सघातक शत्रु है; ससार अतस्तल को गभीर भावनाओं को पहचानने में धोखा खाकर कितनी निर्दयता के साथ निरपराधियों को पैरों तले रौंदा करता है और समाज से बहिष्कृत व्यक्ति का जीवन-पथ निराशा के गहन अधकार से आच्छादित होकर कितना दुरतिक्रम्य बन जाता है—इसका ऐसा मर्मस्पर्शी, करुण और भावपूर्ण चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है कि पढ़कर दिल में अहिंसा, जाति प्रेम और आत्मोत्सर्ग के भाव भरे बिना नहीं रहते। यह उपन्यास नहीं, आधुनिक संसार की अधोगति और क्रूरता का रोमाचकारी खाका है, जिसमें कथानक के आवरण में कुशल लेखिका ने जीवन की कई गहनतम पहेलियों पर ऐसी फड़कती हुई शैली से प्रकाश डाला है कि पढ़नेवाले अवाक् रह जाते हैं। इसमें जीवन की महत्ता और पवित्रता के साथ साथ इस महान् तथ्य की भी अभिव्यक्ति की गयी है कि तिरस्कृत होकर भी मनुष्य अपनी नम्रता, सहनशीलता और परोपकार-वृत्ति से गहरी बुराइयों की जड़ खोद सकता है। वस्तुतः डाक्टर लेजरलाफ ने यह पुस्तक मनुष्य-मात्र के मनमें युद्ध के प्रति घृणा और जीवन के प्रति का भाव

भरने के उद्देश्य से रची थी। गत महासमर के भीषण हत्याकांड ने इनके हृदय पर जो गंभीर आघात पहुँचाया था, वही दो वर्ष बाद इस पुस्तक के रूप में इन्होंने अभिव्यक्त कर संसार के समक्ष रखा, ताकि प्रत्येक मनुष्य के दिल में यह बात गड़ जाय कि हिंसा से बढ़कर दूसरा कल्मष और अपराध पृथ्वी तल पर नहीं है।

आशा है, पाठक इस प्रकार के उत्तम उपन्यास को पढ़ने का कष्ट उठाने की कृपा करेंगे इसे अपनाकर हमको प्रोत्साहन देने की भी कृपा करेंगे, जिससे हम भविष्य में भी इसी प्रकार उत्तमोत्तम संसार प्रसिद्ध साहित्यिकों की पुस्तकों को अनुवाद कराकर प्रकाशित कर सकें।

—प्रकाशक

स्वीडन की पश्चिमी पहाड़ियों से घिरे हुए ओमन के टापू में कुछ वर्ष पहले एक व्यक्ति अपनी स्त्री के साथ रहा करता था। वे सूरत शक्ल में एक दूसरे से बिलकुल ही भिन्न थे, क्योंकि जहाँ पति एक भद्दा, बदसूरत और सुस्त व्यक्ति था, वहाँ पत्नी पचास की उम्र में भी बीस वर्ष की युवती-जैसी सुन्दर और सुकुमार थी। उनके नाम जोन और तालिया थे।

एक दिन रविवार की सुहावनी सन्ध्या के समय जोन अपनी पत्नी के साथ कुटिया के सामनेवाली चट्टान पर बैठा था। वह अपनी वाक्-चातुरी दिखलाने का बहुत ही शौकीन था और अपने ही शब्दों का आनन्द लूटने के अभिप्राय से अक्सर पत्नी के साथ गप्पें भी लगाया करता था। आज भी वह सायंकाल के समय पढ़े हुए किसी अखबार का समाचार सुना रहा था, किन्तु तालिया का

मन पति की बातों पर एकाग्र न था। वह मन ही-मन सोच रही थी—'इनका कैसा अजीब दिमाग है! अखबार की दो चार पंक्तियों से ही कितना रहस्य निचोड़ लेते हैं। किन्तु अफसोस है कि दूसरों के लिये सीर खपाने के बजाय हम लोगों के लिये अपनी प्रतिभा का कुछ भी उपयोग नहीं करते।'

कुटिया के सामने एक जीर्ण शीर्ण मकान था, जहाँ पहले कुछ मल्लाह और जहाजी बसे रहा करते थे। किन्तु वह रहने के योग्य न था। इसीलिए जोल उस कुटिया में रहता था। पहले रसोई। घर और भण्डार का काम देती थी। एकायक तालिया की दृष्टि उस मकान पर जा पड़ी और उसके मन में विचार उठ खड़ा हुआ—'यदि इन्हें भी अपने बाप दादों की तरह समुद्र से प्रेम होता, तो आज घर में कितने पैसे जमा हो जाते! किन्तु खेती की धुन के आगे कुछ सूझे तब न दिवाला निकल रहा है, फिर भी खेती के पीछे हाथ धोकर पड़े हैं।'

यद्यपि तालिया पति के समीप चुपचाप बैठी थी, उसका मस्तक चिड़िया के चञ्चल सिर की तरह इधर उधर घूम रहा था। वह टापू की चट्टानों के बीच जहाँ तहाँ उगे हुए आलू और गेहूँ के खेतों की ओर देख रही थी। मोमन का अधिकांश भाग पहाड़ी और ऊसर था। अतएव काली-काली चट्टानों के बीच हरे खेत द्वीपों जैसे सुन्दर प्रतीत हो रहे थे। यह सब जोल की ही कठोर मिहनत का फल था। मोमन की जमीन को उपजाऊ बनाने के लिये वह कई बार नावों पर लादकर खाद और मिट्टी लाया था। उसे उम्मीद थी कि किसी दिन उसकी मेहनत का पूरा पुरस्कार प्राप्त होगा। किन्तु तालिया उन बातों पर विश्वास न रखती थी। वह पति की खेती की ओर देखकर अक्सर यही सोचा करती थी—'इन ढेलों में पसीना बहाने से क्या लाभ? उत्तर की

बर्फीली हवा का एक झोंका ही इस हरियाली को मिट्टी में मिलाने के लिये काफी है। मैं तो हमेशा कहती हूँ कि खेती के झमेले में पड़ना भारी मूर्खता है। इससे तो बेहतर समुद्र का व्यवसाय ही है।'

आज भी जब उसकी दृष्टि मकान की ओट में झिलमिल झिलमिल करती हुई अनंत जलराशि पर पड़ी तो उसके दिल से एक ठण्डी निश्वास निकल पड़ी और मन में विचार उठ खड़ा हुआ—'ओह! समुद्री व्यवसाय कितना बढ़िया है! मजे से माल ढोना और भाड़ा कमाना। चाँदी ही झड़नी रहती है। पाँचों अंगुलियाँ घी में तर रहती हैं। अगर मैं पुरुष होती तो सबसे पहले समुद्र की ओर दौड़ पड़ती और भूलकर भी खेती का पचड़ा न उठाती। देखो न, हम बूढ़े हो रहे हैं। जब थककर लाचार हो जायगे तब क्या दुर्दशा होगी? लड़के तो इस जंजाल में फसेंगे ही नहीं। और उन बेचारों का इसमें दोष ही क्या ?'

'सुनती नहीं हो?—इसी समय उसके पति ने गौर के साथ देखते हुए कहा। उसने स्त्री के स्वगत विचार भाँप लिए। वह उत्तरी ध्रुव से लौटे हुए कुछ अंग्रेज यात्रियों का किस्सा सुना रहा था। यकायक सन्देह हुआ कि तालिया का ध्यान एकाग्र नहीं है। किन्तु उसे न तो आश्चर्य ही हुआ, और न क्रोध ही, क्योंकि यह पहला ही मौका न था, जब उसे तालिया से उसकी लापरवाही की शिकायत करनी पड़ी हो।

'वाह! कौन कहता है मैं नहीं सुन रही हूँ?' स्त्री ने हक्का बक्का होकर उत्तर दिया इसी पाया सोच रही थी, कि आप कितने अच्छे वक्ता हैं! क्या ही अच्छा होता, यदि पादरी का काम करते!!'

'खूब कहती हो!' जोज हँसता हुआ बोला, 'एक खाता तो सभलता नहीं, और पादरी बनाने चली हो!'

मन पति की बातों पर ध्यान न था। वह मन ही-मन सोच रही था—'इनका कैसा अजीब दिमाग है। अखबार की दो-चार पंक्तियों से ही कितना रहस्य निकाल लेते हैं। किन्तु अफसोस है कि दूसरों के लिये खीर खपाने के बजाय हम लोगों के लिये अपनी प्रतिभा का कुछ भी उपयोग नहीं करते।'

कुटिया के सामने एक जीर्ण शीर्ण मकान था, जहाँ पहले कुछ मल्लाह और अहाजी कप्तान रहा करते थे। किन्तु वह रहने के योग्य न था। इसीलिए जोज उस कुटिया में रहता था। पहले रसोई। घर और भण्डार का काम देती थी। यकायक ज्वालिया की दृष्टि उस मकान पर जा पड़ी और उसके मन में विचार उठ खड़ा हुआ—'यदि इन्हें भी अपने बाप दादों की तरह समुद्र से प्रेम होता, तो आज घर में कितने पैसे जमा हो जाते। किन्तु खेती का धुन के आगे कुछ सूझे तब न दिवाला निकल रहा है, फिर भी खेती के पीछे हाथ धोकर पड़े हैं।'

यद्यपि तालिया पति के समीप चुपचाप बैठी थी, उसका मस्तक चिड़िया के चञ्चल सिर की तरह इधर उधर घूम रहा था। वह टापू की चट्टानों के बीच जहाँ तहाँ उगे हुए आलू और गेहूँ के खेतों की ओर देख रही थी। ग्रोमन का अधिकांश भाग पहाड़ी और ऊसर था। अतएव काली-काली चट्टानों के बीच हरे खेत द्वीपों जैसे सुन्दर प्रतीत हो रहे थे। यह सब जोज की ही कठोर मिहनत का फल था। ग्रोमन की जमीन को उपजाऊ बनाने के लिये वह कई बार नावों पर लादकर खाद और मिट्टी लाया था। उसे उम्मीद थी कि किसी दिन उसकी मेहनत का पूरा पुरस्कार प्राप्त होगा। किन्तु तालिया उन बातों पर विश्वास न रखती थी। वह पति की खेती की ओर देखकर अक्सर यही सोचा करती थी—'इन देशों में पसीना बहाने से क्या लाभ? उत्तर की

बर्फीली हवा का एक झोंका ही इस हरियाली को मिट्टी में मिलाने के लिये काफी है। मैं तो हमेशा कहती हूँ कि खेती के झमेले में पड़ना भारी मूर्खता है। इससे तो बेहतर समुद्र का व्यवसाय ही है।'

आज भी जब उसकी दृष्टि मकान की ओट में झिलमिल झिल मिल करती हुई अनन्त जलराशि पर पड़ी तो उसके दिल से एक ठण्डी निःश्वास निकल पड़ी और मन में विचार उठ खड़ा हुआ—'ओह! समुद्री व्यवसाय कितना बढ़िया है! मजे से माल ढोना और भाड़ा कमाना। चांदी ही झड़ती रहती है। पाचों अंगुलियां घी में तर रहती हैं। अगर मैं पुरुष होती तो सबसे पहले समुद्र की ओर दौड़ पड़ती और भूलकर भी खेती का पचड़ा न उठाती। देखो न, हम बूढ़े हो रहे हैं। जब थककर लाचार हो जायगे तब क्या दुर्दशा होगी? लड़के तो इस जंजाल में फसेंगे ही नहीं। और उन बेचारों का इसमें दोष ही क्या ?'

'सुनती नहीं हो?—इसी समय उसके पति ने गौर के साथ देखते हुए कहा। उसने स्त्री के स्वगत विचार भाप लिए। वह उत्तरी ध्रुव से लौटे हुए कुछ अंग्रेज यात्रियों का किस्सा सुना रहा था। यकायक सन्देह हुआ कि तालिया का ध्यान एकाग्र नहीं है। किन्तु उसे न तो आश्चर्य ही हुआ, और न क्रोध ही, क्योंकि यह पहला ही मौका न था, जब उसे तालिया से उसकी लापरवाही की शिकायत करनी पड़ी हो।

'वाह! कौन कहता है मैं नहीं सुन रही हूँ?' स्त्री ने हक्का बक्का होकर उत्तर दिया इसी क्षण सोच रही थी, कि आप कितने अच्छे वक्ता हैं! क्या ही अच्छा होता, यदि पादरी का काम करते!!'

'खूब कहती हो!' जोन हंसता हुआ बोला, 'एक सभलता नहीं, और पादरी बनाने चली हो!'

'कैसे जानते हैं कि मैं नहीं सुन रही थी? रत्ती-रत्ती मुझे तो याद है—जिस तरह उनका जहाज डूबा, बर्फ में पूरा वर्ष कटा, सब सामान चुक गया और चमड़े के टुकड़े चबाने पड़े ...'—वह चिढ़कर कहने लगी। उसका मुंह इस तरह काँप रहा था, मानो दिल में उथलपुथल मच रही हो।

'जरा कल्पना करो, यदि उन लोगों के साथ कोई हमारा ही निकट-सम्बन्धी भूखों मरता होता!'—पति ने लापरवाह की तरह कहा।

स्त्री चौंक उठी और तीव्र दृष्टि से जोन की ओर ताकने लगी। समझ न सकी, उसके शब्दों का आशय क्या था। 'कुछ न कुछ अर्थ तो होगा ही।' उसने सोचा, किन्तु जोन की मिथ्यावादी आत्मा से उसका दिल भाँपना आसान न था।

'यों दूसरों के लिये ही मस्तिष्क और समय बर्बाद करते रहोगे तो जीवन में कुछ भी रस न बचेगा।' आखिरकार वह बात पलटने के लिये बोली—'जब वे लोग बच ही गये तो निरर्थक कल्पना करने से क्या लाभ?'

तालिया की दृष्टि में उस बात के लिये दिमाग खपाना मूर्खता थी, जिसका अन्त सुखप्रद हो। किन्तु जोन ने ये शब्द बेमतलब नहीं कहे थे। तालिया को लापरवाह देखकर उसने कहना शुरू किया—'कल रात को मैंने एक अजीब सपना देखा! ऐसा नजर आया मानो स्वेन सिरहाने खड़ा होकर किसी भारी अपराध के लिये मुझे कोस रहा है। खैर, सपनों में कुछ अर्थ होता है या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, किन्तु एक बात का आश्चर्य है। आज ही अखबार में भी उसका नाम देखा ...'

'अखबार में?' तालिया चौंककर चिल्ला उठी। उसकी लापरवाही न जाने कहाँ भाग खड़ी हुई। 'किस अखबार में?

किसका नाम ?' आदि पचीसों प्रश्नों की बौछार से जोन परेशान हो गया। असावधानी की शिकायत करने की अब आवश्यकता न रही। बात यह थी कि यदि और किसी के बारे में ऐसा कहा जाता तो वह कदापि इतनी अधीर न होती। किन्तु यह तो स्वेन का समाचार था। उसका—जो तालिया का सबसे लाड़ला बेटा था। जिसको नौ वर्ष की उम्र में ही एक अपरिचित सज्जन ले गये थे। जिसका सत्रह वर्ष से न कोई पत्र आया था, न समाचार और ही।

अचानक ही नाव की यात्रा करते करते एक अपरिचित दम्पति इस द्वीप पर आ पहुँचे थे। स्वेन उस समय केवल नौ साल का लड़का था। उनके पास अपार सम्पत्ति थी, किन्तु बाल बच्चा एक भी न था। स्वेन को देखकर वे मुग्ध हो गये और उसे गोद लेने के लिए तैयार हो गए। तालिया पहले तो अपने पुत्र को देने से हिचकिचायी, किन्तु भविष्य का विचार कर आखिरकार राजी हो गयी। लड़का होनहार और प्रतिभाशाली था—अवसर मिलने पर काफी नाम कमा सकता था। यही सोचकर माता-पिता ने उसे दूसरों के हाथ सौंप दिया। तब से सत्रह वर्ष बीत गए, स्वेन उन लोगों के लिए उतना ही अज्ञात था, जितना समुद्र के तले में पड़ा हुआ पानी।

'यह देखो, बचे हुए यात्रियों में उसका भी नाम सम्मिलित है।' जोन ने अखबार दिखाते हुए कहा।

झपटकर तालिया ने अखबार खींच लिया।

'पहले ही क्यों न कह दिया कि स्वेन भी यात्रा में शरीक था?' वह उलहने के स्वर में बोली—'अब दुबारा क्यों किस्सा दोहराना होगा। मैंने एक शब्द भी न सुना।'

जोन कुछ हतोत्साहित सा हो गया। वह स्वेन की चर्चा छेड़ने के पहले काफी भूमिका बाँध देना चाहता था। वैसे

से असम बात कहना आसान होता, किन्तु जब पत्नी की बेचैनी ने सारा मामला ही पलट दिया, तो लाचार होकर उसे फिर से सब बातें दोहरानी पड़ीं।

'ओह! अपने बच्चों को बाहरी लोगों के हाथ सौंपना बुरा है। तालिया किस्सा सुनती हुई कहने लगी उसने 'क्या-क्या मुसीबतें न उठायी होंगी? जब जहाज के साथ खाने का समान भी डूब गया होगा, तब बेचारों ने क्या खाया होगा?'

इसी समय जोस बत्तीस भर के यात्रियों की वापसी पर निकाले गये जलूस और स्वागत-समारोह का वर्णन करने लगा। 'लाखों की पुरुष बंदरगाह पर आये थे। जगह-जगह यात्रियों के स्वागत की धूम थी'

'आह! अगर हम भी सड़क के एक कोने में खड़े रहकर उनका स्वागत देख सकते!'—तालिया बीच में ही बोल उठी।

'सड़क पर क्यों' माता पिता और रिश्तेदारों के लिए तो खास जहाज तैयार खड़ा था।'

'आह! हमें उस जहाज पर कौन जाने देता?' स्त्री ने एक निश्वास खींचते हुए कहा, 'क्या 'वह' ऐसी बात सहन कर सकती थी?'

स्वेन को जिस माता ने गोद लिया था उस माता को तालिया 'वह' के नाम से पुकारा करती थी। बात यह थी कि जब से उस रमणी ने स्वेन का पत्र लिखने से मना कर दिया था, तब से तालिया उससे बहुत ज्यादा अप्रसन्न रहा करती और अपने मन में उसे राक्षसी की तरह निर्दय और डरावनी स्त्री समझने लगी थी। आज भी बातचीत के प्रवाह में वह महिला याद हो आई, जिससे तालिया का चेहरा उदास हो गया।

'देखने से तो मना न करती।' जोस ने कुछ साहस बटोर-

कर उत्तर दिया। वह स्त्री के समक्ष कोई महत्वपूर्ण समाचार प्रकट करना चाहता था, किन्तु ऐसा विदित होता था मानो एक दम कह देने के पहले कुछ समय की आवश्यकता है। इसलिए वह बार-बार अपने मन में कह रहा था—'आह! उसी एक बात पर तो हमारा भाग्य तुला हुआ है।'

'अजी, अभी तुम क्या जानते हो।' तालिया रोष भरे स्वर में चिल्ला उठी, 'सत्रह बरस में एक पत्र भी तो उस दुष्ट ने लिखने न दिया! स्वेन कोई बच्चा तो था नहीं, चाहता तो खानगी तौर पर ही एकाध पत्र लिख ही सकता था, किन्तु लिख कैसे? बात तो साफ झलक रही है कि उस हरामजादी ने भोले लड़के के कान खूब भर होंगे। जरूर स्वेन के मस्तिष्क में यह बात ठूसी गई होगी कि हम लोग बड़ों की सङ्गति के बिलकुल अयोग्य हैं।'

कहते-कहते उसका गला रुध गया। आवाज भर्राने लगी और आँखों में आँसू छलक आये। चेहरे से प्रसन्नता का भाव विलुप्त हो गया और मन में कई पुराने रसीले विचार उठने लगे।

'सच कहती हो, आश्चर्य की बात है कि स्वेन को एक अक्षर भी लिखने की फुर्सत न मिली, जरूर उन लोगों ने भड़काया होगा।' जोल हाँ में हाँ मिलाता हुआ बोला।

किन्तु तालिया ने कुछ भी उत्तर न दिया। दिल की व्यथा के आगे बोलना उसके लिए असम्भव हो रहा था।

'मामला बिगड़ रहा है!' जोल ने अपने मन में कहा, 'अगर यही दशा रही तो कुछ भी उम्मीद न रहेगी।'

वह अपनी पत्नी से एक जरूरी समाचार कहने के लिए उत्सुक हो रहा था, किन्तु तालिया की उदासीनता देखकर, उस समाचार कहने से वह डर रहा था। यही कारण था कि वह इस बात को कहने के लिए उपयुक्त अवसर की खोज में था। पर जब स्त्री का

से असल बात कहना आसान होता, किन्तु जब पत्नी की बेचैनी ने सारा मामला ही पलट दिया, तो लाचार होकर उसे फिर से सब बातें दोहरानी पड़ीं।

'ओह! अपने बच्चों को बाहरी लोगों के हाथ सौंपना बुरा है।' तालिया किस्सा सुनती हुई कहने लगी उसने 'क्या-क्या मुसीबतें न उठायी होंगी? जब जहाज के साथ खाने का समान भी डूब गया होगा, तब बेचारों न क्या खाया होगा?'

इसी समय जोम उसी भ्रम के यात्रियों की वापसी पर निकाले गये जलूस और स्वागत समारोह का वर्णन करने लगा। 'लाखों स्त्री-पुरुष बंदरगाह पर आये थे। जगह-जगह यात्रियों के स्वागत की धूम थी'

'आह! अगर हम भी सड़क के एक कोने में खड़े रहकर उसका स्वागत दख सकते!'—तालिया बीच में ही बोल उठी।

'सड़क पर क्यों! माता पिता और रिश्तेदारों के लिए तो खास जहाज तैयार खड़ा था।'

'आह! हमें उस जहाज पर कौन जाने देता?' स्त्री ने एक निःश्वास खींचते हुए कहा, 'क्या 'वह' ऐसी बात सहन कर सकती थी?'

स्वेन की जिस माता ने गोद लिया था उस माता को तालिया 'वह' के नाम से पुकारा करती थी। बात यह थी कि जब से उस रमणी न स्वेन को पत्र लिखने स मना कर दिया था, तब से तालिया उससे बहुत ज्यादा अप्रसन्न रहा करती और अपने मन में उसे राक्षसी की तरह निर्दय और डरावनी सी समझने लगी थी। आज भी बातचीत क प्रवाह में वह महिला याद हो आई, जिससे तालिया का चेहरा उदास हो गया।

'दखन से तो मना न करती।' जोम ने कुछ साहस बटोर-

कर उत्तर दिया। वह स्त्री के समक्ष कोई महत्वपूर्ण समाचार प्रकट करना चाहता था, किन्तु ऐसा विदित होता था मानो एक दम कह देने के पहले उसे कुछ समय की आवश्यकता है। इसलिए वह बार-बार अपने मन में कह रहा था—'आह! उसी एक बात पर तो हमारा भाग्य तुला हुआ है।'

'अजी, अभी तुम क्या जानते हो।' तालिया रोष भरे स्वर में चिल्ला उठी, 'सत्रह बरस में एक पत्र भी तो उस दुष्ट ने लिखने न दिया! स्वेन कोई बच्चा तो था नहीं, चाहता तो खानगी तौर पर ही एकाध पत्र लिख ही सकता था, किन्तु लिखे कैसे? बात तो साफ झलक रही है कि उस हरामजादी ने भोले लड़के के कान खूब भर होंगे। जरूर स्वेन के मस्तिष्क में यह बात ठूंसी गई होगी कि हम लोग वहाँ की सङ्गति के बिलकुल अयोग्य हैं।'

कहते-कहते उसका गला रुँध गया। आवाज भर्राने लगी और आँखों में आँसू छलक आये। चेहरे से प्रसन्नता का भाव विलुप्त हो गया और मन में कई पुराने रंजीदा विचार उठने लगे।

'सच कहती हो, आश्चर्य की बात है कि स्वेन को एक अक्षर भी लिखने की फुर्सत न मिली, जरूर उन लोगों ने भड़काया होगा।' जोल हाँ में हाँ मिलाता हुआ बोला।

किन्तु तालिया ने कुछ भी उत्तर न दिया। दिल की व्यथा के आगे बोलना उसके लिए असम्भव हो रहा था।

'मामला बिगड़ रहा है!' जोल ने अपने मन में कहा, 'अगर यही दशा रही तो कुछ भी उम्मीद न रहेगी।'

वह अपनी पत्नी से एक जरूरी समाचार कहने के लिए उत्सुक हो रहा था), किन्तु तालिया की उदासीनता देखकर, उस समाचार कहने से सकुचा रहा था। यही कारण था कि वह इस बात को कहने के लिए उपयुक्त अवसर की खोज में था। पर जब स्त्री का

बिगड़ते देखा तो बात छिपाने का साहस न रहा। दबी ज़बान से उसने कहना शुरू किया—'आज गिर्जाघर में एक नई खबर सुनी है तालिया! शाम को पादरी मुझे घर लिवा ले गये थे। उनके पास इंग्लैंड से कुछ समाचार आया है। वहीं तो मुझे अखबार भी मिला '

'पादरी ?' तालिया हड़बड़ाकर पूछने लगी।

'हाँ, स्पेन के बारे में कुछ कहना चाहते थे '

'उह! हमें स्पेन से क्या मतलब। वह चाहे जो हो गया हो, हमारे लिए एक सा है।' वह चुप हो गई और मुँह मोड़कर बैठ गयी।

जान ने भी कुछ उत्तर न दिया। बहुत देर तक दोनों चुप्पी साधे बैठे रहे।

आखिरकार तालिया ने ही मौन भंग किया।

'कैसे निष्ठुर आदमी हो।' वह उत्तेजित होकर बोल उठी, 'किसी दुखिया को उत्सुक बनाकर तड़पाने में ही तुम्हें मज़ा आता है। पादरी वाला समाचार क्यों नहीं कहते ?'

'पादरी स्वयं कह देंगे अभी अभी आनेवाले हैं।'

'पादरी ?', तालिया उछलकर चिल्ला उठी, 'कैसे अजीब आदमी हो। पादरी आनेवाले हैं और तुम ध्यान लगाये बैठे हो। मुझसे कहना तो चाहिये था ?'

वह मकान की ओर बढ़ी। देखना चाहती थी, कि घर की सजावट ता दुरुस्त है, किन्तु यकायक चलते चलते रुक गयी। 'पादरी क्यों आ रहे हैं ?' पति की ओर देखकर वह बोली, 'होगा कुछ दाल में काला। अन्यथा पादरी का क्या काम ?'

वह जान के विचार भाँपने का प्रयत्न करने लगी। 'संभव है मुत की बुखारी हवा खाने और चमड़े के टुकड़े चबाने से

स्वेन का दिमाग ठिकाने आ गया हो और वह हमसे मिलने का इरादा कर रहा हो, किन्तु याद रखो, इस बार उसे घर में पैर भी न रखने दूँगी। वह हम लोगों को क्या समझता है? अगर हम उसके कुछ भी नहीं हैं, जैसा कि वह समझ रहा है, तो हमें उस छोकर से कुछ सरोकार नहीं।'

'ज़बान सम्भाल कर बोलो तालिया!' पति ने डाँटकर कहा, 'जब असली बात जानोगी तो इन शब्दों के लिए पछताओगी।'

वह स्त्री के उत्तेजित शब्द सुनकर तमतमा उठा। 'मैं कुछ कहता हूँ और वह उल्टा ही अर्थ लगा लेती है।' उसने मन-ही मन में कहा, 'ओह! इसकी खोपड़ी कब सुधरेगी। बात का न मतलब समझती है, न अक्ल से ही जवाब देती है।

'आखिर कहो तो, पादरी क्या समाचार सुनानेवाले हैं?' तालिया पति की धमकी से डरकर बोली। उसे तरह तरह की आशंकाएँ सताने लगीं। 'इसका तो यही अर्थ होता है कि स्वेन सकुशल नहीं है।'

'ऐसा नहीं है।'

'ऐसा मालूम पड़ता है कि लड़का किसी आफत में फँस गया है!' पति ने गम्भीर मुख मुद्रा बनाकर कहना शुरू किया—'पहले तो उनके स्वागत के उपलक्ष्य में खूब जलूस निकले, दावतें हुई और तरह तरह की खुशियाँ मनाई गईं। किन्तु दस दो दिन भी न बीत पाये होंगे कि लोग उसकी भुज के यात्रियों के सम्बन्ध में तरह तरह की भद्दी अफवाहें सुनाने लगे

'अफवाहें!' स्त्री ने दाँतों तले उँगली दबाकर कहा—'तब तो कुछ गड़बड़ हुई है।'

'यहाँ तक कि लोग उनका खुलेआम तिरस्कार और बीच बाजार में उनके कपड़े भी छीन लिये।

लोग उनका दर्शन करने के लिये टूटे पड़ते थे और सड़क पर तिल धरने की भी जगह न थी। पर अब दर्शनाभिलाषा उनके मुंह पर थूकने को तैयार खड़े थे

'ओफ! ऐसी बात तो आज तक भी सुनने में न आयी थी।' तानिया आश्चर्य के साथ बोली, 'अच्छा होता, अगर स्वेन घर पर ही हम लोगों के साथ रहता ''

'और यह कोई अचम्भे की बात नहीं है' जोल अब जोश में आकर कहने लगा 'असाधारण कामों में ऐसी अनहोनी वारदातें अक्सर हो ही जाती हैं। वेचार भूखों मर रहे थे। भले बुरे का न ज्ञान थो, न पाप पुण्य का ही भान! तब सहसा पेट की आग से पागल होकर एक यात्री ने आत्मघात कर लिया। बस, फिर क्या था! सब लोग गिद्ध की तरह उस पर टूट पड़े और सिर काट कर ' ''

'वें? उसको खा गये?' तानिया चीख सी उठी।

'उन्हें सुध-बुध तो थी नहीं! पागलों की तरह बेभान हो गये थे!'

'और स्वन भी उन लोगों में शरीक था? स्वन भी?'

'न रहा होगा तो अवश्य शामिल कर लिया गया होगा। ऐसे मौकों पर लोग खूब सावधानी रखते हैं। '

'आह! अब समझी कि पादरी महाशय क्यों तशरीफ ला रहे हैं। दूसरी जगह तो उसके लिये ठिकाना रहा ही नहीं, तब हजरत हमारे पास आ रहे हैं। और शिफारिश करने के लिये पादरी को है ढूढ़ा।'

हर्ज क्या है?' सो उसी स्वर में चिल्ला उठी—'अब गुल छर्रे उड़ाता रहा, तब चिट्ठी लिखने का [illegible] मिला और अब ठिकाना न रहा तो हम [illegible] आ [illegible]
मैं उसे दरवाजे पर पैर भी न [illegible]

। क्या हुआ ? ऐसे लड़के को किसी हालत में घर में स्थान न
। उसने वह काम किया है, जिससे सभी लोग नफरत करते हैं।
जोल पत्नी की उत्तेजना देखकर अधीर होने लगा। वह मन-
। मन बोला—'यह औरत कितनी बेवकूफ है। कैसी जिद्दी और
...। कितनी बढ़िया बात होगी यदि एक जवान लड़का
बुढ़ापे में सहायता देने आ पहुँचे ! पर तालिया अपनी हठ
आगे कुछ सोचती ही नहीं ! खैर, अभी उसका दिमाग ठिकाने
। देता हूँ।'

'ठीक है, जो मैंने सोचा था वह गलत नहीं है।' वह स्त्री की
देखकर बोला—'अब पत्र की खबर सुनाने पादरी को
तरह की कठिनाई न होगी।'

स्त्री का माथा ठनका जोल की धमकी काम कर गई। अब
वह और भी कड़ी निगाह से देखता हुआ बोला—'कहो, पादरी
के आने तक ठहरोगी या मैं ही कह दूँ ?'—और बड़बड़ाता पा
दण्ड देने के इरादे से कहना शुरू किया—'यह तो तुम्हें मालूम ही
है कि उसके धर्म के माँ बाप लण्डन में रहते हैं, यात्रा के बाद वह
वहीं लौटा भी। किन्तु जब उसके सम्बन्ध में बड़ी भद्दी अफवाहें उड़ने
लगीं, तो एक दिन पिता ने उसके पास वह अखबार भेजा, जिसमें
उसी तरह की एक बेहूदी खबर छपी थी। पर सिर्फ अखबार
ही नहीं, साथ ही एक भरी हुई पिस्तौल भी ,
दूँ ?' तालिया चीख उठी 'और उस स्त्री ने चूँ तक भी न
किया ?'

'वह भी पति से सहमत थी ,

'तब ?'

'तब वही हुआ जो वे लोग चाहते थे।

'और वह दामिन दुखती हो रही क्या ? वही, जो उसकी माँ

बैठी थी, तालिया तमतमा कर बोली, 'नहीं नहीं, यह असंभव है। तुम झूठे हो।'

'मैं भी एक घण्टे पहले शायद ऐसा ही कहता।' पति ने शांति के साथ कहा, मैं भी पहले यही सोचा करता था कि स्त्री का हृदय इतना कठोर नहीं हो सकता किन्तु अब मुझे सन्देह नहीं है, क्योंकि तुम्हारी बातें इसकी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि संसार में हृदय हीन स्त्री असंभव नहीं है।'

तालिया के गालों पर आँसू की धारा बह चली है। वह मुँह मोड़कर सिसकने लगी, 'स्वेन, तू न रहा, अरे! वह तेरी माँ थी? वह पापाण हृदया, जिसने तुझे मरते देखते हुए एक आंसू भी न बहाया।'

वह विलाप करने लगी, 'हे भगवन्! हमने उसे जाने ही क्यों दिया? और उने मारा डालने का, औरत उस को क्या अधिकार था जिसको पैदा करनेवाले दूसर ही लोग थे।'

'चुप रहो तालिया! इसी समय पति ने कहा, 'देखो पादरी आ गये हैं।'

'कह दो, वापिस लौट जायँ। मुझे अब सुनने की आवश्यकता नहीं है।'

'नहीं! नहीं! जब उन्होंने आने का कष्ट उठाया है, तो ऐसा कहना उचित नहीं'—कह कर जोल नाव के सामने गया और कुछ ही मिनट बाद पादरी को लेकर वापस लौट आया। साथ में एक दुबला पतला नौजवान भी था।

'जोल कहते हैं कि आप समाचार सुन चुकी हैं', रोती हुई स्त्री के समीप आकर पादरी ने कहा, 'दुर्भाग्य से स्वेन एक बेहूदे झगड़े में फँस गया था, जिसके फल स्वरूप धर्म के माता-पि.. ने उसे घर से निकाल दिया है।'

तालिया, जो अञ्चल से मुँह ढाँपे अब भी सिसक रही थी, म्मान प्रदर्शित करने के लिये उठ खड़ी हुई, किन्तु ज्यों ही उसकी ष्टि पादरी के साथ वाले नवयुवक पर पड़ी, वह चौंक उठी। हैं! यह तो स्वेन है!'—उसके अन्तःकरण से एक आवाज़ आई और क्षणभर बाद ही अनेक विचार बवण्डर की तरह उठ कर उसके मस्तिष्क में चक्कर लगाने लगे। 'तब क्या जोल ने जो समाचार कहा था वह झूठा था?' वह मन ही मन पूछने लगी और इस समझते देर लगी कि क्यों उसका पति स्वेन की खबर सुनाते समय झूठ बोला था। 'आह, जोल के ढंग निराले हैं! कितनी अजीब रीति से मुझे अपनी निर्ममता का दण्ड दिया। किन्तु अब स्वेन का क्या अपने साथ ही रखना पड़ेगा?' पुत्र के कलंक की याद आते ही उसके दिल में खलबली सी मच गयी। ऐसा प्रतीत हुआ, मानों पुत्र के कुकर्म से उसके दिल में जो रंज पैदा हुआ था, वह लाख प्रयत्न करने पर भी न मिट सकेगा। 'ओफ! कितना बेहूदा काम कर लिया। मनुष्य का माँस! ...'—वह सोचने लगा और उसके मन में विचारों का एक तुमुल संग्राम मच गया। किन्तु इसी समय उसकी दृष्टि पुत्र के दुर्बल चेहरे पर जा पड़ी। उसकी आँखों में कितनी वेदना अन्तर्हित थी। ऐसा लगता था मानो मन्द मन्द मुस्कुराता हुआ वह सहानुभूति और दया की भिक्षा माँग रहा हो। पुत्र के उस कारुणिक स्वरूप को देखकर तालिया के ठण्डे विचार न जाने कहाँ भाग गए और उसके हृदय में यकायक प्रेम का एक ज्वार उमड़ आया। 'आह, जोल! आज तुमने मेरी आँखें खोल दी हैं।' वह मन ही मन कहने लगी, 'तुमने बता दिया है, मैं क्या हूँ। मेरी भावनायें क्या हैं। क्योंकि आज मैं अच्छी तरह अनुभव कर रही हूँ कि वर्षों से बिछुड़े हुए पुत्र को मैं प्यार किये बिना

पर ही आ अटकी, जो असंख्य पापियों से भरी हुई एक कड़ाही के नीचे धधकती भट्ठी में ईंधन झोंक रहा था। उसकी दुम रस्सी की तरह तीन भागों में गुथी हुई बहुत अनोखी थी, जिसके सिरे से वह कड़ाही का उबलता हुआ शोरवा हिला रहा था।

बचपन में उस तस्वीर को देखकर स्वेन तरह-तरह की कल्पना दौड़ाया करता। कड़ाही और भट्ठी को एक साथ सँभालने वाले उस अद्भुत रसोइए को देखकर उसे आश्चर्य और कौतूहल होने लगता था। किन्तु शैशव की वह मधुर कल्पना, आज के उसके विचारों से कितनी विभिन्न थी! 'यदि गिर्जे में बैठे हुए स्त्री पुरुष—जो रविवार को कयामत की उस डरावनी कड़ाही और डरावने शैतान को देखते हैं—यकायक जान लें कि उपासना-मन्दिर में एक ऐसा व्यक्ति उनके साथ बैठा है, जो मनुष्य का मांस भक्षण कर चुका है, तो क्या क्षण भर के लिए भी वे मुझे इस स्थान पर खड़ा रहने देंगे? ओह! यों तो रोज ही नये नये पाप होते हैं, भारी-से भारी अनाचार होता है। चोरी, धोखेबाजी, शराबखोरी, खून, अत्याचार और व्यभिचार सभी बातें इस दुनिया के लिए सामान्य हो गई हैं। होंगे कुछ लोग जो उनका नाम सुनकर नाक भौंह सिकोड़ें। पर अधिकांश लोगों के लिए तो इनमें न कुछ असाधारणता है, न कोई गम्भीर महत्व ही है। नित्य ही ये बातें दिन-दहाड़े होती हैं और कोई कान भी नहीं फड़फड़ाता। फिर भी एक महापाप ऐसा है, जिसकी कल्पना मात्र से लोग थर्रा उठते हैं; जिसकी तुलना में चोरी से लेकर खून तक सभी अपराध नहीं के बराबर हैं, और मैं वही दुष्कृति बिना हिचकिचाहट के कर चुका हूँ! तब मुझसे अधिक घृणित व्यक्ति कौन होगा? कौन होगा मुझ जैसा शैतान?'

स्वेन इसी तरह के विचारों में तल्लीन हो रहा था कि पादरी

ने गिर्जे में प्रवेश किया। चर्च में बैठे हुए लोगों में जोन और वासिया को छोड़कर, स्वेन के वापस आने का असली कारण यदि कोई जानता था तो वह एन्जम का पादरी था। उसकी सहायता और सहानुभूति से ही स्वेन ग्रीमन में रहने का स्थान पा सका था। उसने ही गत रविवार को माता पिता से लड़के को अपनाने का जोरदार अनुरोध भी किया था। उसने ही स्वेन को अपनी शक्ति भर सहायता भी दी थी। यह सोचकर कि जो कुछ कुकर्म उसने किया था, वह अपनी स्वतन्त्र इच्छा से नहीं, वरन् दूसर लोगों द्वारा बलात् लाचार बनाया जाकर किया था। प्रत्येक बातमें पादरी ने उसके प्रति दया और उदारता ही प्रदर्शित की थी। वह जानता था कि स्वेन उस बेहूद शिकंजे में फँस गया था कि जिससे मुक्ति न होने पर सम्भव था कि वह आत्मघात भी कर लेता। यही सोचकर पादरी ने उसे भरसक सहायता भी दी थी, हार्दिक सहानुभूति भी दिखाई थी। और स्वयं ग्रीमन जाकर उसके माता-पिता से शरण देने की सिफारिश भी की थी। यह सब तो ठीक था। किंतु स्वेन को आज चर्च में उपस्थित देखने की उसे जरा भी आशा न थी। अतएव ज्योंही गिर्जे की दालान में क़दम रखा और उसकी दृष्टि उत्तरी ध्रुव की यात्रा से लौटे हुए उस नर मांस भक्षी मनुष्य पर पड़ी, उसके शरीर में एक ऐसी सनसनी फैल गई, मानो नफ़रत के मारे उसका गला घुटा जा रहा हो।

'यदि घर आता तो किसी हालत में भी मुझे नागवार न होता!' पादरी अपने मन में कहने लगा—'बल्कि वहाँ तो उसका स्वागत भी करते मुझे हिचकिचाहट न होती, किंतु यहाँ? यहाँ आने के पूर्व क्या उसे मालूम न था कि वह ऐसा घृणित कृत्य कर चुका है, जो सर्वथा कुत्सित, घृणित और अपवित्र है। नर मांस भक्षण क्या यह मामूली बात है? तब उसने इस

पर दूसर ही दिन उसे अपनी बेवकूफी मालूम पड़ी। 'ओफ़! मैंने कैसी मूर्खता कर डाली।' वह अपने आपको कोसने लगा— 'कैसा लड़कपन? कितनी जल्दबाजी!! जंगली आदमी की तरह निरी प्रेरणा के वशीभूत होकर मैंने कितना अनुचित कार्य कर डाला? पर अब क्या हो सकता है। अब तो मामला जितना सुधारा जाय उतना ही बिगड़ने लगगा। बेहतर है कि किसी उचित अवसर की प्रतीक्षा की जाय।'

और तब आश्चर्य से आँखें फाड़कर उसने अपने मन मे कहा- 'ओफ। इस घृणा की भावना मे कितनी जबरदस्त शक्ति है कि मुझ-जैसे व्यक्ति को भी उसने चुटकी मे पराजित कर दिया। और वह भी उस समय जब उपासनालय जैसे पवित्र स्थान में एक धर्मोपदेशक और आध्यात्मिक पथ प्रदर्शक की हैसियत से मैं प्रार्थना के लिये आए हुए नर-नारियों को आदेश द रहा था।

ज्योंही प्रार्थना समाप्त हुई और पादरी मञ्च से उतरा, मौन से आए हुए वे तीनों प्राणी भी उठे और नीचा सिर किए हुए गिरजे से बाहर निकले। किन्तु बाहर आते ही उनके पैर न जाने क्यों रुक गए। हक्क-बक्क होकर वे चारों ओर देखने लगे।

गिर्जाघर के आस-पास एक खुला हुआ समतल मैदान था। देश के उस पहाड़ी प्रान्त में यह एक अनहोनी बात थी। लम्बा चौड़ा तो न था, फिर भी था बहुत गुञ्जाइशदार। यद्यपि एक सिरे से दूसरे सिरे की चीजें स्पष्ट दिखलाई पड़ती थीं, तथापि उस मैदान में गिर्जाघर और दस बीस झोपड़ियों व खेतों के उपयुक्त पर्याप्त स्थान था। चारो ओर भूरी पहाड़ियों की एक लम्बी दीवार थी, जो इतनी ऊँची तो न थी कि उत्तर की बर्फीली हवा को रोक सके, पर उस पार की सभी वस्तुओं से इस छोटे से गाँव को छिपा रखने के लिये पर्याप्त थी। सारा मैदान कृषि के उपयुक्त छोटे-छोटे

खेतों में विभाजित था, जो नाप-तौल में एक दूसरे के समान थे। और ऐसे ही किसानों के कुछ नीले-पीले मकानात भी थे, जिनमें न बड़ी-बड़ी आलीशान इमारतें नजर आती थीं, जो दूसरे मकानात को दबा दें, न अत्यंत टूटी झोपड़ियाँ ही। सब समान और एक-से थे। न ऊँच नीच का भाव था, न छोटे-बड़े का ही भेद।

यही हाल वहाँ की हरियाली का भी था। न उसे खूब हरा भरा स्थान ही कह सकते थे, क्योंकि पहाड़ियों, मैदानों और सड़कों पर वृक्षों का अभाव था और न बिलकुल ऊसर ही उसे कह सकते थे क्योंकि खेतों में गेहूँ और मटर का एक समुद्र सा लहराता था।

इसी विचित्र मैदान के बीचोबीच वह गिर्जाघर था, जहा से श्रीमन के वे तीनों प्राणी इस तरह नीचा सिर किए हुए निकले थे मानों धक्के देकर वे निकाल दिए गए हों।

गिर्जाघर की पुरानी ढंग की इमारत इतनी भद्दी तो न थी कि बिलकुल ही बदसूरत वह कही जा सके, क्योंकि उसकी छत प एक मीनार थी, जिसको देखकर हृदय ईश्वराभिमुख होने लगत था। किंतु उसे अधिक सुन्दर भी नहीं कह सकते थे, क्योंकि उसका नीचे वाला हिस्सा इतना धुँधला और झुका हुआ था कि देखकर मन में एक उदासीनता ही छाने लगती थी।

ज्योंही वे तीनों चर्च के बाहर निकले, उनकी दृष्टि गिर्जे हाते में इधर-उधर घूमती हुई एक चितकबरी बिल्ली पर जा पड़ी वह कोई बदसूरत जानवर तो न थी, क्योंकि उसके बाल ... जैसे नरम थे और चाल भी अत्यंत मंद और मधुर थी। फिर ज्यों ज्यों उसकी ओर देखने लगे, उसकी नरम चमड़ी के विभिन्न अंगों के हिलने डुलने में एक ऐसा भाव नजर आने जिसमें धूर्तता और शैतानी छिपी हुई थी। सिर्फ

थी। तालिया अब बार-बार उस गाँव की सफर करने और स्त्रियों से बातें करते समय स्वेन को निर्दोष साबित करने काफी प्रयत्न भी करने लगी। वह स्वेन की प्रशंसा के पुल बाँध देती और उसके सरल निष्कपट स्वभाव का खाका भी खींच देती, किन्तु कुछ दिनों के बाद ही उसे अपना प्रयत्न निष्फल प्रतीत होने लगा। स्त्रियाँ कुछ बुरा-भला तो न कहतीं, किन्तु तरह तरह के बहाने बनाकर स्वेन से संबंध रखनेवाली बातें अनसुनी कर देती थीं।

'ओह ! ये स्त्रियाँ इस नश्वर पृथ्वी के उपयुक्त नहीं, प्रत्युत देवलोक में रहने योग्य हैं।' तालिया वहाँ से वापस लौटते समय ग्लानियुक्त व्यंग के साथ कहती—'धार्मिकता और सचाई से ये इतनी लबालब भरी हैं कि इनके दिल में अब दया की एक भी बूँद समाने का स्थान तक नहीं बच पाया है।'

उधर यही हाल जोल का भी था। जब कभी कोई व्यक्ति उसके पास आता, वह कहता—'भाई ! मैं तो इतना थक गया हूँ कि कुछ भी काम नहीं कर सकता। चाहता हूँ कि शीघ्र ही स्वेन मेरे कंधों का भार उठा ले ......'

किन्तु लोग इस बात पर कान भी न देते। किसान या ढीमर, जो कोई भी आते, स्वेन की बात छिड़ जाने पर वैसे ही बहरे बन जाते जैसे नेपफोर्ड की 'कट्टर धार्मिक' स्त्रियाँ तालिया की बात सुनकर बन जाया करती थीं।

एक दिन क्रिसमस की शाम को माता, पिता और पुत्र कुटिया में बैठे भविष्य के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहे थे। उसी समय स्वेन—जो आज हमेशा से भी ज्यादा प्रसन्न मालूम हो रहा था, बोल उठा—'अम्मा, यह झोपड़ा तो बहुत सकड़ा है। अगर इसे छोड़ कर बड़े मकान में रहने लगें, तुम्हारी क्या राय है

ते क्या हो ? उसमें न छत है न फर्श ही ।' तालिया न होकर बोली ।

ीक है' लड़के ने कहा—'पर अभी इतना युग तो नहीं या कि काबिल मरम्मत भी न हो । मैंने उसकी दीवारें देखी की मजबूत हैं । कमरे भी खूब लम्बे-चौड़े हैं और प्रकाश भी है । और सबसे बढ़िया बात तो यह है कि उसका रुख समुद्र ोर है । शर्म की बात होगी, अगर हमारे रहते बूढे मकानों का मिट्टी में मिल जाय ।'

ड़के की बात माता-पिता के गले उतर गई । वे मकान ाने को राजी भी हो गए । पर अब सवाल पैसे का उठा ।

न ने इसका भी एक सीधा नुस्खा पेश किया । बोला— पास कुछ रुपया जमा है । सौतेले माँ बाप का नहीं, वरन् की गाढ़ी कमाई का है । ध्रुव यात्रा के लिये एक हज़ार मिले थे । उससे आप '

'उससे !' जोल एकायक चिल्ला उठा—'कदापि नहीं । मकान वाने के लिये इन्कार नहीं है, पर उस पैसे से कदापि नहीं ।' रुपये का नाम सुनते ही उसे ऐसा प्रतीत हुआ, मानों ध प्रदर्शित करने के लिये वहां के पुराने निवासी पथ में रहे हैं ।

माता और पुत्र भौचक्के होकर जोल का मुंह ताकने लगे । क्षया भर बाद ही वे उसके दिल का भाव भांप गए । अतएव शब्द भी न कहकर चुप्पी साधे बैठे रहे ।

'ओह ! कितने भोले-भाले, पाक-दिल आदमी वे कप्तान ' जोल उन प्राचीन निवासियों की याद करने लगा—'उन्हें न दस-संगत की चाह थी, न बोलचाल की ही परवा । व समुद्र पर ना महाकर दो रोटी कमा लेते थे और उसी से सन्तुष्ट होकर

बचे बचाए होश भी उड़ गए। दो मिनट बाद का नजारा उसकी आखों के पर्दे पर नाचने लगा। 'वे खिलाने के लिये जबर्दस्ती करेंगे और मैं इन्कार करूंगा। क्या ऐसा घृणित कर्म स्वप्न में भी कर सकता हूँ। नहीं! नहीं!! संसार की काई भी शक्ति मुझे ऐसे बीभत्स कार्य के लिये बलात् बाध्य नहीं कर सकती। तब एक साथ ही लात-घूमों की बौछार के साथ वे मुझपर टूट पड़ेंगे और सम्भव है, प्राण लेकर ही पिंड छोड़ें ...' ज्यों-ज्यों वह सोचने लगा, उनका साहस भी टूटता गया।

किन्तु अभी हाथा पाई शुरू होने में कुछ देर थी। जिसको प्रात काल क समय वह मरा हुआ साँप मिला था, उस शख्स ने अब जेब में हाथ डालकर उस चिकनी लोथ को बाहर खींचना आरम्भ किया। जब पूरा साँप निकल आया, तो उसे इधर-उधर झुलाता हुआ तालिया की आखों के समीप ले गया और शरारत भरी मजाक करता हुआ बोला—'कहो, है न स्वेन के लिये बढ़िया पकवान?'

'अरे! तुम अपने को इन्सान समझते हो?' स्त्री क्रोध से लाल होकर बोल उठी—'तुम किस गुमान में हो? क्या मैं इतनी मूर्ख हूँ कि तुम-जैसे गुण्डों के साथ, स्वेन को जो तुम सब लोगों से हजार गुना ज्यादा कीमती है, भेज दूँगी?'

गुण्डे जोर से खिलखिलाकर हस पड़े।

'तालिया! डरो मत' वही शख्स पुन बोला, 'उसे ज्यादा दूर न जाना होगा। सिर्फ किनारे तक चलने की तो बात ही है। वहीं हम लोग आग सुलगाकर उसके लिये मनमाना पकवान पका देंगे।'

माता ने अपने पुत्र की ओर मुड़कर एक निगाह डाली। देखा वह कितनी उदासीन मुसकान मुस्कराता हुआ बैठा है। चेहरे

पर न तो शोप के ही चिन्ह हैं, और न विरोध प्रदर्शित करने की उत्तेजना ही। मानो चला करता हुआ वह सब कुछ सहन करने के लिये तैयार है।

'स्वेन !' माँ ने चिल्ला कर कहा—यों चुप-चाप बैठकर क्या सोच रहे हो ? इनके साथ जाने का तो तुम्हारा विचार नहीं है न ? जानते हो ये लोग कौन हैं ? यह देखो—जो सबसे आगे खड़ा है—उसका नाम ओलास है। यह वही आदमी है जिसने पैदा होते अपने बच्चे को मार डाला और जच्चा की उस समय भी हिफाजत न की, जब वह लाचार और लगभग बेहोश थी।'

गुराई पुल' खिलखिलाकर हँस दिए।

'चिन्ता न करो !' ओलास बोला, 'स्वेन की हिफाजत में हम कुछ भी कसर न रखेंगे। नमक-मिर्च डालकर उसकी चीज काफी स्वादिष्ट बना देंगे। और फिर जो-कुछ वह खा चुका है, उसकी तुलना में साँप है ही किस गिनती में ?'

'वह देखो' तालिया एक सबसे ऊँचे और खूंख्वार व्यक्ति की ओर इशारा करती हुई बोली, 'वही कोरफोजोन है, जिसने पाप के सिवा जिन्दगी में दूसरा काम ही न किया। यही वह व्यक्ति है जिसने बीमा के रुपयों के लोभ में जानवरों और चौपायों से भर हुए मवेशीखाने में आग लगा दी थी।'

'वह योंही बड़बड़ करती है। तुम उसकी बातों पर ध्यान मत दो बेटे ! हमारे साथ आओ।' कोरफीजन ने स्वेन के कंधे पर हाथ धरकर कहा।

पर तालिया बिना रुके कहती ही रही, 'वह देखो वही, बर्तिल है जिसने अपनी दादी को भूखों मार डाला, और यह टार्सन है जिसने आज तक ऐसी एक मछली नहीं बेची, जिसे उसने दूसरों की जाल से चुराई न हो और कोने में लड़खड़ाते हुए जो दो

पकड़ कर उठा लिया और देखते ही देखते कुटिया के बाहर दे मारा।

उसी समय सरदार की मदद के लिये फोरफीजोन सामने लपका। किंतु दूसरे ही पाया उसकी भी कमर में दो मजबूत हाथ जकड़ दिए और ओजास की तरह वह भी ऊपी टाँगे किए मकान के बाहर धड़ाम से जा गिरा।

अब अगजोल भी भाई की मदद के लिए बढ़ा। कुछ देर की गुत्थम गुत्था के बाद सब रफूचक्कर हुए और मैदान साफ हो गया। अगजाल ने फौरन ही दरवाजे की कुण्डी चढ़ा दी। तब अदर के साथ हाथ बढ़ाकर भाई के समीप आया। 'कैसे तुमने इन सबको दे मारा?' वह प्रशंसा के स्वर में बोला—'वह दाँव तो मुझे भी सिखाना होगा।'

बड़े भाई का चेहरा लड़ाई की उत्तेजना से लाल हो रहा था। अब चेहरे पर न वह रजींदा मुसकान थी, और न वह उदासीन विरक्ति ही।

'खूब छकाया सालों को!' अगजोल बोला, 'ऐसा सबक मिल गया है कि भविष्य में पास फटकने की भी उनकी हिम्मत न होगा। पर भैया! जब तुम उन सबको पछाड़ने के लिये अकेले ही काफी थे, तो इतनी देर चुपचाप सहन क्यों करते रहे?'

स्वेन का गला रुँध गया कुर्सी पर लुढ़क कर वह हाथों में मुंह ढापकर सिसकने लगा। यह पहला ही अवसर था, जब उसके दिल का बाध फूट चला हो।

'आह! अंगजाल वह ताकत और कुव्वत किस काम की?' वह रोता हुआ चिल्ला उठा—'किस तरह मैं अपने आपको, बचा सकता हूँ जब स्वंय ही अपने आप से इतनी नफरत करता हूँ, जितनी ये सब भी मिलकर नहीं करते होंगे? ओफ! कितना

मेरा स्वरूप भयङ्कर है ! कितना वीभत्स है ! तुम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। केवल मैं ही जानता हूँ, मैंने कितना भीषण दुष्कृत्य किया है। ओह ! जब मेरे मस्तिष्क पटल पर वह वस्तु आठों पहर अङ्कित रहती है—वह जो सबसे अधिक घृणित और वीभत्स है, तो कुछ शराबियों के मुँह बन्द कर देने से मुझे कैसे सान्त्वना मिल सकती है ?'

'मुझे तो उसका कुछ भी समाचार नहीं मिला।' अंगजोल बोला, 'हाँ, लोगों की गपशप कह सुनाता हूँ। कहते हैं कि पहले तो नेद पर केवल छ ही आदमी थे, जिनमें एक ने अपना बच्चा मार डाला था, दूसरे ने दादी को स्वर्ग पहुँचा दिया था, तीसरा ढोरों से भरा घर जला चुका था, चौथा मछली चुराकर बेचता था और शेष दो शराब पीकर मृत्यु को न्यौता दे रहे थे, पर अब उन्हें सातवां साथी और भी मिल गया है, जो मनुष्य का मांस भक्षण कर चुका है। अतएव खूब मजेदार समाज जुटा होगा।'

'ऐसा कहनेवाले गधे हैं।' तालिया ने मुंह बनाकर कहा! पर पुत्र का कुशल-समाचार पाकर वह मन में प्रसन्न थी। अतएव जब अंगजोल जाने लगा तो, वह बोली—'ज्योंही उसकी खबर तुम्हें मिले—फौरन ही आकर सुना जाना। भूलना मत, यही तुम्हारे लिए माता पिता की सेवा है।'

पन्द्रह दिन बाद लड़का फिर टापू पर आ धमका।

'पर अब लोग कहते हैं कि स्वेन ज्यादे दिन उन लोगों के साथ नहीं टिक सकता।' वह कहने लगा, 'क्योंकि उसने कई काम ऐसे कर डाले हैं जो उन लोगों को स्वप्न में भी सहन नहीं हो सकते। सुना है कि स्वेन की देखरेख से नेद—जो पहले सब से भद्दी किश्ती मानी जाती थी, अब ऐसी सुधर गई है कि न उसका इंजिन ही बिगड़ता है, न झंडा ही फटा नजर आता है। सब फटे पाल सी दिए गए हैं। नाव नये रंग से पोत दी गई है। खाना भी बढ़िया मिलता है और बरतन भी पहले से बहुत साफ रहते हैं। और यही कारण है कि उनके साथ स्वेन की नहीं पट सकती। क्योंकि नेद के लोग किसी बदमाश को अपने साथ रखना चाहे पसंद करभी लें, पर बरतन साफ रखना और पाल-पतवार रंगना पोतना तो वे स्वप्न में भी सहन न करेंगे।'

'आह ! लड़का मेरी खिल्ली उड़ा रहा है।' मा ने मन में च। पर स्वेन के लिये वह पहले से भी ज्यादा प्रसन्न हुई।

ग्रीमन क निवासियो का खबरें जल्दी-जल्दी नहीं मिल सकती। अतएव लडका पुन दो सप्ताह बाद आया।

'सचमुच हो स्वेन उनके साथ ज्यादा दिन अब नहीं निभ सकता।' ‍, उसी तरह कहने लगा, 'क्योंकि दिनोंदिन वह 'नेद' क रग बदलता ही जा रहा है। और सभी प्रकार के काम भी ज्याद से होने लगा है। सब जालें सुधर गई हैं। इसलिए मछलियो देर लग जाते हैं। पर यही तो कारण है, क्यो वे लोग स्वेन से हैं, क्योंकि ओलास और कोरफीजान, वर्तिल और वार्सन चाहे किसी नर मासों भक्षो के साथ रहना स्वीकार भी कर लें, पर फुर्ती से काम करना और खूब पैसा पैदा करना तो उन लोगों को कभी स्वीकार रहो नहीं हो सकता।'

सालिया उसकी बेसिर पैर की बातें सुनकर चिढ़ गयी। पर नाराज न हुई। उसे विश्वास होने लगा कि स्वेन की उन लोगों से खूब पट रही है। अतएव वह मन ही-मन प्रसन्न थी।

'ओह, जोल सचमुच ही सबसे बुद्धिमान आदमी है। वह जानता था कि लड़का काफी सफल होगा। तभी उसे भेजने का इतना अनुराध किया।' वह बोली।

पांच-सात दिन बाद आगजोल पुन एक नवीन समाचार लेकर आ पहुँचा।

'स्वेन को तो मैं नहीं देख सका' वह बोला, 'क्योंकि किश्तियाँ आजकल उत्तर की ओर गई हैं। पर लोगों की अफवाह कह सुनाता हूँ। लोग कहते हैं कि जब ओलास मकान बनवा रहा है, तो नेद क मछाहों में जरूर कुछ गड़बड़ हुई है। जरूर कुछ दाल में काला है। उन लोगों ने एक मनुष्य मांस भक्षो को अपना

पत्नी चौंक पड़ी। 'तो शायद तुम ठेका लेने का निश्चय ही कर चुके हो। पर अपने बल पर उसे निभा भी लोगे ?'

बूढ़ा कुछ अचकचा गया। बोला—'घर में जवान लड़का तो है!'

'अजीब आदमी हो!' ताजिया पति की अदूरदर्शिता देखकर बोली, 'उससे पहले पूछना तो चाहिए था ?'

माँ को भरोसा न था कि लड़का बाप के काम में सहायता देगा। क्योंकि स्वेन कुछ दिनों से बहुत उदासीन नजर आता था।

मैं तो नहीं समझता कि स्वेन इस काम से हिचकेगा' बूढ़ा बोला, 'प्रत्येक आदमी को इमारती काम से जानकार रहना चाहिए, क्योंकि सबको मकान में रहना ही पड़ता है।'

पर स्त्री के गले एक भी बात न उतरी। वह समझ न सकी कि स्वेन उस मकान का काम कैसे कर सकेगा, जिसका संबंध एप्लम के गिर्जे से है, जहाँ का लोकमत सर्वथा विरुद्ध है।

जब माता पिता स्कूल की चर्चा में उलझ रहे थे, स्वेन भी उपस्थित था। पहले तो उसने कुछ भी न कहा, पर जब पिता को निराश होते देखा, वह यकायक बोल उठा, 'खैर, जब ठेका लेना आप मजूर कर ही चुके हैं तो अब छोड़ना नहीं चाहिए। मैं शक्ति भर आपको मदद दूँगा।'

बात यह थी कि स्वेन अपने पिता का आतरिक उद्देश्य जानता था। उसे मालूम था कि जोल उसे किसी भी साधन से समाज में प्रवेश कराना चाहता है। अतएव यौवन में एकान्त वास करने की प्रबल इच्छा होने पर भी, वह पिता को राजी करने के लिये स्कूल में योग देने को तैयार हो गया।

स्वीकृति पाकर जोल बहुत प्रसन्न हुआ और उसी दिन बढ़ई,

, मज़दूर आदि से मिलाने के लिये पुत्र को अपने साथ गया।

अनिच्छा रहने पर भी स्वेन कुछ ही दिनों में उस काम में ा लेने लगा। पिता ने भी धीरे-धीरे सारा काम पुत्र को सौंप दिया। अब वही काम की निगरानी रख सकता था इच्छानुसार रद्दोबदल भी कर सकता था। लड़का अब पाया भी फिजूल बर्बाद करना नहीं चाहता था। अतएव ोमन आना भी छोड़ दिया। वह उसी स्थान पर रात-दिन रहता था, जहाँ इमारत का काम चल रहा था। जोल भी ।भार पुत्र के कधों पर रख चुका था। अतएव वह ोमन में ही रहने लगा। सिर्फ कभी-कभी चक्कर ने चला जाता था। और जब कभी लौटता, पत्नी या वहाँ क सुनाता रहता था। स्त्री पुत्र के लिये चिंतित होकर हमेशा करती थी कि ोमन क लोग स्वेन से असन्तुष्ट तो नहीं हैं। जोल उसे हर बार विश्वास दिलाया करता था।

'कल मुझे इसाइम जान्सन मिले थे', एक दिन उसने पत्नी कहा, 'वही स्थानीय काउन्सिल के सभापति हैं। मैंने स्कूल इमारत के बारे में उनकी राय पूछी तो वे बोले—'जोल ! तो हम लोग तुम्हारे लड़के को यह काम सौंपते हिचकिचा ए थे। पर अब तो स्कूल और गाव की काउन्सिलें ऐसा सोचने पहले दो बार विचार करेंगी। क्योंकि जब हम देखते हैं कि मामूली पत्थर की जगह उम्दा पत्थर और पतले पटियों के ीमती लकड़ी काम में ला रहा है तो हमें यही कहना ड़ता है कि जो उससे विद्वेष रखते हैं, वे गलती कर रहे हैं।'

वासिया अब समझ गई कि जोल ने केवल इसीलिये ठेका था, ताकि स्वेन अपनी योग्यता प्रदर्शित करने का मौका

(६)

एक दिन स्कूल की इमारत के लिये खरीदे हुए सामान का हिसाब चुकाने स्वेन बनभरी गया था। लौटती बार वह रेल से आया और एल्ज़म के पासवाले स्टेशन पर उतरा। किन्तु प्लेटफार्म से बाहर आने पर जब उसे वह घोड़ागाड़ी—जो उसके लिये आनेवाली थी—न मिली तो स्वेन एक अजीब
में पड़ गया। गाँव करीब दस मील दूर था। पैदल
न था। वह निश्चय नहीं कर सका कि वह इस
इसी समय एक छोटी-सी बग्घी खड़खड़ाती
स्टेशन के सामने ठहर गई। स्वेन उसकी
हुआ रायका। पर दरियाफ्त करने

नके लिये नहीं पर एल्नम के नव विवाहित पादरी के लिये आई । उत्तर के किसी पुरोहित की लड़की से अभी हाल में ही उसने ादी की थी और इसी गाड़ी से नववधू के साथ वह वापस आ ा था ।

स्वेन निराश हो गया । बग्गी के लिये उसने पहले ही सूचना भ दी थी । पर अब पता चला कि वह संदेशा एल्नम तक हुँचा ही नहीं था । अब क्या किया जाय ?

'बग्घी का कोचबक्स खाली है । आप पादरी से कहियेगा । हाँ बैठकर आप मजे से एल्नम तक चल सकेंगे ।' गाड़ीवान राय दी ।

पर स्वेन के गले वह नहीं उतरी । जबर्दस्ती किसी के सिर ढ़ना वह नहीं चाहता था ।

इसी समय स्टेशन के फाटक से पादरी अपनी नई पत्नी के ाथ निकला । दोनों की जोड़ी खूब फबती थी । पादरी लगभग ीस साल का एक हृष्ट पुष्ट नौजवान था । उसका ललाट चौड़ा, चेहरा तेजस्वी और मस्तक विशाल था । दाढ़ी घुंघराली और दाँत मोती जैसे स्वच्छ थे । उसमें वे सभी बातें मौजूद थीं, जो नवयुवती अपने पति में देखना चाहती है । स्त्री को जीवन की आपदाओं से बचाकर, उसे सुख और सम्मान देने के लिये वह सर्वथा उपयुक्त और समर्थ था ।

नववधू भी कोई साधारण सुन्दरी न थी । उसे देखकर अंग्रेज चित्रकारों की आदर्श रचनाएं याद आने लगती थीं, जिसमें ऐसा ही रूप अधिकतर चित्रित किया जाता है । लम्बा क़द, पतला बदन, ढालू कंधे, झुकी हुई गरदन, सुनहले बाल, गुलाबी गाल ··· और स्वर्गीय ज्योति से जगमगाते हुए विशाल नेत्र, जो अनित्य संसार से हटकर सर्वदा किसी अदृष्ट स्वर्ग लोक

की ओर ताका करते हैं। यह युवती उसी रूप की साकार प्रतिमा थी।

स्वन उस अप्रतिम सौंदर्य को देखकर विमुग्ध ना हुआ, किन्तु स्त्री की तुलना में उस पति बहुत भद्दा, निकृष्ट, और लगभग कुरूप ही प्रतीत होने लगा। ज्यों ज्यों स्वेन स्त्री के नाजुक बदन के साथ पादरी के भारी शरीर की तुलना करता, उसे ऐसा मालूम पड़ता मानो वह व्यक्ति उस अनुपम सुन्दरी के सर्वथा अयोग्य है। कह नहीं सकते, स्वेन के मन में पादरी के प्रति इस दुर्भावना का कारण क्या था। संभव है, उस दिन चर्च में किए गए अपमान को याद कर वह पादरी को निकृष्ट कह रहा हो। पर स्वेन को तो यही विश्वास था कि वह किसी भी दुर्भावना से प्रभावित नहीं है।

ज्योंही वे दोनों गाड़ी के समीप आए, स्वेन फौरन ही वहाँ से खिसक गया। किन्तु कुछ ही क्षण बाद उसने पादरी को अपनी ओर आते देखा। गाड़ीवान ने स्वेन को ले चलने के लिये अपनी ओर से पूछ लिया। समीप आकर पादरी ने गाड़ी में बैठने का अनुरोध किया। बात यह थी कि उसके मन में इस अभागे नवयुवक के लिये हमेशा सहानुभूति का भाव रहा करता था। 'ओफ़! ख्याल कितना गलत था ?'

आगे की सीट पर बैठते हुए स्वेन ने अपने मन में कहा— 'हमेशा मैं जल्दबाजी में लोगों को समझने में गलती करता हूँ। पादरी वास्तव में कैसे अच्छे हैं! कितने सज्जन हैं!' और तब क्षण भर पहले के विचार के लिये वह अपने आपको कोसने लगा और मन-ही मन उन लोगों की प्रशंसा भी करने लगा, 'वर्षों से ऐसी सुन्दर और समान जोड़ी मैंने नहीं देखी थी। गाड़ी में साथ-साथ बैठे हुए दोनों कितने अच्छे मालूम पड़ते हैं ? दोनों इस समय नवीन सुख के स्वप्नों को देखने में

हो रहे हैं। अब हमारे एण्डमन-जैसे घर में गृहिणी के प्रवेश से कितना उजाला हो जायगा। पादरी एक घड़ी के लिये भी वहाँ से दूर रहना न चाहेंगे।'

इन विचारों में स्वेन इतना निमग्न हो गया कि वह चौंक पड़ा, जब यकायक नववधू की थकी हुई आवाज सुनाई दी, 'ओह! कभी इनका अन्त भी होगा?'

'अन्त!' स्वेन चौंककर अपने मन में दोहरा गया, ऐसी कौन सी वस्तु है जो उसको तकलीफ दे रही है? और वह भी खास आज जब कि वह पहले पहल पति के घर आ रही है?'

वह आँखें दौड़ाकर चारों ओर देखने लगा और उसे समझते देर न लगी कि वो किस वस्तु से ऊब उठी थी, 'आह! इन काली-काली चट्टानों को देखकर वह घबरा उठी है।' स्वेन ने अपने मन में कहा।

सचमुच ही वह एक अजीब प्रदेश था, जहाँ गाड़ी इस समय दौड़ रही थी। न उसे पहाड़ी प्रदेश ही कह सकते थे—क्योंकि वहाँ ऊँची चोटियों या पर्वत मालाओं का नामोनिशान भी न था—न वह मैदान ही कहा जा सकता था, क्योंकि जगह-जगह चट्टान और टीले नजर आ रहे थे और वे भी कहीं इतने संकरे थे कि गाड़ी के लिये रास्ता ही नहीं बचता था और कहीं इतने दूर दूर कि गाँव बसने के काबिल बड़े बड़े मैदान नजर आने लगते थे दाहिने और बाएं, आगे और पीछे चारों ओर बस चट्टान ही चट्टान थीं। न उनका आरम्भ नजर आता था, न अन्त ही। स्वाभाविक ही था कि उनको देखकर किसी अजनबी का दिल ऊब उठे। सड़क भी उन चट्टानों के बीच इतनी घूमती फिरती हुई जा रही थी कि पता ही नहीं था कि आगे कैसा प्रदेश आनेवाला है। रास्ते भर बन्हें ऊबड़ शिला-खण्ड भी

सामने मिलते थे। उनके सिवा न हरे-भरे वृक्ष थे, न छोटे-बड़े पौद ही। अधिकांश चट्टानें नंगी ही थीं और कुछ ढकी भी थीं, सो इतनी छिटफुट घास से कि करीब-करीब एकसी नज़र आती थीं। उनको देखकर मन घबराने लगता था और जब कभी कोई खुला मैदान दीखने लगता तो साफ प्रदेश पाने की उम्मीद से दिल उछलने लगता था। किन्तु क्षण भर बाद ही पुनः एकाध चट्टान सड़क के सामने आ खड़ी होती थी।

'सचमुच ही यह टीले बहुत बेहूदे और दिल में घबराहट पैदा करनेवाले हैं। अफ़सोस है कि इस युवती को अपने ससुराल आते समय पहले पहल इन्हीं भद्दी चट्टानों के दर्शन हुए! मैं समझता हूँ उसके मन में ऐसे खराब दृश्य न होंगे!' स्वेन ने सोचा और दूसरे ही क्षण उसे पुनः आवाज़ सुनाई दी, 'आफ! इन बीहड़ पहाड़ियों में तो सघन झाड़-झंखाड़ से भी ज्यादा सुनसान लगता है!'

इसी समय एक जगह ऐसी आई जहाँ कुछ गाएं और कुछ भेड़ चर रही थीं। समीप ही कुछ बच्चे भी बैर चुन-चुन कर खा रहे थे। उन्हें देखकर युवती अपने पति की ओर मुड़ कर बोली, 'चलो कम से कम दो-चार बच्चे और जानवर तो नज़र आए! वरना मैं तो यही सोच रही थी, कि हमलोग किसी जंगली देश में से गुज़र रहे हैं, जहाँ सभ्यता का नामोनिशान भी नहीं है।'

यह क्या कहती हो सिग्रन!' उसका पति बोल उठा 'जानती हो, यह मेरी मातृभूमि है? यहाँ का एक-एक कंकड़ और तिनका मुझे माया से भी अधिक प्यारा है। अगर तुम्हारे प्रान्त के बारे में ऐसे ही अपशब्द कहें तो तुम्हें कितना बुरा लगेगा?'

जैसा कि स्वाभाविक था, वो उसके शब्दों से मुरझा गई।

बहुत देर तक वह कुछ भी नहीं कह सकी और अन्त में जब बोली तो इतने रुंधे कंठ से कि स्वेन समझ गया, वह अपने शब्दों के लिये पति से क्षमा माँग रही है।

'वस्तुतः और दिन मैं ऐसी अनमनी नहीं रहती थी। कह नहीं सकती आज मुझे क्या हो गया है।'

उसका प्रत्येक शब्द इतना प्यारा लगता था, प्रत्येक बात इतनी गंभीर थी कि स्वेन मन में सोचे बिना न रह सका। 'भगवान करे, यह इसी तरह बोलती रहे। इसके मुख से कुरूप वस्तुओं की निन्दा सुनने में भी एक आनन्द ही है।'

कुछ देर तक चुप रहकर वह पुनः कहने लगी। इस बार उसके स्वर में एक विचित्र कंपन था—'यहवहं! मैं जानती हूँ ऐसी बातों से तुम्हें आघात पहुँचाकर मैं भारी अपराध कर रही हूँ। पर क्या करूँ, मैं इतनी भयभीत हो गई हूँ कि लाख प्रयत्न करने पर भी उस भावना को नहीं दबा सकती। इसीलिये तुमसे सहायता पाने के लिये कहती हूँ। क्योंकि मुझे विश्वास है कि जीवन युद्ध में कमजोर होने पर मैं अब तुम्हारा सहारा पा सकूँगी।' उसकी वाणी में इतनी गंभीर अभ्यर्थना थी कि चोरी से उसके उद्गार सुनने के लिये स्वेन को एक तरह का संकोच होने लगा।

'ऐसा याद आता है' वह पति से अपने मन की घबराहट प्रकट कर रही थी, 'मानो इन चट्टानों को मैं पहले भी कहीं देख चुकी हूँ। मानो कोई व्यक्ति मेरा पीछा कर रहा था और मैं प्राण बचाने के लिये इन पहाड़ियों की भुलभुलैया में भाग रही थी। ओह! वही भय आज भी मेरा गला दबाए बैठा है। मानों अब भी कोई ताक लगाए समीप बैठा है और क्षण भर बाद ही भयंकरता के साथ मुझ पर टूट पड़ेगा। यदि मेरे मन में कोई इच्छा

कहते-कहते पादरी रुक गया। किन्तु स्त्री उत्सुक होकर बोल उठी—'तब ?'

'तब! तब कुछ नहीं। उस दृश्य को देखकर मेरे हृदय में, इतनी चुलबुलाहट पैदा हुई कि तत्काल ही आँखें खुल गईं।' पादरी इतना कहकर चुप हो गया। किन्तु स्त्री के हृदय में उस रहस्यपूर्ण किस्से से इतनी खलबली मचने लगी थी कि वह अपने मन के आवेश को रोक न सकी।

'तो आपका यही मतलब है न, कि यदि मेरे दिल में भी उतनी ही गर्मी उत्पन्न हो जाय तो ये सूनी चट्टानें भी सुन्दर प्रतीत होने लगें?' वह गद्-गद् कंठ से बोली—'घबराइए नहीं। अब मेरा भय भाग गया है। मैं भी अब वैसा ही अनुभव कर रही हूँ जैसा आपको उस स्वप्न में हुआ था। आपके प्यारे देश और घर को देखकर मेरे दिल का आनन्द उमड़ रहा है।'

'देखा न! स्वेन अब मन-ही मन कहने लगा, 'पहले-पहल देखकर किसी बात को भला बुरा कहने में अक्सर कितना भारी धोखा हो जाता है। इस पादरी से अच्छा और कहाँ मिल सकता था? उसका हृदय तो विशाल है ही। साथ ही मस्तिष्क भी असाधारण है। वरना कौन उस युवती को इतना अच्छा उत्तर दे सकता था?'

(७)

नये दम्पती मंगलवार को आये थे। अगले शनीचर को स्कूल-सम्बन्धी कुछ ज़रूरी कागज़ात लेकर स्वेन पादरी के मकान पर पहुँचा। उसे आशा थी कि वे घर पर ही मिलेंगे। इसलिये दूकान में होकर वह सीधा आफ़िस में जा धमका। पर पादरी नदारद! सोचा कहीं आस-पास हो गए होंगे, क्योंकि दो चार चिट्ठियाँ और किताबें मेज़ पर खुली पड़ी थीं। क़लम भी दावात में ऊँचा टाँग किए खड़ी थी। स्वेन की यह आदत न थी कि हर कमरे में झाँकता फिरे और पूछे, 'साहब घर पर हैं?' अतएव कुछ देर के लिये वह दफ़्तर में ही ठहर गया।

पर इसी समय पास के कमरे में कुछ फुस-फुस सुनाई दी। दरवाजा करीब करीब अध-खुला ही था, अतएव साफ-साफ सुनाई पड़ा।

'सियन !' वह पादरी का ही स्वर था, 'डाक आ पहुँची होगी। पर आज जाने से लाचार हूँ। सम्भव है, कोई मिलन-जुलने आ जाय।'

'तो चिंता की क्या बात है !' स्त्री ने उत्तर दिया, 'सालि बाज़ार जायगी ही। उधर से पत्र भी लेती आएगी।'

स्वेन ने समझा, अब पादरी वापस बाहर आ जायंगे। डा का प्रबंध करने दूसरे कमरे में गए थे। काम बन गया।

पर बहुत देर बीतने पर भी पादरी न आए। थोड़ा भर बा पुन उनका स्वर सुनाई दिया, 'क्या हर्ज है, यदि तुम्हीं आज चल जाओ ? दिन सुहावना है। कल की बरसात के बाद सड़क सू गई है। अच्छा है, यदि कुछ हवा खा आओ। टहलना भी जायगा और दिल भी बहलेगा।'

'मैं खुश-खुशी जाती। पर देखिए न, ये परदे कमरे में बि बिखर पड़े हैं। इनको ठीक किए बिना कैसे जा सकती हूँ ?'

स्वेन ने सोचा अब पादरी अन्दर दफ्तर में आ जायेंगे क्योंकि आगे कहने की कोई बात ही न थी। पर बहुत प्रतीक्षा क पर भी वे न आए। प्रत्युत आवाज कुछ बिगड़ी सुनाई दे ऐसा लगा, मानो मामला अभी समाप्त नहीं हो पाया है। 'पु पति का स्वर सुन पड़ा, 'और बेशक आप जैसी कुलीन महि... अपने पति के लिये डाक लाने कैसे जा सकती हैं !'

निस्सन्देह यह मजाक में कहा गया होगा। पर उसमें ऐसी न थी जिससे साफ-साफ झलक रहा था कि पत्नी के इन्कार वह चिढ़ गया है।

'एडवर्ड, ओफ ! तुम मेरा मतलब ही न समझ पाए !'

'सम्भव है, आप-जैसी सुन्दरी के लिये एप्सम बहुत भद्दी जगह हो।' वह उसी स्वर में कहता रहा, 'शायद श्रीमती जी तब तक हवा खाने नहीं निकलती जब तक ऐसा रमणीय स्थान न मिले, जहाँ चारों ओर सुन्दर अट्टालिकाएं और सुरम्य वाटिकाएँ न हों। ओह, भूल गया। मुझे चाहिए था एक बग्घी का इन्तज़ाम करता, ताकि आप × ×

'एडवर्ड !' वह अधीर होकर चिल्ला उठी।

'आह, मैं जानता हूँ बेचारा एप्जम क्या बराबरी करेगा, आपके पिता के ग्राम की। पर मुझे मालूम न था, आप इतनी सुकुमार हैं कि एप्जम की ज़मीन पर पैर ही न रखेंगी।'

'ओह एडवर्ड, क्या कह रहे हो। मैं फ़िलहाल नहीं जा सकती।'

'नहीं जा सकती ?' पति ने आश्चर्य से नेत्र विस्फारित कर पूछा।

इसी समय स्वेन ने सोचा, छिपकर बातें सुनना अनुचित है। अतएव दरवाज़े का हैंडल पकड़ कर ज़ोर से खटखटाया। जूते भी बजाए और खाँसा भी। पर किसी ने उसकी आवाज़ पर ध्यान ही न दिया। पति पत्नी उसी तरह बातें करते ही रहे।

'नहीं, मैं नहीं जा सकती' स्त्री कह रही थी, 'इस स्थान में कोई ऐसी वस्तु है, जिससे मेरा गला घुटने लगता है। मैं नहीं जानती वह क्या है ? वह माता पिता से बिछुड़ने का रंज नहीं वरन् कोई दूसरी वस्तु है। जब तक घर में रहती हूँ, मज़े में रहती हूँ, पर ज्यों ही बाहर निकलती हूँ, वह वस्तु मेरा गला आ दबोचती है।'

उसका गला रुँध रहा था। शब्द टूट रहे थे। वर्तना बह रही थी।

'पर सिग्रन, मैंने कोई बुरी बात तो कही नहीं!'

'ओफ! तुम मुझे नहीं जानते।' वह सिसकने लगी, 'मैं वैसा घमंडी नहीं हूँ, जैसी समझ रहे हो। मेरे घरवालों से पूछो, बताएंगे, मेरा स्वभाव कैसा है। यह कारण नहीं है कि यह जगह सुंदर नहीं है, सुहावनी नहीं है। नहीं! नहीं!! मेरे भय का कारण'

'सुनो, सिग्रन! यों मन ही मन जलने-कुढ़ने में कुछ सार नहीं। तुम्हें इन सब बातों का साफ मतलब कह देना चाहिए। यह मजाक या खिलवाड़ नहीं है।'

स्वेन बड़े पशोपेश में पड़ गया। बहुत देर से वह उनकी बातें सुन रहा था। यदि वे जान लें कि यह वहाँ छिपकर बैठा है तो मामला और भी बदतर हो जायगा। वह उठकर दरवाजे की ओर बढ़ा, पर ठिठक गया। बात यह थी कि वह निश्चय नहीं कर पाता था क्या करे? उस जैसा शंकाशील और आत्म-विश्वास हीन व्यक्ति शायद ही कोई मिलेगा। उसका मन अत्यंत डाँवाडोल रहा करता था।

'वस्तुत उसका कुछ भी अर्थ नहीं है', स्त्री पूर्ववत् अधीर होकर कहने लगी, 'इसीलिए मैंने तुमसे कहा नहीं। उसे मैं देख या सुन नहीं सकती, केवल घर के बाहर निकलने पर अनुभव करने लगती हूँ। ऐसा प्रतीत होता है मानो एक सकरे, सूने स्थान में बंद रहने का मुझे दंड मिला है। यही सोचकर एक विचित्र उदासी मेरे दिल में छाने लगती है। मुझे अपनी दुर्दशा पर आता है।'

'ओह! अब समझा।' स्वन ने सोचा, 'वह इसी इरादे से बातें कर रही है ताकि पति पुन. सुंदर उक्ति सुनाए, जैसी

दिन बच्चों मे सुनाने लगा था। और पादरी है भी इस
प। स्त्री को ठिकाने लाने की उसमें काफी शक्ति है। दिल भी
और दिमाग भी।'

'आह! अगर मैं इस मिल में कैद न होती और पहाड़ियों
यह दीवार चारों ओर न दीखतीं, अगर इस कब्र-जैसे तह-
ने में गढ़ी न होती और कुछ बाहर का भी प्रकाश पा सकती।'
अटकती-अटकती बोली, 'पर यह कोई किसी पूर्वजन्म क
का फल है, वरन् मैं यहाँ आती ही क्यों? ओह, इस दुख
रास्ता बतलाने के लिये तुम भी दो शब्द नहीं कह सकते?'

'अब पादरी जरूर कोई मजेदार बात कहेंगे।' स्वेन ने सोचा।
हीं खड़ा रहने के लिये स्वेन के मन में पछतावा न था। स्त्री
ी आवाज मीठी थी और आशा थी पति भी कोई बात
हेगा।

'पचीसों बार मैंने बाहर निकलने का प्रयत्न किया' स्त्री कहती
ही, 'पर नहीं जा सकी। तुम नहीं जानते, मुझे कैसा अनुभव
ोने लगता है। मेरा गला घुटा जाता है, मैं रोने लगती हूँ—'

'पर यहां तो ऐसा कुछ भी नहीं है सियन! यह केवल तुम्हारी
भ्रान्ति है।

'नहीं! नहीं!! यहां अवश्य कोई वस्तु है, जो मुझे नफरत करना
है। जो मेरा सुख हड़प लेना चाहती है। जानते हो, मैं आजकल
क्या किया करती हूँ? मैं बार-बार अपने गांव की तस्वीर को
देखती हूँ? जो भाई ने मेरे लिये खींच दी थी। पहले उस नदी
और मकान, उस फाटक और सड़क को देखकर मैं मजाक करने
लगती थी। पर अब उसमें ही इतना ढाढस बँध रहा है। मानो
उसको ही देखकर मैं जिंदा रहती हूँ।'

'मुझे भय है प्रिये! तुम बेवकूफी से भरी हुई निरर्थक कल्

नाओं में उलझ रही हो, पति अब उपदेशक के गंभीर स्वर में कहने लगा, 'तुम्हें चाहिए कि जब तक वह भ्रान्ति दृढ़ हो, उसे पहले ही उसे पूरी तरह दबा दो। इसीलिये मैं कहता हूँ ऐसा करो—जाओ डाकघर तक कुछ टहल आओ!'

'नहीं, न ीं जा सकती।' वह चिल्ला उठी।

'सुना सियन ? इस तरह बेसिर पैर की बातों में बचकाना लड़कपन है। तुम इतनी कमजोर तो हो नहीं कि डाकघर तक जाने में थक जाओ। तब क्यों हिचकिचा रही हो? यदि तुम चाहती हो कि हमारा सुख एक दो सप्ताह ही नहीं, वरन् जीवन भर अटल रहे, तो तत्काल इन बेवकूफियों को अपने मस्तिष्क से निकाल फेंको!'

स्त्री कुछ नरम पड़ गई। बोली, 'आज तो मुझे छुट्टी दे दो, दूसरी बार चली जाऊंगी। एक दो दिन में इस उदासी को दबा दूँगी——'

स्वेन साँस रोके खड़ा था। उत्सुक था, देखूँ पति स्त्री की प्रार्थना स्वीकार करता है या नहीं। पर स्त्री के गिड़गिड़ाने पर भी जब पादरी न पसीजा, कहा कि उसे ताजा अखबार देखने की सख्त जरूरत है, तो स्वेन को अचानक एक बात ऐसी सूझी जो पहले ही सूझ जानी चाहिए थी, पर बातों की घबड़ाहट में याद ही न रही थी। चुपचाप दरवाजा खोलकर वह धीरे से बाहर खिसक गया। पादरी का मकान दिखता रहा तब तक तो वह धीमे क़दम रखता हुआ चलता रहा। पर ज्यों ही मकान दृष्टि से ओझल हुआ वह एक सपाटे से डाकघर की ओर लपका।

अतएव पति की आज्ञा से लाचार होकर जब सियन आँखें ... और बीमार की तरह काँपती-लड़खड़ाती हुई, सड़क की ओर चली, तो उसे अधिक दूर नहीं जाना पड़ा।

क़दम गई होगी कि एक नवयुवक सामने आ खड़ा हुआ और ——— से अभिवादन कर, उस दिन की याद दिलाने लगा, जब टेशन से एप्लम तक वे साथ ही बग्घी में बैठ कर आए थे।

सिग्रन उसकी ओर आश्चर्य के साथ ताकने लगी। समझ ा सकी उसका आशय क्या है? तब स्वेन ने बतलाया कि वह ाकघर गया था और सिग्रन फ़ौरन समझ गई, वह क्यों उसके ास आया है। समझ गई कि पोस्टमास्टर ने उसके हाथ ख़बार भेजा है। पर युवक इतनी हिचकिचाहट के साथ बोल हा था कि उसका पूरा मतलब समझना कठिन था।

उसने स्वेन के हाथ से अख़बार ले लिया। पर घर की ओर वापस मुड़ी नहीं। मानो ध्यान ही न हो कि जिस चीज़ के लिये जा रही थी, वह उसे मिल चुकी है।

तब नवयुवक पुनः उसके समीप आया और अत्यन्त विनय के साथ कहने लगा, 'धृष्टता के लिये क्षमा करें। यदि आप टहलने निकली हों, तो हम सुहावनी सन्ध्या के समय समुद्र तट से ादकर दूसरी ,

'समुद्र-तट?' वह चौंककर बोल उठी, 'क्या यहाँ समुद्र ी है?'

'हाँ, समीप ही। और यदि हमें आज्ञा करें तो जाने में ज्यादा र भी न लगेगी।'

वह पश्चिम की ओर जानेवाली एक पगडण्डी की ओर ढ़ा। उसके वस्त्र मामूली मजदूरों से कुछ ही बेहतर होंगे। पर हरे से सचाई, ईमानदारी और नम्रता टपकी पड़ती थी। सके साथ जाने में सिग्रन को कुछ भी हिचकिचाहट हुई।

आकाश एक विचित्र अरुणिमा से अनुरञ्जित था। वह

(८)

रविवार का मनोरम प्रातःकाल था। अक्टूबर का अन्तिम सप्ताह।

प्रभातकालीन वायु दक्षिण के उन उष्ण प्रदेशों को साफ करती चली आ रही थी, जहां बगीचों में गुलाब खिल रहे थे, अंगूर की नई फसल ढल चुकी थी और कोल्हुओं में दाख का ताजा रस उफन रहा था। उसकी अनवरत खड़खड़ाहट में हृदय को बेचैन कर देनेवाली एक विचित्र ध्वनि थी, जो चित्त में वैसी ही खलबली मचाने लगती थी, जैसी किसी अजनबी की बोली। कह नहीं सकते, उस अजीब आवाज में कोई निगूढ़ रहस्य छिपा था,

वृक्षों के पीले पत्तों, ऊजड़ घोंसलों और तितलियों के

पेसर पत्रों की करुण कहानी थी। नहीं जानते, उस विचित्र खड़खड़ और फुस-फुस का अर्थ क्या था। किन्तु इसमें तो तनिक भी सन्देह नहीं कि वायु की उस विचित्र भाषा में दिल की व्यथा जगा देनेवाली कोई शक्ति अन्तर्हित थी।

कुछ ही क्षण पूर्व एल्लम के छोटे से बन्दरगाह पर नाव से दो आदमी नीचे उतरे थे। बूढ़ा तो घाट पर उतर कर, प्रार्थना में सम्मिलित होने के लिये सीधा गिर्जे की ओर चल दिया था। किन्तु लड़का पिता के साथ न जाकर वहीं किनारे तक पहाड़ी-कन्दरा में घुसा बैठा था। ऐसा प्रतीत होता था मानो पहले से ही उसे वह एकान्त स्थान ज्ञात है और बात थी भी सोलह आना ठीक ही। क्योंकि बचपन में अक्सर इसी चट्टान के खोखले में घुसकर वह दिन-दिन भर लेटा रहता था।

स्वेन की उदासी अब धीरे धीरे मिट चली थी। न उसके ओठों पर अब पहले जैसी रंजीदा मुसकुराहट थी, न हृदय में वह कड़ुवी वेदना ही, जो आग की तरह प्रतिपल उसके अन्तराल में धधकती रहती थी। जब से लौटा, तब से किसी दिन भी उसे इतना सुख नसीब न हुआ था, जितना पिछले एकाध सप्ताह में। यही कारण था जब समुद्र तट की उस एकान्त कन्दरा में लेटे-लेटे, वह प्रभात-वायु का रहस्यमय संगीत सुनने लगा तो अचानक उसके मस्तिष्क में कई पुरानी स्मृतियाँ उमड़ आईं और उसे याद हो आया वह दिन—जब इसी तरह क्षितिज तक फैले हुए अनन्त महासागर की सुखमा निहारता हुआ, वह किनारे की एक ढलुवा चट्टान के सहारे लेटा था। जब पानी पर प्रतिबिम्बित होनेवाले प्रकाश की चकाचौंध के आगे आँखें खुल ही न पाती थीं और अन्त में जब बहुत देर तक मुंदी रहने पर वे यकायक

लगी । किनारे की ढालू चट्टान से एक आदमी नीचे उतर रहा था। 'ओह ! यह तो वही नौजवान है, जिसने कुछ सप्ताह पूर्व मुझे पहले-पहल समुद्र का दर्शन कराया था।' उसे पहचानकर वह मन ही मन कहने लगी, 'अभी तो उस दिन की अनुकम्पा के लिये धन्यवाद देना भी बाकी है……' और जल्दी-जल्दी आँखें पोंछ वह आगन्तुक की ओर बढ़ी।

किन्तु तब तक वह स्वयं नजदीक आ पहुँचा था। यद्यपि इतवार का दिन था, उसकी पोशाक मल्लाहों-जैसी सादी और मैली थी। पैर में भारी समुद्री जूते, बदन पर खुरदर कपड़े, सिर पर पुराने ज़माने के सम्राटों के फौजी ताज जैसी एक बरसाती टोपी। किन्तु साधारण होने पर भी वे सब उसे खूब फब रहे थे।

'आपको यहाँ बैठी देख, सोचा कुछ सेवा करने का साहस करूँ।' वह समीप आकर बोला, 'नज़दीक ही मेरी नाव है, जो दीखन में भद्दी होने पर भी वास्तव में बुरी नहीं है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी यदि कुछ देर तक समुद्र की सैर कराने का मौका देकर अनुगृहीत करेंगी।'

यदि और किसी दिन होता, तो वह शायद ही स्वीकार करती; किन्तु आज तो वह थोड़ी सी सहानुभूति के लिये भी तरस रही थी। साथ ही उसे भय था कि वह नवयुवक कहीं अपनी साधारण पोशाक और टूटी नौका को ही अस्वीकृति का कारण न समझ बैठे। यह सोचकर वह इन्कार न कर ~ ।

… पाल चढ़ा दिया गया। दक्षिणी पवन के झोंके पर वह तन उठा। नौका और तिरछी होकर एक ओर - ओर ज्योंही स्वेन ने पतवार सभाल कर डाँड चलाना

शुरू किया, खाड़ी को चीरती हुई वह समुद्र की ओर भाग चली।

पहले तो समुद्र की सैर से आनन्द लाभ की सिपन को न आशा थी, न अभिलाषा ही। उसे विश्वास ही न होता था कि संसार में उसके दिल का बोझ हलका करनेवाला कोई पदार्थ है। किंतु जब छाया-चुम्बित धरातट को त्याग कर नौका असीम महासागर में प्रविष्ट हुई, तो सिपन के हृदय में ऐसी शान्ति और शरीर में ऐसी ताजगी का अनुभव होने लगा कि कठिन से कठिन विषाद को धर दबाना भी उसे अत्यन्त सरल प्रतीत होने लगा।

इधर-उधर बिखरे हुए बादलों के कुछ सफेद धब्बों को छोड़ आकाश लगभग निरभ्र था। किन्तु प्रखर किरणों को मंद करने के उपयुक्त, निचले वायुमण्डल में अब भी पर्याप्त धुन्ध विद्यमान थी, जिससे टकरकर आसपास की नंगी चट्टानों और सूखी पर्वत-मालायें रंग-बिरंगी छायाओं का नृत्य प्रदर्शित कर रही थीं। उनका प्रतिबिंब जगमगाते हुए सागर के वक्ष स्थल पर पड़ रहा था, जिससे आँखों के सामने एक अजीब समाँ बंध जाता था। आसपास के ढालू कगारे भयानक दृष्टिगत हो रहे थे। दूर की पर्वत मालाएँ रंग बिरंगी रेखाओं के रूप में एक के बाद एक सामने आ रही थीं।

इस वातावरण में प्रवेश करते ही सिपन की आँखों में एक बालक तुल्य उत्कंठा का भाव झलकने लगा। उसके हाथ आप-ही-आप आपस में बंधकर गोदी में लटक गए। वह इतनी श्रद्धा और भक्ति के साथ सागर की ओर देखने लगी, मानो प्राकृतिक सौंदर्य पर विमुग्ध होकर प्रकृति की एकाग्र उपासना में तल्लीन हो रही हो।

आज तक उसने जाना भी न था कि समुद्र के इतने समीप आकर, उसका श्वासोच्छ्वास सुनने और लहरों पर उसकी मुखाकृति के भावपरिवर्तन का कौतुक देखने में कौन सा रहस्य निहित है। आज तक उसे अज्ञात था कि सागर के वक्षःस्थल पर शिशु की तरह लेटकर प्रकृति की शांत लोरियाँ सुनने में कितना आनंद है। कितनी विश्रांति है! यह पहला ही अवसर था जब वह ईश्वर के एक अद्भुत कौतुक का रहस्य सोच रही थी। इसलिए वही एक विचार उसके मस्तिष्क में बार-बार उमड़ रहा था।

एकाएक स्वेन ने पतवार घुमाना छोड़ दिया और नौका आँधी के वेग में द्रुत गति से उत्तर की ओर भाग चली। वे कभी सकरी गलियों के बीच, कभी खुरदरी चट्टानों के नीचे होकर गुजरने लगे। किनारे पर कहीं लाल पीले फलों से लदे हुए नाशपाती के पुराने वृक्ष, कहीं धीवरों की रंगीन झोपड़ियाँ, कहीं चट्टानों के झरोखों से झाँकते हुए हरे-हरे चरागाह दृष्टिगत होते थे। प्रभात के आलोक में वे सब इतने सुन्दर, इतने सजीव नजर आ रहे थे कि वसंत-सुखमा भी उनकी तुलना में फीकी थी।

अब नाव एक टापू से दूसरे टापू को, एक चट्टान से दूसरी चट्टान को जाने लगी। रास्ते में कहीं जलयान, कहीं माल लादे हुए बजड़े, कहीं छोटी छोटी नौकाएँ सामने मिलती थीं। पानी की चमकीली सड़क पर वे ऐसी दृष्टिगत हो रही थीं, मानो बड़ी बड़ी तितलियाँ हों। स्वयं स्वेन भी उनकी ओर एक के विस्मय के साथ देख रहा था। आज प्रत्येक और चट्टान, क्या वृक्ष और ... भव्य प्रतीत हो रहे थे, ऐसे अवर्णनीय थे, मानों किसी त्यौहार की तैयारी

'जरूर ये जानते होंगे कि यह स्त्री सौंदर्य की अनन्य भक्त है', वह मन-ही मन कहने लगा, 'सभो तो वैसे रग बिरगे साज में सज धज कर तैयार खड़े हैं।' उसे प्रसन्नता थी कि सिग्रन उन्हें इतने अच्छे रूप में देख रही थी। किन्तु न सिर्फ समुद्र और पहाड़ ही प्रत्युत स्वेन भी आज अपने सबसे सुन्दर स्वरूप में प्रकट हो रहा था, क्योंकि और दिनों की अपेक्षा आज वह अधिक प्रसन्न था। अधिक शात भी था।

धीरे-धीरे बातचीत का प्रवाह भी फूट निकला। पहले मौसिम के सबध में चर्चा होने लगी। तब आस-पास के दृश्यों का प्रकरण छिड़ गया और स्वेन उसे किनारे के द्वीप और पहाड़ों के नाम और पते बतलाने लगा। कुछ ही मिनट क बाद शम और सकोच ताक पर रख दिए गए और इस तरह घुल-घुलकर बातें होने लगीं, मानों वर्षों के मित्र हों। ज्यों ज्यों साहस खुलता गया, त्यों-त्यों नई नई पुरानी बातें छिड़ती गईं और सिग्रन उसका अगाध अनुभव ज्ञान देखकर मन ही मन विस्मित और उत्कंठित होने लगी। विस्मित इसलिये कि समुद्र के निर्जन तट पर जनमनेवाले उस नवयुवक में इतनी प्रतिभा नजर आना एक तरह का आश्चर्य था। और उत्कंठित इसलिये कि उसकी अप्रतिम नम्रता, सुशीलता और बुद्धिमानी देखकर वह उसका वास्तविक स्वरूप देखना चाहती थी। वह स्वेन के सौजन्य पर मुग्ध थी, और धीरे-धीरे उसके लिये अपने मन में एक श्रद्धा का अनुभव कर रही थी। चाहती थी, ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति से परिचय प्राप्त करें, ताकि जब कभी अपनी दुर्बलता का भाव प्रकट हो, उससे सान्त्वना, सहानुभूति और सहायता पा सके।

इधर बातचीत करते कुछ मिनट भी न बीत पाए होंगे कि स्वेन के मन में, उस भोली युवती के सम्मुख अपनी पाप-

कहने की प्रबल उत्कंठा उठने लगी। बात यह थी कि आज तक जितने भी लोगों ने उसको दोषी करार दिया था, उन सबको वह किसी न किसी हद तक पाप-लिप्त समझता था। सभी ने जीवन में किसी-न किसी अवसर पर चोरी और धोखेबाजी की थी, झूठी गवाही दी थी और अनाचार भी किया था। सभी किसी हद तक घमण्डी और सुस्त, निर्दयी और अत्याचारी रह चुके थे किन्तु यह जवान लड़की, जो एक धार्मिक वातावरण में पली थी—पाप या स्वार्थ से अभी इतनी अलिप्त थी कि उसे न अपने, न दूसरों की ही कुप्रवृत्तियों का ज्ञान था। आज तक उसके मन में न कोई बुरी भावना ही उठी थी, न किसी का बुरा ही चाहा था। यह बात सच थी कि उससे उदार निर्णय पाने की आशा रखना व्यर्थ था। क्योंकि वह अत्यन्त भावुक और सतर्क थी अतएव बुरी और बदसूरत दीखनेवाली प्रत्येक वस्तु से नफरत किए बिना नहीं रह सकती थी। फिर भी स्वेन उसके समक्ष अपना मामला पेश करने के लिये तत्पर था। वही उसकी आदि न्यायाधीश थी। उसका ही निर्णय उसे सर्वोपरि मान्य था। यदि सम्राट के पास न्याय पाने के लिये जाना होता तो सम्भव था कि वह इन्कार कर देता, किंतु इस सामान्य लड़की के निर्णय के सम्मुख अपना सिर झुकाने के लिये वह खुशी-खुशी तैयार था।

इसी बीच, जब कि वह अपने मन का हाल कहने में हिच-किचा रहा था, उसने देखा कि मिग्नन पुनः पहले की तरह मौन धारण किए बैठी है। ऐसा प्रतीत होता था, मानो कोई बात कहना चाहती है, किंतु आरंभ करते हिचकिचा रही है।

आखिरकार साहस बटोर कर वह एक दम अपने मुख्य विषय पर आ पहुँची और स्वेन की ओर मुड़कर कहने लगी

पने देखा होगा, जब आप आए, उस समय मैं आँसू पढ़ा
थी ?'

स्वेन ने 'हाँ' कहकर स्वीकार किया।

'बात तो कोई बड़ी भारी न थी।' वह अब खुलकर कहने
ी, सिर्फ एक पत्र आज सुबह मिला था। वह मेरी एक सखी
पत्र था। अभी अभी उसका विवाह हुआ है। उसका पिता एक
धनवान व्यक्ति है और पति भी आरम्भ में इतना भला प्रतीत
ता था कि सभी लोग आशा करते थे, लड़की सुखी होगी × ×'

'और अब सुखी नहीं है क्या ?' स्वेन ने दोनों हाथों से
वार थाम कर कहा। वह इस तरह आगे झुक गया था, मानो
पन की सखी का हाल सुनने के लिये काफी उत्कंठित हो
हा हो।

'हाँ, ऐसा ही प्रतीत होता है।' युवती ने स्वेन की दृष्टि
चाने के लिये समुद्र की ओर ताकते हुए उत्तर दिया, 'पति न
ाने क्यों उससे नाराज रहा करते हैं। वह खुद इसका कारण
हीं समझ पाती। इसलिये मुझे लिखकर पूछा है। पर मैं भी
सके दुःख की दवा बतलाने में असमर्थ हूँ। मुझे उस बचारी
र तरस आती है। उसकी दशा का हाल पढ़कर आँसू निकलने
गते हैं, हृदय फट जाता है × ×'

'किंतु आपके पति पादरी तो बड़े अनुभवी आदमी हैं।
से आपने नहीं पूछा क्या ?'

स्त्री का चेहरा लज्जा की हलकी सुर्खी से लाल हो गया।
सने स्वेन के प्रति एक संदेह मिश्रित कटाक्षपात किया। क्षण
र के लिये दोनों की आँखें चार हो गईं। किंतु युवक की दृष्टि
संकोच या हिचकिचाहट का भाव न था। उसकी आँखों में

इतनी स्पष्ट वादिता थी मानो सब कुछ दिल खोलकर कह डालना चाहता हो।

'पति से इस बात का जिक्र करना शायद मेरी सखी पसंद न करे।' सियन ने उत्तर दिया और पुनः अपनी कहानी कहना शुरू किया—'दर असल बात यह है कि जब कभी बाहर जाने का मौका होता है, तभी उसके पति अधिकतर बिगड़ा करते हैं। रास्ते भर जबान पर ताला लगाए बैठे रहते हैं और यदि वह कुछ कहने का साहस करती है तो ऐसा चुभता जवाब देते हैं मानो जले पर नमक छिड़क रहे हों।'

'पर इसका क्या भरोसा कि पति को नाराज करनेवाली कोई बात आपकी सखी में नहीं है ? अर्थात दाल में काला ×'

'नहीं ' नहीं !' मुझे पक्का विश्वास है कि वे दोनों सच्चे और नेक हैं। यदि बाहर भी जाते हैं तो न राग-रंग में शरीक होते हैं, न खेल कूद में ही। मेरी सखी तो इतनी डरती रहती है कि उस दिन की बात है, जब वे पड़ोस में एक मित्र के यहाँ दावत में गये, वह दिन-भर बूढ़ी औरतों में ही बैठी रही, और बगीचे में भी तभी गई जब स्वतः मकान-मालिक ने आकर अनुरोध किया। और वहाँ भी कोई विशेष बातचीत न हुई। सिर्फ बगीचे के संबध में कुछ बातें छिड़ गईं। उसने कुछ पौदे पसंद किए और अपने मकान पर वैसा ही बगीचा लगवाने की इच्छा प्रगट की। बात कोई बड़ी भारी न थी। फिर भी पति महाशय बिगड़ खड़े हुए। लौटते वक्त जब स्त्री ने अपने पति को प्रसन्न करने के लिये बगीचे का जिक्र किया, तो वे ऐसे तमतमा उठे और क्रोध प्रदर्शित करने के लिये गाड़ी के घोड़ों को इतनी बेदर्दी से पीटना ... कि ... लाल हो गए और अगुलियाँ सफेद पड़ गईं। ... डाँट-फटकार सुनाई गई और भविष्य में उनकी आज्ञा के

स्वतंत्र घर प्राप्त होने पर भी, स्वाधीनता पूर्वक विचार करने का अधिकार नहीं है। उसका प्रत्येक काम गलत करार दिया जाता है। प्रत्येक शब्द के लिये डाँट फटकार सुननी पड़ती है है। ओह! जब वह बचपन के दिनों से आज की स्थिति की तुलना करती है तो अपने भाग्य के वैचित्र्य पर हँसे बिना नहीं रह सकती।'

स्वेन पुनः उत्तर देने में असमर्थ रहा। 'यह स्त्री कितनी असहाय और असमर्थ है!' वह मन-ही मन कहने लगा, 'ऐसा भी व्यक्ति नहीं, जिसके सम्मुख वह अपना कलेजा चीरकर रख दे। अभी सखी के बनावटी किस्से की आड़ में अपनी कहानी कही है।'

'यदि मैं किसी भी रूप में उसकी सहायता कर सकती!' वह आँसू बहाती हुई कहने लगी, 'क्योंकि मैं जानती हूँ कि वह नेक परोपकारी है। उसे गरीबों को सहायता देने की उत्कट अभिलाषा है। पर अफसोस, उसे परोपकार करने की भी अनुमति नहीं मिलती, न गिर्जे में ही मनचाहे स्थान पर बैठने मिलता है। गाँव के गिर्जे में भजनिकों के समीप एक स्थान है जहाँ से सारा हाल अच्छी तरह दृष्टिगत होता है और संगीत स्पष्ट रूप में सुनाई पड़ता है। वह उस स्थान पर बैठने के लिये लालायित रहती है। किंतु पति आज्ञा दें तब न!'

स्वेन को अब पक्का विश्वास हो गया कि सिग्रन स्वतः अपनी ही किस्सा सुना रही है, क्योंकि चर्च की जिस बैठक का वह वर्णन कर रही थी, एप्सम के गिर्जाघर में ठीक वैसी ही एक बैठक बनी थी, जो खास पादरी के परिवार के लिये निश्चित थी।

'ओह! समझ गया, पति इस स्त्री को सन्देह की दृष्टि से देखता है।' स्वेन मन में विचार करने लगा, पर इससे किस तरह पूछूँ यह बात? अच्छा है यह इस तथ्य से अनभिज्ञ रहे।'

और यह सोचकर कि पादरी चर्च से वापस लौटें, तबतक उसका घर पहुँचना आवश्यक है, स्वेन ने नौका को वापस एल्सम की ओर पलटाई। साथ ही रंजीदा विचारों से उसका ध्यान हटाने के लिए एक पहाड़ी की ओर संकेत करते हुये कहा 'देखिए! वही यीमन है, जहाँ स्वेन नामक एक व्यक्ति रहता है। उसका किस्सा तो आपने सुना ही होगा?'

स्त्री ने सिर हिलाकर स्वीकार किया। वह बात आगे बढ़ाना नहीं चाहती थी। पर यकायक, कुछ ऐसे शब्द बोल गई, जिन्हें सुनकर स्वेन के होश उड़ गए और उसके मन की सारी प्रसन्नता विलुप्त हो गई।

'और यह तो आप सुन ही चुके होंगे' वह बोली—'कि उस व्यक्ति ने जो मदरसा बनवाया था, वह कल रात को जलकर खाक हो गया?'

'खाक हो गया?' स्वेन करीब करीब चीख उठा। उसके हाथों से पतवार छूट पड़ा। पाल उलट गया। नाव भी करीब करीब चक्कर खा गई।

'हाँ, जलकर निलकुल नष्ट हो गया। और एक दृष्टि से हुआ भी अच्छा ही'—वह बिना घबराहट के बोली।

'यह क्या कहती हैं आप' स्वेन ने ओठ चबाते हुए कहा, लोग तो उस इमारत की बहुत तारीफ करते थे। तब भला क्या लाभ हुआ उसको नष्ट करने से?'

'हाँ, सुना तो मैंने भी था कि मकान अच्छा था। पर जब बच्चे वहाँ जाना ही नहीं चाहते थे? तो किस काम की वह इमारत?'

'जाना ही नहीं चाहते थे?' स्वेन चौंककर उन्हीं शब्दों को दुहराने लगा।

पहले से ही शोक के बोझ से दब रहा है। मैंने वह बेहूदा समाचार सुनाकर उसके घाव पर और नमक छिड़क दिया। हाय! आह क्या यही स्मृति लेकर वापस लौटूंगी कि आज मैंने इच्छा न रहने पर भी एक दुखी हृदय को आघात पहुँचाया है?'

वह बार-बार अपने आपको कोस रही थी। 'न जाने किसे उज्वल भविष्य के स्वप्न देख रहा था। न जाने कितने पैसे बर्बाद कर डाले। बचारे ने अपना काम-धन्धा भी त्याग दिया। सिर्फ इसी एक उद्देश्य से कि लोग उसे फिर से कृपा-दृष्टि से देखने लगें। पर हाय! सारे अरमान मिट्टी में मिल गए! सब प्रबल पानी हो गया। ओफ, क्यों मैंने यह बात सुना दी! मुझे इस तरह नहीं बोलना चाहिए था!'

रास्ते भर दोनों चुपचाप बैठे रहे। किसी ने मुँह से एक शब्द भी न निकाला।

किन्तु जब नौका एल्ज़म के पथरीले घाट पर जा लगी और स्वेन अपनी साथिन को उतारने के लिये उठ खड़ा हुआ, तो सिग्न ने उसका हाथ पकड़ लिया।

'क्षमा कीजियेगा!' वह अत्यन्त प्यार भरे स्वर में बोली, 'मुझे मालूम न था आप ही स्वेन हैं' और झुककर-उसके ललाट पर अपने ओंठ चिपका दिए।

'अरे! यह क्या कर रही हैं?' स्वेन इस तरह चौंककर चिल्ला उठा, मानो किसी ने ज़ोर से तमाचा मार दिया हो।

'कुछ नहीं, सिर्फ यही बतलाना चाहती हूँ कि मैं आपको उसी दृष्टि से नहीं देखती हूँ, जिससे और लोग देखा करते हैं।'

और तब घाट पर उतर कर वह चट्टानों की सकरी गली की ओर बढ़ी।

किन्तु कुछ ही क्षण बाद स्वेन पुनः उसकी बाजू में जा खड़

हुआ। कधे पर हाथ रखकर वह गद्‌गद् कण्ठ से बोला, 'आह! आपको किस तरह धन्यवाद दूँ। परमात्मा आपका भला करे। किन्तु ध्यान रहे, भविष्य में ऐसी गलती पुनः न हो। न अपने पति ही से आज की बातों का जिक्र करे, वरना ईर्षा के मारे वे आपको जिन्दा न छोड़ेंगे।'

वह चला गया और सिग्रन पुन खेतों में होकर अकेली चलने लगी। किंतु युवक के अन्तिम शब्द अब भी उसके कानों में गूंज रहे थे।

'ईर्षा! क्या सच है कि मेरे पति इर्षा करते हैं?' वह ोचने लगी, 'नहीं! नहीं!! असभव है। उस युवक ने क्या सोच र ऐसे शब्द कह डाले? उसे सोचना चाहिए था कि जी- ान से मैं पति की ही हूँ। उनके ही चरणों की मैं दासी हूँ।'

सोचते सोचते उसकी आँखों में आँसु छलक आए। अपन ति के सम्बन्ध में कुछ भी अपशब्द सुनना उसे नागवार था। से स्वेन के शब्द सरासर अनुचित, और क्रूर प्रतीत हो रहे थे।

'भगवान् जाने यह स्वेन कैसा है? लोग कहते हैं वह वस्तुत ुत अच्छा है, यद्यपि कुछ लोग उसका चेहरा देखना भी सहन करेंगे। कुछ भी हो, मैं तो समझती हूँ कि उसको जो सजा ...ी है, वह अनुचित नहीं है। जरूर उसमें कुछ दोष है। मैं जानती हूँ कि मेरे पति अब मुझे प्यार की दृष्टि से नहीं देखते। पर वे ईर्षालु तो नहीं हैं। किससे करेंगे ईर्षा! तब स्वेन क्या समझकर कहता था कि वे डाही हैं? × × नहीं, नहीं, यद्यपि वे मुझे चाहते नहीं हैं, कम से कम मेरे प्रेम पर तो विश्वास रखते होंगे। सरासर अन्याय होगा, उनपर ऐसा आरोप लगाना।'

घर का दालान में पैर रखते ही उसे अपनी दासी मिली। उसका चेहरा उतरा हुआ था। मालकिन की ओर मुड़कर वह

जंगल में भटक रहा है, शरीर भिलमंगों की तरह चिथड़ों से ढँका हुआ है, चारों ओर काली-काली नंगी चट्टानें हैं, रात्रि का घोर अंधकार फैल चुका है, सर्दी के मारे प्राण सिकुड़ गए हैं, न कहीं रास्ता सूझ पड़ता है, न कहीं दीपक ही दिखाई देता है। व्याकुल होकर इधर-उधर टटोलता है, पर कहीं भी सहारा नहीं पाता। इसी समय उसका हाथ अचानक किसी कुटिया के दरवाज़े पर जा लगता है और सिटकनी आप ही आप खिसक पड़ती है। वह अधखुले दरवाजे को धीरे से खोलकर भीतर घुस जाता है। देखता है कि अंगीठी के कोयले दहक रहे हैं। एक ओर दो कुर्सियाँ पड़ी हैं, दूसरी ओर एक सन्दूक—जिसके समीप दो बूढ़े एक पुरुष और दूसरी स्त्री-चुपचाप बैठे हैं। दरवाजा खुलते ही व हड़बड़ा कर उठ खड़े होते हैं। वे घबड़ा जाते हैं और औरत ही अपनी सन्दूक बन्द कर लेते हैं——इसके बाद भी यद्यपि वे अंगीठी के पास बैठने के लिये कुर्सी देते हैं, खाना परोसते हैं और बिस्तरा बिछाते हैं, वे मन ही-मन यही मनाते हैं कि भगवान करे, यह अजनबी मेहमान फौरन ही अपना रास्ता नापे। तब पत्थर की फर्श पर एक कोने में उसके लिये चटाई बिछाई जाती है। लेम्प्रेच बूढ़ों की अनुदारता के लिये मन-ही-मन खीझता है क्योंकि पत्थर चुभते हैं और चटाई बहुत पतली है। वह रोषमय दृष्टि से दोनों की ओर देखता है। अंगीठी के समीप एक दूसरे से सटे हुए वे कैसे मजे के साथ सो रहे हैं। उनका आराम से सो देख उसे क्रोध आता है, किंतु इसी समय उसकी दृष्टि बूढ़ों के सिरहाने पड़ी हुई एक चमकीली वस्तु पर पड़ती है और वह भय के मारे काँप उठता है। 'एँ! यह तो वही कुल्हाड़ी है, जिससे लकड़ी चीरकर आग सुलगाई गई थी।' वह भयभीत होकर ... है—'पर ये लोग इसे सिरहाने रखकर क्यों सोए हैं

है कि ... पुन आशंका से कांप उठता है । सहसा उस सन्देह होता मानो वह कुल्हाड़ी किसी खास मतलब से वहाँ रखी गई है । मेहमानों से मिल सके ! चट हाथों में आ जाय ! आह, बूढ़े कितने चालाक हैं । वरना इतने समीप कुल्हाड़ी रखने का क्या मतलब ?' ज्यों ज्यों सोचता है, उसका सन्देह दृढ़ होता जाता है । उसे विश्वास होता है कि असत्य उन लोगों के मन में दगा है । नींद आने लगती है, पर सोने का साहस नहीं होता । 'क्या पता आँख लगते ही उचककर कुल्हाड़ी उठा लें और देखते देखते धड़ से सिर.....' बार-बार उसे यही भय व्याकुल कर देता है और उसकी शंकाएँ बढ़ती जाती हैं । इसी समय कमरे में कानाफूसी सुनाई पड़ती है और लेम्प्रेच के कान खड़े हो जाते हैं । बूढ़ा न जाने किस बात के लिये अनुरोध कर रहा है, पर बुढ़िया उसे बारबार रोक रही है । 'सब्र करो, उसे सो जाने दो ।' लेम्प्रेच को स्त्री की स्पष्ट आवाज सुनाई पड़ती है और उसका रहा सहा सन्देह भी दृढ़ हो जाता है । अब उसे काफी विश्वास होता है कि बूढ़े बैठे हैं और जाल रचकर उसे खत्म कर देने की ताक में बैठे हैं । 'ओफ ! किसी गरीब खाना-बदोश की जान भयंकर खतरा में भी रहती है ।' वह मन-ही मन सोचता है—'शायद इन लोगों के पास कुछ रुपये पैसे हैं, जिनके लिये इन्हें भय है कि ज्योंही खुर्राटे लेने लगूं, उचककर जहन्नुम पहुँचा दें ।' इसी समय कमरे में पुन काना-फूसी सुनाई पड़ती है और लेम्प्रेच सोने का बहाना बनाकर जोर जोर से खुर्राटे भरने लगता है । उसे पैरों की आहट सुनाई पड़ती है । बूढ़ा उठ खड़ा होता है, रात्रि की प्रार्थना करता है और पुन लेट जाता है । तब दोनों खुर्राटे भरने लगते हैं, मानों गम्भीर निद्रा में अचेत हो गए हों । पर लेम्प्रेच का सन्देह रत्ती भर भी नहीं घटता । 'क्या पता, प्रार्थना का ढोंग रचकर धोखा

(१०)

सितम्बर १९१५ की बात है। नार्लैण्ड से दक्षिण की ओर आनेवाली रेल के एक तीसरे दर्जे के डिब्बे में, सिर से पैर तक काली पोशाक पहने एक नवयुवती बैठी थी। वह अपने साथियों से बातचीत करने में ही मशगूल थी, पर चूंकि उसकी आवाज जरा तेज थी, डिब्बे के दूसरे मुसाफिर भी आसानी से उसके शब्द सुन रहे थे। शीघ्र ही सब लोगों को मालूम हो गया कि रेल में सफर करने का उसका यह पहला ही मौका था। भीड़ और चहल-पहल देखकर वह ऐसी उत्तेजित हो उठी मानो अजनबी स्त्री-पुरुषों से मिलने-जुलने का मौका पाकर हृदय की कली खिल उठी हो। वह लगातार अपनी ही

कहानी सुना रही थी, जिससे पता लगता था कि संकोचों आवरण में रहने से उसे जी का गुब्बार निकालने का कभी अवसर ही न मिला था। यही कारण था कि रेल के मुसाफिरों से इतनी दिलचस्पी के साथ बातें कर रही थी और प्रत्येक व्यक्ति बतला रही थी—यह कौन है, कहाँ से आई है, कैसा संदेश आई है।

'यह न समझें कि इल्म के बोझ से मेरा दिमाग बिगड़ गया ।' यह कह रही थी, 'मैंने न तो इञ्जिल के सिवा दूसरी किताब आजतक पढ़ी है, न किसी निरर्थक वितण्डावाद से अपना मस्तिष्क ही बिगाड़ा है। मैं तो उस कोरा कागज जैसी साफ हूँ, जिस पर स्वयं परमात्मा ही अपने विचार अंकित किया करते हैं। पर करू क्या, जी-भर कर अरमान निकालने का कभी मौका ही न मिला, क्योंकि लैण्ड के शीत प्रदेश में जन्म हुआ और आरंभ ही से निर्धन और असहाय की तरह रहना पड़ा। आज भी दियासलाई के कारखाने में जाकर दो घड़ी मजूरी करती हूँ, तब कहीं पेट के लिये दो रोटी नसीब होती है। पति या बच्चे तो हैं नहीं। तब जी का गुब्बार निकालूं तो किसके सामने? लोग तो ऐसे निष्ठुर हैं कि मरने-जीने का भी हाल नहीं पूछते। यदि बीमार पड़ती हूँ तो कोई पानी देनेवाला भी नहीं मिलता। बल्कि पीठ पीछे वे सब मेरी मजाक उड़ाते हैं।

सामने सीट पर एक दयालु बुढ़िया बैठी थी। वही उस युवती से बातचीत करने में सबसे पहले शरीक हुई थी। जब जरूरत से ज्यादा उत्तेजित होते देखा, तो शांत करने के लिये उसने युवती का घुटना थपथपाया। पर स्त्री न रुकी, न चुप हुई। ऐसा लगता था मानो भीतर से कोई जबरदस्त शक्ति उसे ढकेल रही है, जिसको काबू में रखना उसकी ताकत के सर्वथा बाहर है।

से त्रसित संसार के दुखों की दवा मिलनेवाली है। मानों शीघ्र ही अनवरत हत्याकांड के हाहाकार और मूक-चीत्कार का अंत, व शांति का पुनरागमन होनेवाला है।

किसान उन दिनों के स्वप्न देखने लगे, जब उन्हें लड़कों को देश की रक्षा के लिये भेजने की आवश्यकता न रहेगी। सौदागर बाज़ार की महंगाई के विषय में चिंता करने लगे और मनुष्य खाद्य पदार्थों की कमी के लिये घबराने लगे। सभी एक स्वर में एक साथ ही चिल्ला उठे—'ओह! इस कमबख्त लड़ाई का अंत कब होगा? कब इस आपत्ति से दुनिया का छुटकारा होगा?

स्टॉकहोम की उस नवोढ़ा को स्वप्न में भी मालूम न था कि उसके शब्दों से डिब्बे में ऐसा हड़कम्प मच जायगा। धीमी आवाज़ में उसने उत्तर दिया, 'मेरे पत्र में ये सब बातें लिखी हैं। प्रायश्चित है। जान पर वे आप ही-आप दुनिया में प्रकाशित हो जायगी।'

सुननेवालों की सारी उत्तेजना तत्काल ठंडी पड़ गई। कई मुसाफिर उठ खड़े हुए थे, वापस अपनी सीट पर खिसक गए। स्पष्ट था कि यह स्त्री दूसरे लोगों से अधिक कुछ भी न जानती थी।

और तब सामने बैठी हुई बुढ़िया के सिवा किसी ने भी उसके शब्दों पर ध्यान न दिया। धीरे धीरे वह भी जान गई कि लोग उसकी बातों में दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं। अतएव जल्दी जल्दी अपनी बात समाप्त कर वह चुप हो गई। उसके अंतिम शब्द तो इतनी धीमी आवाज़ में कहे गए थे कि बगल के एक दो मुसाफिरों के सिवा दूसरा कोई भी न सुन सका।

(११)

गाड़ी स्टेशन के बाद स्टेशन पार करती लगातार चली जा रही थी। धीरे-धीरे लोता के सिवा सभी मुसाफिर डिब्बे से नीचे उतर गए। तब दूसरे डिब्बे का एक मुसाफिर बेहतर जगह खोजता हुआ वहाँ आ पहुँचा और कोने में आसन जमाकर बैठ गया। आते ही उसने लोता के साथ बातचीत शुरू कर दी। उसका स्वर चित्ताकर्षक और मधुर था। बोली में बेहद नम्रता थी। बिना नुक्ताचीनी किए, वह दिलचस्पी के साथ प्रत्येक बात सुनता था। दूसरों को उसकी आजिजी शायद खटकने लगती, पर लोता तो मान-सम्मान की भूखी थी। अतएव आदरयुक्त संबोधन सुन कर मन ही मन खिल उठी।

नहीं चढ़ पाई थी। मैंने सोचा, अवश्य कोई शुभ घटना होने वाली है। अतएव दौड़ती हुई मैं पुरोहित के मकान में जा पहुँची।'

'पर वहाँ भी वही विचित्र शान्ति थी। मुझे दरवाजे पर ठहरना पड़ा, क्योंकि वहाँ कोई भी व्यक्ति न था, जिसे मैं अपना पाई का दूध सौंपती।'

'इसी समय अचानक ऊपर के छज्जे से संगीत की एक मधुर धारा उमड़ पड़ी और मुझे इतनी स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी मानों उसी कमरे में, जहाँ मैं खड़ी थी, कोई सुरीले स्वर में एक अद्भुत वाद्य यन्त्र बजा रहा है। मैं ठिठककर खड़ी रह गई। मेरे आनन्द में बाधा देनेवाला वहाँ कोई न था। चूँकि नौकरानी जानती थी, अतएव निश्चिन्त होकर मैं कुछ देर के लिये ठहर गई। मुझे जाने की जल्दी न थी—यदि सम्भव होता तो रात भर वहीं खड़ी रहती और जाने का नाम भी न लेती। सचमुच ही उस सुरीली तान में ऐसा जादू भरा था।'

'उस समय गिर्जाघर की पुरानी ढंग की हारमोनियम के सिवा मैंने दूसरा कोई भी बाजा नहीं सुना था। अतएव मैं आश्चर्य करने लगी, वह कौनसा अनूठा यन्त्र है जिसकी आवाज उस कमरे में आ रही है? ज्यों ज्यों वे लहरें मेरे कानों के पर्दे पर टकराने लगीं, मेरे मस्तिष्क में मधुर और पवित्र विचार तरंगित होने लगे। ऐसा प्रतीत होने लगा मानों पृथ्वी से मुक्त होकर मैं परमेश्वर के समीप जा रही हूँ।'

'पर इसी समय कमरे में कोई व्यक्ति आ गया और तत्काल वह विचित्र संगीत बन्द हो गया।'

'आनेवाली घर की महाराजिन थी। दूध का बेला पकड़ कर उसने मुझे बैठने को कहा और मिठाई की एक तश्तरी सामने रख दी।

हुए बताया कि उस दिन घर की मालकिन—पुरोहित की वृद्धा माता—की अंत्येष्टि-क्रिया की गई थी। अतएव लोगों को भोजन के लिए बुलाया गया था।'

'उसका अनुग्रह देखकर मेरा साहस बढ़ा। मैंने पूछा वह कौन व्यक्ति है जो कुछ मिनट पूर्व इतनी सुन्दरता से ऊपर के छज्जे में बाजा बजा रहा था?'

प्रश्न सुनकर महाराजिन ताज्जुब करने लगी। 'क्या कहती हो बेटी!' वह भौंचक्की-सी होकर बोली, 'ऊपर के छज्जे से संगीत की आवाज आना कैसे संभव है? पियानो तो घर के पिछले हिस्से में है और यहाँ खड़े होकर उसका स्वर सुनना असंभव है। इसके अलावा जरा सोचो तो भला आज के दिन—जब कि खास मालकिन दफनाई गई हैं—कौन गाए बजाएगा?'

'मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े, क्योंकि बुढ़िया मुझे झूठी समझ रही थी। इच्छा हुई, फौरन दौड़कर वहां से भाग निकलूं पर सोचा कि परसी हुई चीजें खाए बिना उठ खड़ा होना उचित नहीं है।'

'इसी समय भीतर का दरवाजा खुला और स्वयं पुरोहित झाँक कर बोले, 'यहाँ क्यों बैठी हो, क्या प्रार्थना की घंटी नहीं सुनी?'

महाराजिन झेंपकर बगलें झाँकने लगी। 'इस लड़की ने मुझे डरा दिया था। इसलिये मैं सब कुछ भूल गई'—वह अटपटे अटपटे बोली—'कहती है, कुछ मिनट पूर्व ऊपर छज्जे से संगीत की आवाज आ रही थी।'

'पुरोहित नेत्र विस्फारित कर बोल उठे, 'संगीत? अहा! परमात्मा की लीला कितनी विचित्र है। मुझे पहले ही भरोसा

आग्रह कर रही थी—'सियन की चर्चा छेड़कर इस व्यक्ति से अपनी यात्रा का उद्देश्य कहो। महान् पापी को भी वह अपने म उच्च मानता है उसका हृदय विशाल है। वह दुःख की कड़ुवी घूँट पी चुका है। ऐसे शख्स के आगे अपने दिल की बात प्रकट करने में कुछ भी हर्ज नहीं है।'

स्टेशन के बाद स्टेशन आ रहे थे। गाड़ी भक-भक करती हुई लगातार दौड़ रही थी। बीच बीच में लोग कहीं उतरते, कहीं चढ़ते थे। तब एक भारी जक्शन आया, जहाँ कई लाइनों का सगम होता था। लोता व सामने बैठे हुए युवक को छोड़ कर सभी मुसाफिर उस डिब्बे से उतर पड़े।

युवक पुन सचेत होकर बैठ गया। टोपी उतार कर उसने रैक पर टाँग दी और लोता की ओर मुड़कर पुनः बातचीत करना शुरू किया।

वह प्रसन्न था, बुद्धिमान था, हद दर्जे तक नम्र था। यह आजिजी ही उसकी सबसे बड़ी खासियत थी। ऐसा कोई भी व्यक्ति न होगा जो पाँच मिनट तक उसकी ओर देख चुकने पर उससे अपना दुःख दर्द कहना न चाहे। प्रत्येक व्यक्ति उससे मिलकर यही सोचता था, 'इसको अपना हाल अवश्य कहना चाहिए। यह आदमी दिल का दर्द समझ सकता है।'

और पुनः बातचीत का प्रवाह उमड़ते देर न लगी। कारखाने की बात करते-करते लोता बाल उठी—'मुझे आपसे एक राय पूछनी है। यह तो आप जानते ही है कि मैं अभागिन अकेली और दुःखी हूँ × ×'

'राय ?' युवक ताज्जुब के साथ कहने लगा, 'भला, मुझ जैसा आपको क्या राय द सकता है ? खैर कहिए, किसी तरह यात्रा तो कटेगी, क्योंकि मैं भी दालसद तक

ा रहा हूँ और घर पहुँचने के पहले अभी दो दिन और रेल में ाटना है।'

स्त्री ने कहना शुरू किया—'उन दिनों की बात है जब शिक्षा प्राप्ति के लिये मैं हाइस्कूल क्लास में पढ़ने जाया करती थी। उस समय मेरी एक सखी थी, जो स्टेशनमास्टर के पुरोहित की कन्या थी, और मेरे ही साथ एक कक्षा में पढ़ती थी × ×' बोलते-बोलते उसका गला रुक गया और आखें सुर्ख हो गईं। पर क्षण भर बाद अपना आवेश रोककर वह पुनः कहने लगी, 'और मैं उसे इतना अधिक चाहती थी कि संसार का कोई भी व्यक्ति मुझे उतना प्यार नहीं लगता था × ×'

युवक चुपचाप स्थिर और शांत होकर बैठा था। पर अब उसके चेहरे पर न जाने क्यों घबराहट के चिह्न झलकने लगे।

'पहले मुझे कह लेने दें कि उससे पहली मुलाकात किस तरह हुई। ऐसा करने से आप समझ सकेंगे, वह लड़की कैसी थी।'

'हां, हाँ, खुशी के साथ कहिए। हमारे पास समय की कमी नहीं है। अभी तो पूरा दिन सामने पड़ा है' युवक बोला।

'अच्छा, तो उस दिन की बात है, जब जलपान की छुट्टी के समय कक्षा के करीब दर्जन भर लड़के लड़की गिर्जे के हाते में टहले थे और प्रश्नोत्तरी के किसी विवादग्रस्त विषय की चर्चा में उलझ रहे थे। मुझे याद है, एक लड़का कह रहा था—मुझे याद है, एक लड़का कह रहा था—'मुझे पक्का विश्वास है कि परमात्मा मनुष्य मात्र से प्रेम करते हैं, वे हमारे रचयिता हैं। अपनी रची हुई वस्तु को कौन नहीं चाहता?'

'मैं भी उसी मण्डली में शरीक थी। हम लोग गरीब माँ बाप के बच्चे थे, अतएव धनवानों के लड़के लड़की हमारे

फटकते भी न थे। वे अधिकतर अकेले ही-हाते में चहल कदमी किया करते थे, या पुरोहित की लड़की के आसपास भौंरों की तरह जुटा करते थे। कारण वह सुंदर और लुभावनी थी, और ऐसी आकर्षक थी कि एक बेर देखकर कोई भी उसके मर्माहत हुए बिना नहीं रह सकता था।'

लड़के की बात सुनकर मैंने पुरोहित की कन्या की ओर संकेत करते हुए कहा—यदि हम सब उस-जैसे सुंदर होते तो सम्भव था कि परमात्मा हम लोगों को भी चाहते।' और तुरन्त सब लोगों की आँखें उसी लड़की की ओर मुड़ गईं।

वह हम लोगों से कुछ दूर लड़कों के साथ टहल रही थी। उसका चेहरा लंबा था। आँखें गंभीर थीं। गाल फूल की तरह नाजुक और सुर्ख थे।

उसके गोरे ललाट और कंधों पर घुँघराली जुल्फें रेशम की तरह लहरा रही थीं। चलते समय उसका मस्तक ऐसी अनूठी अदा से एक ओर झुक जाता था कि सुंदरता सौ-गुनी अधिक बढ़ जाती थी। साराश यह कि परमात्मा ने उसे हर बात में हम लोगों से अधिक सुन्दर बनाया था।

सामने बैठे हुए युवक के मानस-पट पर यकायक एक दूसरे सुरीले की परिचित रूप रेखा झलकने लगी, जिसे उसने समुद्र की सैर करते समय, हूबहू इसी रूप में देखा था। ओफ! उस रूप में कैसा यौवन था! कैसा सौंदर्य!

'उसका नाम सिग्रन था' लोला कहने लगी, 'निस्सन्देह यह एक अनामा नाम था। किंतु उस लड़की में सिर्फ यही एक असाधारणता न थी। यह सच था कि हमारे समान ही उसकी आँखें थीं, हमारे जैसे उसके नाक-कान थे और उसके माता पिता हम लोगों जैसे साधारण मनुष्य थे। तथापि यह स्पष्ट था

सियन साधारण मनुष्यों से बिलकुल निराली थी। वह इस संसार की नहीं थी। वह किसी दूसरे ही लोक की निवासिनी थी।'

सामने बैठे हुए नवयुवक ने अनजान ही अपना सिर हिला दिया। 'निस्सन्देह यही शब्द उसके लिये सर्वथा उपयुक्त हैं।' वह मन ही मन बोल उठा, 'सचमुच ही वह किसी दूसरी दुनिया की रहनेवाली है। वह उस उड़नेवाले पक्षी-जैसी है जो रास्ता भूलकर न जाने कैसे अपने स्वजातीय बन्धुओं से बिछुड़ जाता है और ऐसे झुंड में शरीक हो जाता है जो उससे सर्वथा विभिन्न और विजातीय होते हैं।'

'क्योंकि परमात्मा की सृष्टि में सिर्फ यही एक लोक नहीं है' लोला कह रही थी, 'और भी कई लोक हैं जो हमारी दुनिया से बिलकुल निराले हैं और सियन उन्हीं लोकों में से किसी एक की निवासिनी थी। पर आप मेरी बातों का मतलब शायद नहीं समझ रहे हैं ?'

'नहीं, खूब अच्छी तरह समझता हूँ' युवक बोला, 'एक बार मुझे भी एक सुन्दरी मिली थी, जो किसी दूसरे ही लोक की प्रतीत होती थी।'

'पर मैं समझ न सकी' लोला पुनः अपना किस्सा कहने लगी, 'दूसरे लोक की होने पर भी सियन क्यों यहां जान पाई कि मैं परमात्मा की वाणी प्रकाशित करने के लिये नियुक्त की गई हूँ। मन विचार करने के लिये मैं चर्च के घटाघर की ओर चुपचाप खिसक गई। किन्तु शीघ्र ही मेरी सखियाँ वहाँ आ खड़ी हुई और व्यंग मिश्रित स्वर में मजाक उड़ाने लगीं। 'यह देखो लोला इसलिये एकान्त में बैठी रो रही है कि सियन उसकी ओर आँख भी नहीं उठाती'—एक लड़की बोली, 'जरा लोला के बालों का

तो मुआयना करो—कैसे उलझ रहे हैं, मानो कोई जंगली झाड़ी हो।'

'मैं चुपचाप उनकी मज़ाक भरी बातें सुनती रही। मैं सोच रही थी कि सिग्रन की उपेक्षा का कारण मेरे उलझे बाल नहीं हैं, प्रत्युत यह है कि वह दूसरे लोक की निवासिनी है।

पर लड़कियों ने मेरा पिंड न छोड़ा! 'ज़रा इसकी सूरत तो देखो।' एक कहने लगी, 'न बदन में ढंग है, न कपड़ों में। और आवाज़ कैसी है मानो कोई कौवा चिल्ला रहा है।

मेरी सहनशीलता बिखर पड़ी। उसकी तीखी बातें सुन कर मैं अब तक चुप थी। पर अब आखों से आँसू उमड़ आए और मैं सिसकियाँ भर भर कर रोने लगी। मैंने हाथों से अपना मुंह छिपा लिया।

किंतु दूसरे ही क्षण किसी ने अपने मुलायम हाथों से मेरा चेहरा खोल दिया और मुझे ऐसा अनुभव हुआ मानो अचानक ही मधुर प्रकाश की एक बाढ़ सी आ गई है।

और जब मैंने अपनी आँखें ऊपर उठाईं तो मेरे आश्चर्य का पारावार न रहा। क्योंकि स्वयं सिग्रन मेरा हाथ थामे मुस्करा रही थी और छुट्टी के बाद नदी में नौका विहार करने का अनुरोध कर रही थी।

'ओह! उस समय मेरे हृदय में अकस्मात् ही कितना सुख उमड़ आया। यद्यपि मैं जानती थी कि वह केवल दया के लिये ही इतना प्यार प्रदर्शित कर रही है। फिर भी मैं प्रसन्न हुए बिना न रही और उसी क्षण उसके प्रेम-पाश में बंध गई।'

'मैं भी उसी क्षण उसके प्रेम पाश में बंध गया'—सामने ने उस दिन का चुंबन और अल्हड़-हास्य याद

हुये हुए मन ही मन कहा—'यद्यपि मैं जानता हूँ कि वह केवल
था के लिये ही प्यार प्रदर्शित कर रही थी।'

'आह सिम्रन!' वह अर्द्ध स्वागत स्वर में गुनगुनाने लगा, 'इस
रूप में आकर मुझे क्यों तड़पा रही हो? मैं तो समझा था
सदा के लिये तुम्हारी स्मृति चित्त से भुला चुका। तब वापस
क्यों आ रही हो? क्यों सता रही हो?'

उधर लीला आगे का किस्सा बयान कर रही थी। कथा से
छुट्टी पाकर जब हम दोनों किश्ती पर सवार हुई और मैंने डाँड
चलाना शुरू किया, तो उसने उत्सुकता के साथ पूछा—'क्या
तुमने ही उस दिन मेरे मकान पर वह स्वर्गीय संगीत सुना था?'
और घटना का किस्सा सुनाने के लिये वह अनुरोध करने लगी।
मैंने सब कुछ कह सुनाया और बताया कि किसी दिन संसार को
दिव्य संदेश सुनाऊँगी। पर वह न हँसी न आश्चर्यान्वित हुई।
बल्कि नम्रता के साथ बोली, 'लीला मेरी तो परम प्रबल कामना
यही है कि अपना जीवन रोग-ग्रसित मनुष्यों की सेवा में अर्पण
करूँ। मैं चाहती हूँ कि नर्स बनकर कोढ़ और ऐसी ही भय-
कर व्याधियों से पीड़ित मनुष्यों की कुछ मदद करूँ और यदि
यह न कर सकी तो कम-से-कम अनाथ, गूँगों, और बहिरों की ही
सेवा में जीवन व्यतीत कर दूँ। पर मुझे भय है, माता पिता इस
काम में मुझे न जुटने देंगे।'

ओह! जब उसने वह बात कही, तब वह कितनी सुन्दर
प्रतीत हुई थी। कितनी महान!

सामने बैठे हुए युवक की आँखें एक अद्भुत प्रकाश से चमक
उठीं। आपकी पहचान, सुन्दर मैं कितना प्रसन्न हो रहा हूँ इस
आप कल्पना भी नहीं कर सकतीं। वह स्त्री की और
देखा।

'सचमुच ?' लोला प्रसन्न होकर कहने लगी, 'मैं समझी, आप सुनते सुनते ऊब उठे हैं।'

'नहीं-नहीं ऐसा मत कहो। उसके सम्बन्ध में यदि भर रातें करोगी तो भी मुझे सन्तोष न होगा।' वह बोला, क्या हुआ? उसी दिन से आप दोनों मित्रता के पाश में गईं?'

'हाँ', लोला कहने लगी, 'उस दिन के बाद ज्योंही हमारी छुट्टी मिलती, हम दोनों किश्ती पर जा बैठतीं। वह नाव में बैठ इधर उधर तैरना बहुत पसंद करती थी। उसे न जहाजों और रेल गाड़ियों में बैठने की चाह थी, न गाड़ी घोड़ों पर सवार होने की ही परवाह। वह तो एक छोटी सी किश्ती में बैठना ही सबसे अधिक पसन्द करती थी और उसके दिल में यदि कोई उत्कण्ठा थी, तो सिर्फ यही कि वह एक बार समुद्र का दर्शन करना चाहती थी।'

सामने बैठे हुए अजनबी ने अपना मस्तक झुकाकर हाथों से अपना मुंह ढाँप लिया। 'आह सचमुच! समुद्र दर्शन की उसे कितनी प्रबल इच्छा थी' वह मन ही मन कहने लगा। 'उसने बताया था कि पद्रह वर्ष की थी, तभी से उसके मन में समुद्र दर्शन की कामना जग पड़ी थी। और भगवान ने उसकी इच्छा पूर्ति करने का सौभाग्य मुझे ही सौंपा था। मैंने अपने जीवन में कम-से-कम एक सत्कार्य तो अवश्य किया है कि किसी की चिर वाञ्छित कामना पूरी कराने में सहायता दे सका।'

इधर लोला बिना रुके ही अपनी कहानी कहती रही, क्योंकि श्रोता की ओर से प्रोत्साहन मिलने की उसे आवश्यकता न थी। 'तब मैं यह सोचकर निराश होने लगी कि पढ़ाई समाप्त करने पर शायद हम दोनों हमेशा के लिये एक दूसरे से बिछुड़ जायगी

नहीं, सिम्रन उस ग्रीष्म भर प्रतिदिन आती रही और हम घटा तक नाव की सैर किया करती थीं। इस तरह कई ग्रीष्म और चले गए। वह मेरे जीवन का सबसे अधिक सुखमय था।'

युवक के मुह से एक नि:श्वास निकल पड़ी। सिम्रन!' अपने आप गुनगुनाया, 'यौवन और सौंदर्य का यह अनि रूप लेकर तुम क्या बारबार मेरे स्मृति-पट पर आ खड़ी ही हो? आह! मैंने तुम्हें भुलाने का कितना प्रयत्न किया? तनी बार कल्पना की, मानो तुम बूढ़ी हो चली हो, बच्चों की माँ हो, पति को प्यार करनेवाली प्रौढ़ा पत्नी हो। तब क्या पुन वन की नवीनता समेट कर आ रही हो?'

'और अब मैं तुम्हें बतलाऊ गी, किस तरह उस मित्रता का अन्त हो गया'—लीला ने कहा, 'चार वर्ष नौका विहार ने के बाद एक दिन मैं दोपहर के समय घर पर बैठी थी। उन के सुहावने दिन थे और उस दिन शायद इतवार था। मैं की खिड़की के आगे बैठी इधर उधर आँखें दौड़ा रही थी अकस्मात् मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो सामनेवाले टीले पर लाल रंग का बंगला बना हुआ है। मैं समझ न सकी, सहसा भव्य इमारत उसी दिन दोपहर को वहाँ कैसे बन गई। उस बनावट भी बड़े अजीब ढंग की थी। दुमंजिला मकान था। बाजू चौपाल और खलिहान थे, दूसरी ओर रसोई घर और अस्तबल। सामने नाशपाती के कुछ पुराने वृक्ष थे। समीप ही लम्बी चौड़ी अटारी थी, जिसकी दीवारें पत्थर की बनी थीं और ऊपर एक छोटी-सी कोठरी थी। पर सबसे अजीब न का एक बेढंगा वृक्ष था, जो मोटे तने

डाली। पर किसी को भी पता न चला कि पादरी को मारनेवाला कौन था, न उन्होंने अपने पाप का प्रायश्चित ही किया। सुनते हैं, तभी से वहाँ के निवासियों को एक तरह का शाप लग गया है कि भविष्य में हुगर का प्रत्येक निवासी अकाल मृत्यु से मरेगा।' "

'वाह! यह कहाँ का न्याय है?' मेरी मा बोल उठी—'अपराधी के साथ-साथ निर्दोषी भी मारे जाय?'

'हां, मुझे भी यह बात समझ में नहीं आती'—वह बोला, 'किंतु इसमें संदेह नहीं कि हमारे परिवार के लोग अधिकतर अपने ही हाथों मरते हैं। कहते हैं कि इसका कारण एक वृद्धा है, जो पादरी के हत्यारे की मा थी और उस मामले के गुप्त रहस्य से परिचित भी थी। उसने ही अपने हाथों से फाटक के एक खम्भे के नीचे गड्ढा खोदकर वह लाश दफनायी थी। उसके बाद वह बरामदे की ऊपरवाली कोठरी में बैठकर रात दिन उस खम्भे का पहरा दिया करती थी, ताकि कोई उसे उखाड़कर न फेंक। कुछ लोग तो कहते हैं कि आज भी वह कोठरी में बैठी खम्भे की ओर ताक रही है। और यद्यपि हुगर-परिवार के लोग अब मूल निवास स्थान छोड़कर इधर उधर भटकते फिरते हैं, तथापि उनका वह पिंड नहीं छोड़ती। जहां कहीं वे लोग जाते हैं, उन्हें वह बुढ़िया नजर आने लगती है। मानो उन लोगों में से एक को भी भोगने से नहीं बचने देगी।

'पर यह सर्वथा असम्भव है कि हमेशा इसी तरह होता' बोल उठी, 'कुछ न कुछ रास्ता तो होगा ही, जिससे इसका अंत हो जाय।'

'आपका कहना सत्य है', वह बोला, 'और हम लोगों ने इसका प्रयत्न भी कर चुके हैं। दो व्यक्तियों ने

कि यदि पादरी हो जायं तो सभव है कि यह शाप मिट जाय। पर यह बात भी उस वृद्धा के गले न उतरी। क्योंकि ज्योंही वे पादरी बने, उनमें-से एक की मृत्यु हो गई।'

'और दूसरा ?' मैंने उत्सुक होकर पूछा।

'वह आजतक एल्जम का पादरी है। सुना है, यहीं आपके गाँव के पुरोहित की लड़की से उसने शादी की है।'

इसी समय सामने बैठा हुआ नवयुवक सहसा चौंककर उछल पड़ा। गाड़ी एक छोटे से स्टेशन के प्लेटफार्म पर आकर ठहर गई थी। युवक हड़बड़ा कर रैक से अपना सामान उतारने लगा। पर श्रोता को उसकी आहट भी नहीं मालूम हुई। बोलते बोलते उसकी आखें तैरने लगीं और चेहरे पर एक अजीब भाव झलकने लगा। वह अटकती बोली, 'ओह ! मुझे कुछ नजर आ रहा है • बर्फ और एक काला सबू •'

तब तक वह अजनबी डिब्बे से बाहर निकल कर जल्दी जल्दी

डाली। पर किसी को भी पता न चला कि पादरी को मारनेवाला कौन था, न उन्होंने अपने पाप का प्रायश्चित ही किया। सुनते हैं, तभी से वहाँ के निवासियों को एक तरह का शाप लग गया है कि भविष्य में हगर का प्रत्येक निवासी अकाल मृत्यु से मरेगा'...

'वाह! यह कहाँ का न्याय है?' मेरी मा बोल उठीं—'अप[illegible] राधी के साथ साथ निर्दोषी भी मारे जाय?'

'हां, मुझे भी यह बात समझ में नहीं आती'—वह बोला, 'किंतु इसमें संदेह नहीं कि हमारे परिवार के लोग अधिकतर अपने ही हाथों मरते हैं। कहते हैं कि इसका कारण एक वृद्धा है, जो पादरी के [illegible]गार की मा थी और उस मामले के गुप्त रहस्य से [illegible] उसने ही अपने हाथ से फाटक के एक खंभे [illegible] वह लाश दफनायी थी। उसके बाद वह [illegible] कोठरी में बैठकर रात दिन उस खंभे का पहरा [illegible] कोई उसे उखाड़कर न फेंके। कुछ लोग [illegible] आज भी वह कोठरी में बैठी खंभे की ओर ताक[illegible] यद्यपि हगर-परिवार के लोग अब मूल-निवास-स्थान [illegible] इधर उधर भटकते फिरते हैं, तथापि उनका वह पिंड [illegible] छोड़ती। जहां कहीं वे लोग जाते हैं, उन्हें वह बुढ़िया नजर [illegible]न लगती है। मानो उन लोगों में से एक को भी वह पाप की सजा भोगने से नहीं बचने देगी।

'पर यह सर्वथा असंभव है कि हमेशा इसी तरह होता रहेगा', माँ पुनः बोल उठीं, 'कुछ-न कुछ रास्ता तो होगा ही, जिससे उस शाप का अंत हो जाय।'

'आपका कहना सत्य है', वह बोला, 'और हम लोगों में-से कुछ व्यक्ति इसका प्रयत्न भी कर चुके हैं। दो व्यक्तियों ने सोचा

कि यदि पादरी हो जायं तो सम्भव है कि यह शाप मिट जाय। पर यह बात भी उस वृद्धा के गले न उतरी। क्योंकि ज्योंही वे पादरी बने, उनमें-से एक की मृत्यु हो गई।'

'और दूसरा ?' मैंने उत्सुक होकर पूछा।

'वह आजतक एन्ज्ञम का पादरी है। सुना है, यहीं आपके गाँव के पुरोहित की लड़की से उसने शादी की है।'

इसी समय सामने बैठा हुआ नवयुवक सहसा चौंककर उछल पड़ा। गाड़ी एक छोटे से स्टेशन के प्लेटफार्म पर आकर ठहर गई थी। युवक हड़बड़ा कर रैक से अपना सामान उतारने लगा। पर लोता को उसकी आहट भी नहीं मालूम हुई। बोलते बोलते उसकी आँखें तैरने लगीं और चेहरे पर एक अजीब भाव झलकने लगा। वह अटकती बोली, 'ओह ! मुझे कुछ नजर आ रहा है बर्फ और एक काला तवू '

तब तक वह अजनबी डिब्बे से बाहर निकल कर जल्दी जल्दी क़दम उठाता हुआ प्लेटफार्म के फाटक पर पहुँच गया। जब लोता को होश आया, वह युवक की तलाश में इधर-उधर देखने लगी। किंतु पहले ही वह अजनबी स्टेशन से बाहर निकल गया था।

डाली। पर किसी को भी पता न चला कि पादरी को मारनेवाला कौन था, न उन्होंने अपने पाप का प्रायश्चित ही किया। सुनते हैं, तभी से वहाँ के निवासियों को एक तरह का शाप लग गया है कि भविष्य में हुगर का प्रत्येक निवासी अकाल मृत्यु से मरेगा।'

'वाह! यह कहाँ का न्याय है?' मेरी मा बोल उठी—'अपराधी के साथ साथ निर्दोषी भी मारे जाय?'

'हां, मुझे भी यह बात समझ में नहीं आती'—वह बोला, 'किंतु इसमें संदेह नहीं कि हमारे परिवार के लोग अधिकतर अपने ही हाथों मरते हैं। कहते हैं कि इसका कारण एक बुढ़िया है, जो पादरी के हत्यारे की मा थी और उस मामले के गुप्त रहस्य से परिचित भी थी। उसने ही अपने हाथों से फाटक के एक खंभे के नीचे कब्र खोदकर वह लाश दफनायी थी। उसके बाद वह बखारी की ऊपरवाली कोठरी में बैठकर रात दिन उस खंभे का पहरा दिया करती थी, ताकि कोई उसे उखाड़कर न फेंके। कुछ लोग तो कहते हैं कि आज भी वह कोठरी में बैठी खंभे की ओर ताक रही है। और यद्यपि हंगर-परिवार के लोग अब मूल निवास स्थान छोड़ कर इधर उधर भटकते फिरते हैं, तथापि उनका वह पिंड नहीं छोड़ती। जहां कहीं वे लोग जाते हैं, उन्हें वह बुढ़िया नजर आने लगती है। मानो उन लोगों में से एक को भी वह पाप की सजा भोगने से नहीं बचने देगी।

'पर यह सर्वथा असंभव है कि हमेशा इसी तरह होता रहेगा', मा बोल उठी, 'कुछ न कुछ रास्ता तो होगा ही, जिसमें बस हो जाय।'

'आपका कहना सत्य है', वह बोला, 'और हम लोगों में-से इसका प्रयत्न भी कर चुके हैं। दो व्यक्तियों ने सोचा

कि यदि पादरी हो जाय तो सभव है कि यह शाप मिट जाय। पर यह बात भी उस वृद्धा के गले न उतरी। क्योंकि ज्योंही वे पादरी बन, उनमें-से एक की मृत्यु हो गई।"

'और दूसरा ?' मैंने उत्सुक होकर पूछा।

'वह आजतक एन्सम का पादरी है। सुना है, वहीं आस गाँव के पुरोहित की लड़की से उसने शादी की है।'

इसी समय सामने बैठा हुआ नवयुवक सहसा चौंककर उछल पड़ा। गाड़ी एक छोटे से स्टेशन के प्लेटफार्म पर आकर ठहर गई थी। युवक हड़बड़ा कर रैक से अपना सामान उतारने लगा। पर लोवा को उसकी आहट भी नहीं मालूम हुई। बोलते बोलते उसकी आखें तैरने लगी और चेहरे पर एक अजीब भाव झलकने लगा। वह अटकती बोली, 'ओह! मुझे कुछ नजर आ रहा है, बर्फ और एक काला वधू ।'

तब तक वह अजनबी डिब्बे से बाहर निकल कर जल्दी जल्दी कदम बढ़ाता हुआ प्लेटफार्म के फाटक पर पहुँच गया। जब लोवा का होश आया, वह युवक की तलाश में इधर-उधर देखने लगी। किंतु पहले ही वह अजनबी स्टेशन से बाहर निकल गया था।

बटोरने का प्रयत्न करने लगी। 'खैर जो बदा होगा, सो तो होगा ही।' वह चिंता दबाने के लिये कहने लगी, 'और कुछ नहीं तो इस यात्रा द्वारा दुनिया देखना तो मिला। जब माता पिता मर गए और भाई ने मेरी जायदाद हड़प कर, रहने के लिये वह बेहूदी कोठरी दी, तो घर ठहर कर जीवन-बर्बाद करने में लाभ ही क्या था? इधर दिल में शांति न थी। रात दिन सिमन के लिये कोई आन्तरिक शक्ति मुझे तंग किया करती थी"

'वह देखिए, गिर्जाघर दिखलाई पड़ता है। हम लोग करीब करीब आ पहुँचे'—इसी समय गाड़ीवान वृक्षों के झुरमुट में छिपी हुई एक मीनार की ओर चाबुक से संकेत करता हुआ बोल उठा। थोड़ा भर बाद सड़क ढालू होने लगा और नीचे नदी की टढ़ी-मेढ़ी घाटी में वृक्षों के झुंड और किसानों के मकानों के साथ साथ लकड़ी का एक गिर्जाघर नजर आने लगा।

पर वहाँ पहुँचने के पूर्व गाड़ीवान फिर चाबुक उठाकर चिल्ला था, 'और वह [illegible] गिर्जे की मालकिन ही सड़क पर [illegible] जा रही हैं।' इन वाक्यों [illegible] सुनकर [illegible] साहस न जाने [illegible]

पर तब तक वे इतने समीप आ गए कि सिमन ने उनकी आवाज सुन ली। वह मुड़कर देखने लगी और एक अजनबी स्त्री को गाड़ीवान के साथ खींचतानी करते देख, उसके गंभीर चेहरे पर एक हल्की मुसकान दौड़ गई। किंतु पल भर बाद वह मुस्कराहट न जाने कहाँ विलुप्त हो गई और छाती पर हाथ रखकर वह गाड़ी की ओर लपकी। 'अरे लोता, तुम कैसे ?' वह आँसू बहाती हुई चिल्ला उठी।

लोता ने सोचा, ये आँसू उपालंभ सूचक थे। क्योंकि पुत्री के पैदा होते समय वह सिमन की सहायता नहीं दे सकी। वह गाड़ी से उछलकर कूद पड़ी और पल भर बाद ही क्षमा की भीख माँगने सखी के चरणों में लोट जाती, यदि उसके पहले ही सिमन ने उसे बाहु पाश में कसकर न बाँध लिया होता।

दोनों की आँखों से आँसू की धाराएं उमड़ चलीं। लोता के लिये तो निस्संदेह यह जीवन की सबसे महान् सौभाग्य की घड़ी थी। उसके आनन्द का पारावार न था, क्योंकि सखी ने प्रसन्न होकर उसे अपना लिया था। पर साथ ही उसके मन में यह विचार भी उठ रहा था—'यदि मुझ जैसी अभागिन को देखकर सिमन की आँखों में आनंदाश्रु उमड़ पड़ते हैं तो जरूर उसके जीवन में सुख [illegible] का अभाव है [illegible] काँटा उसके दिल में गड़

बटोरने का प्रयत्न करने लगी। 'खैर जो बदा होगा, सो तो होगा ही।' वह चिंता दबाने के लिये कहने लगी, 'और कुछ नहीं तो इस यात्रा द्वारा दुनिया देखना तो मिला। जब माता पिता मर गये और भाई ने मेरी जायदाद हड़प कर, रहने के लिये वह बेहूदी कोठरी दी, तो घर ठहर कर जीवन-बर्बाद करने में लाभ ही क्या था? उधर दिल में शांति न था। रात दिन सिमन के लिये कोई आतरिक शक्ति मुझे तंग किया करती थी...'

'वह देखिए, गिर्जाघर दिखलाई पड़ता है। हम लोग करीब करीब आ पहुँचे'—इसी समय गाड़ीवान वृक्षों के झुरमुट में छिपी हुई एक मीनार की ओर चाबुक से संकेत करता हुआ बोल उठा। जरा भर बाद सड़क ढालू होने लगी और नीचे नदी की टेढ़ी-मेढ़ी घाटी में वृक्षों के झुंड और किसानों के मकानों के साथ साथ लकड़ी का एक गिर्जाघर नजर आने लगा।

पर वहाँ पहुँचने के पूर्व गाड़ीवान फिर चाबुक बढ़ाकर चिल्ला पड़ा, 'और वह देखिए। खुद गिर्जे की मालकिन ही सड़क पर चली जा रही हैं।' इन शब्दों को सुनकर लोता का साहस न जाने कहाँ बिखर गया और बस साँस लेने में भी दिक्कत होने लगी। 'अरे! मैं क्या सोचकर यहाँ तक चली आई?'—वह सोचने लगी, 'यदि वह मुझे पहचान ही न सकी तो कितना मजाक होगा, कैसी जिल्लत उठाई जायगी।'

गाड़ीवान ने सोचा, यह स्त्री पादरी के यहाँ नौकरी करने आई है। अतएव मुड़कर पूछा, 'गाड़ी रोक दूँ, जिसमें आप मालकिन से मिल सकें?'

लोता की रही सही हिम्मत भी ढेर हो गई। '... फेर लो!' वह लगाम छीनती हुई बोली, 'हम रास्ता मु... जाना नहीं चाहती।'

पर तब तक वे इतने समीप आ गए कि सिमन ने उनकी आवाज सुन ली। वह मुड़कर देखने लगी और एक अजनबी स्त्री को गाड़ीवान के साथ खींचा-तानी करते देख, उसके गंभीर चेहरे पर एक हल्की मुसकान दौड़ गई। किंतु क्षण भर बाद वह मुस्कराहट न जाने कहाँ विलुप्त हो गई और छाती पर हाथ रखकर वह गाड़ी की ओर लपकी। 'अरे जोता, तुम कैसे ?' वह आँसू बहाती हुई चिल्ला उठी।

जोता ने सोचा, ये आँसू उपालंभ सूचक थे। क्योंकि पुत्री के पैदा होते समय वह सिमन की सहायता नहीं दे सकी। वह गाड़ी से उछलकर कूद पड़ी और क्षण भर बाद ही क्षमा की भीख माँगने सखी के चरणों में लोट जाती, यदि उसके पहले ही सिमन ने उसे बाहु पाश में कसकर न बाँध लिया होता।

दोनों की आँखों से आँसू की धाराएँ उमड़ चलीं। जोता के लिये तो निस्सन्देह यह जीवन की सबसे महान् सौभाग्य की घड़ी थी। उसके आनन्द का पारावार न था, क्योंकि सखी ने प्रसन्न होकर उसे अपना लिया था। पर साथ ही उसके मन में यह विचार भी उठ रहा था—'यदि मुझ जैसी अभागिन को देखकर सिमन की आँखों में आनन्दाश्रु उमड़ पड़ते हैं तो जरूर उसके जीवन में सुख और शांति का अभाव है। अवश्य कोई काँटा उसके दिल में गड़ रहा है।'

यकायक पादरी ने उनके हाव-भाव में परिवर्तन देखा। पता नहीं, वह कौन सी बात थी जो उन्हें असामान्य प्रतीत हुई। संभव है कि मुनीम के स्वर में उत्तेजना आने लगी हो अथवा सिम्रन की ही मुख-मुद्रा परिवर्तित दृष्टिगत होने लगी हो। कह नहीं सकते वह आकस्मिक परिवर्तन क्या था! पर पादरी को उनके रंगढंग में कुछ अन्तर नज़र आया, इसमें कुछ भी संदेह नहीं। वे अख़बार पटक कर उठ खड़े हुए और साँस रोककर किवाड़ की ओट से ताकने लगे।

मुनीम अब भी रेड-क्रास संस्था की नर्सों के बारे में कुछ कह रहा था। क्षण भर बाद सिम्रन के गालों पर आँसू की दो बूँदें लुढ़कती हुई नज़र आईं। तब धीरे धीरे कई बूँदें टपकीं और अदृश्य हो गईं। मुनीम ने उन आँसुओं को देखा, पर बहुत देर तक वह उसी स्वर में बोलता रहा, मानो सिम्रन के आवेश का उसे पता ही न हो।

तब यकायक वह इतना आगे झुक गया कि उसके हाथ सिम्रन के शरीर से लगभग छू गए। 'अच्छा! तो यही आपकी आतुर आकांक्षा है? यानी आप भी उस काम में भाग लेना चाहती हैं?'—वह बोला।

'ओह! पर सफल कैसे हो सकती हूँ?' वह अपनी बाहें सामने फैलाती हुई बोली। 'मैं हृदय से चाहती हूँ कि कुछ-न कुछ करूँ। क्योंकि इस विरोध के सुख और आराम से मैं ऊब उठी हूँ। पर क्या करूँ, लाचार हूँ!'

'... जाने में भी क्या आप बिलकुल असमर्थ हैं?'

यदि कुछ दिनों के लिये मैं मुक्त हो जाती!'—स्त्री हाथ हटाती हुई बोली, आख़िरकार मैं भी इन्सान हूँ'

कम से-कम एक बार तो मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक काम करने का मौका मिलना चाहिए।'

मुनीम ने उसके हाथ अपने हाथों में पकड़कर हृदय से लगा लिये। 'आप सच कहती हैं'—वह धीमी आवाज़ में बोला, आपको भी स्वतन्त्रतापूर्वक रहने का उतना ही हक है, जितना दूसरों को '

किंतु इसी समय पीछे की ओर किसी के पैरों की आहट सुन दोनों चौंक पड़े। बैठक का दरवाज़ा एक धड़ाके की आवाज़ के साथ खुल पड़ा और पादरी उग्र रूप धारण कर मुनीम की ओर लपके।

हड़बड़ाकर दोनों चौंक उठे। मुनीम तो इतना भयभीत हो गया कि अंग समेट कर भीगी बिल्ली की तरह सिकुड़ गया।

'भागो! जल्दी!' सिग्रन चिल्ला उठी और भरपूर ताकत से पति के हाथ पकड़कर पूछा, एडवर्ड! यह क्या मामला है?'

इस बीच मुनीम साहस बटोरकर उठा और दरवाजे की ओर जान लेकर भागा।

पादरी ने ज़ोर का धक्का देकर अपने हाथ छुड़ा लिए। स्त्री मेज़ से टकराती हुई पछाड़ खाकर ज़मीन पर गिर पड़ी। पर पति ने उसकी ओर ध्यान भी न दिया। भूखे भेड़िए की तरह वे भगोड़े के पीछे लपके। एक क्षण में दोनों दालान और बरामदा पार करते हुए हाते से बाहर निकल गए।

उसी समय दरवाजे का धड़ाका, पैरों की भगदड़, पादरी की ललकार और सिग्रन की चीत्कार सुनकर, रसोई घर में बैठी हुई लोता चौंककर उछल पड़ी। दरवाज़ा खोलकर उसने बाहर देखा कि हाते में दो आदमी बेतहाशा भागे जा रहे हैं। क्षण भर में वे दोनों अंधकार में विलीन होकर दृष्टि से ओझल हो गए

भगदड़ का कोलाहल नौकरों के कमर में भी सुनाई पड़ा। उन्होंने अपनी मालकिन को लड़खड़ाती हुई सामने आते देखा। उसके बाल बिखर रहे थे, कपड़े तितर-बितर हो रहे थे और ललाट से खून की बूंदें टपक रही थीं।

घबराकर वे उसकी ओर दौड़े। पर सिग्रन ने मना करते हुए कहा—'मेरी चिंता न करो। पहले उन दोनों के पीछे दौड़ो, अन्यथा वे दूसरे को मार डालेंगे।'

वे भौंचक्के होकर ताकने लगे।

'क्या ताक रहे हो।' वह चिल्ला उठी, जाओ जल्दी, नहीं तो दोनों को जिंदा न पाओगे।'

एक नौकर दौड़ा। बाकी दो मालकिन की देख-भाल करने के लिये वहीं रुक गए। वे एक कुर्सी लाए, क्योंकि उसके पाँव ऐसे काँप रहे थे, मानो नीचे की जमीन हिल उठी हो।

'लोता के पास ले चलो। लोता के पास।' वह बच्चे की तरह रोती हुई बोली। नौकरों ने उसे बाँहों पर उठा लिया और लोता के कमर की ओर ले चले। पर तब तक लोता स्वयं लपक कर सामने आ पहुँची।

'ओह लोता! मैंने कुछ भी न किया! सिग्रन चिल्ला उठी, 'मैं मुनीम से बातें कर रही थी और वे समीप ही बैठक में छिपकर देख रहे थे।'

यकायक उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई। लोता पानी लाने दौड़ी। फौरन घाव धोकर उसने पट्टी बाँध-दी। चोट सख्त न थी, न घाव ही गहरा था। पर आफत यह थी कि सिग्रन का मन न था। लगातार वह यही शब्द बार-बार कह रही थी—'मैंने कुछ न किया, केवल उससे बातें कर रही थी और वे कमरे से देख रहे थे।'

'सिम्रन ! तनिक शांति रखो' लोता ने प्यार भरी आवाज में कहा, 'मुझे भय है, तुम कहीं बीमार न पड़ जाओ। ठहरो, बांदी से तुम्हारा बिस्तर तैयार करने के लिए कह आती हूँ। तुम्हें कुछ देर सो लेना चाहिए।'

'नहीं, नहीं, मैं वहाँ कदापि न जाऊंगी।' सिम्रन बोल उठी, 'मैं उस घर मे अब पैर भी न रखूंगी।'

'पर प्यारी सिम्रन ! तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिए।'

'नहीं, मैं यहीं तुम्हारी खाट पर सो रहूँगी लोता ! मैं जानती हूँ, मुझे कई दिनों तक बिस्तर पर पड़े रहना पड़ेगा। अतएव मुझे ऐसा स्थान ही चाहिए, जहाँ किसी तरह का भय न हो।'

क्षण भर बाद पुन वह बकने लगी—'ओह ! मैंने कोई भी अपराध नहीं किया। केवल उससे कुछ दूर बातचीत की और व लपक कर टूट पड़े।'

वह आसपास खड़े हुए लोगा की ओर इस तरह नेत्र विस्फारित कर देखने लगी मानो आश्चर्य कर रही हो कि क्योंकर ये लोग उसके शब्दों का अर्थ नहीं समझते।

लोता ने दोनों नौकरों से सलाह लेकर आखिरकार यही निश्चित किया कि बीमार की मर्जी माफिक चलना ही श्रेयस्कर है। नौकरानी फौरन मकान की ओर दौड़ी और चादर, कंबल तकिए आदि लेकर वापस लौटी। सिम्रन जल्दी जल्दी कपड़े उतारने लगी। बिस्तर तैयार होने के पहले ही वह कपड़े निकाल कर सोने के लिये तैयार हो गई।

बिस्तर पर लेटते ही उसने लोता को अपने पास आने का संकेत किया।

'अभी सोओ मत लोता !' वह अनुरोध करती हुई बोली 'मेज के पास बैठ जाओ और मुझे अपनी बाइबल पढ़

उसने सच-सच बता दिया कि कि मिग्नन खुद आराम के साथ सो रही है। न उसे बुखार है, न किसी तरह का दर्द ही है और सिर की चोट तो नहीं के बराबर है।

पर जब पादरी ने पत्नी को मकान में लाने का सवाल उठाया, तो लोवा ने साफ इन्कार कर दिया।

'क्यों?' पति ने पूछा, क्या वह मुझसे भयभीत है?'

'जरा सब्र रखिए' लोवा बोली, 'अभी कमजोर हैं। अच्छी होते ही वह खुद चली आएँगी।

बीमार के मुंह से एक निश्वास निकल पड़ी। उसके चेहरे पर न सिर्फ शारीरिक, प्रत्युत एक मानसिक वेदना के भी चिह्न झलक रहे थे।

'ओह! नहीं,' वह निराश होकर बोला, 'अब वह वापस मेरे पास नहीं आयगी। उसे आने का साहस न होगा।'

दोपहर बाद जब डॉक्टर आया, तो उसने भी मिग्नन के बारे में करीब करीब वही बातें कह सुनाईं। 'मैं आपकी पत्नी की बीमारी को समझ ही नहीं पाता' वह पादरी से कहने लगा, 'संभव है, कोई दूसरा रोग हो। पर आपको फिलहाल अधिक छेड़ छाड़ नहीं करना चाहिए। जो कुछ उनकी मर्जी हो, वही काम कीजिए। पता नहीं, उनको कौन-सा रोग है। संभव है, किसी छूत की बीमारी का कीटाणु उनके शरीर में प्रवेश कर गया हो, जो कुछ दिन बाद भयंकर रूप धारण कर ले। अतएव उनके संबंध मे विशेष सावधान रहिएगा।'

इस तरह करीब एक सप्ताह बीत गया और स्थिति में कुछ भी परिवर्तन न हुआ। प्रति दिन चौकीदार के घर से वह लड़का पत्र चुपके-चुपके आता और लोवा द्वारा वापस ज्यों-का त्यों जाता। प्रतिदिन पादरी पत्नी का समाचार जानने के लिये

लोता का बुलाते और सिमन भी प्रतिदिन सुबह से शाम तक खटिया पर पड़े-पड़े खुर्राटे लिया करती। निद्रा नहीं आती, उस समय स्वीकृति सूचक भाव से सिर हिलाने लगती थी, मानो मन ही मन किसी बात का प्रस्ताव कर स्वयं ही उसका समर्थन कर रही हो। लोता भाँप गई थी कि मौन के आवरण में वह अपने भविष्य का कार्यक्रम बना रही है। पर अभी तक सिमन की योजनाओं का वास्तविक स्वरूप न जान सकी थी।

एक दिन सिमन ने लोता को समीप बुलाकर कहा, 'सुनो, मकान में मेरे कमरे की अमुक आलमारी में कुछ रुपये रक्खे हैं। लगभग छः सौ होंगे। यह सब मेरी ही सम्पत्ति है, दूसरों का इस पर कुछ भी हक नहीं है। यह रकम मैंने, उन पैसों से बचा-बचा कर जमा की है, जो माता-पिता साल-गिरह के दिन मुझे देते रहे हैं। मुझे चिन्ता है, कोई उन रुपयों को चुरा न ले, क्योंकि दिन भर मकान सूना पड़ा रहता है।'

दूसरे दिन सिमन ने कुछ पढ़ने की इच्छा प्रकट की और लोता ने एक अखबार ला दिया। सिमन दिन भर उस अखबार में छपे हुए रेल और जहाज-सम्बन्धी विज्ञापन देखती रही। लोता ने उसकी ओर ध्यान भी न दिया। किन्तु बाद में उसे सब बातों के रहस्य का अर्थ मालूम पड़ा कि क्यों उसने अपने रुपये मँगाये थे, क्यों अखबारों में छपे हुए जहाजों के रास्ते और टाइम टेबल पढ़ा करती थी'

इसी दर्मियान दल बल के साथ जाड़ा आ धमका। बर्फ गिरने लगी। सड़कें सफेद हो गईं। पत्तियों का खड़खड़ाना बंद हो गया और उनके बदले बिना पहियों की स्लेज गाड़ियाँ बर्फ पर फिसलने लगीं। खिड़की के बाहर बर्फ की सफेदी देखकर सिमन को अपने मायके की याद हो आई। उत्तर की प्रचण्ड सर्दी

दिल से चाहते हैं।' लोता ने उसकी बातें सुनकर कहा।

नहीं, नहीं तुम नहीं जानती हो लोता।' सिमन बोल उठी, 'मैंने कभी उनके साथ विश्वासघात नहीं किया। उनके सिवा किसी का स्वप्न में भी ध्यान नहीं किया। फिर भी वे मेरा विश्वास नहीं करते। यही बात मेरे हृदय को छेदे डालती है।'

'पर सिमन! युवावस्था में संदेह, ईर्ष्या आदि स्वाभाविक हैं। तुम देखोगी कि ज्यों ज्यों जवानी ढलती जायगी, ये बातें भी अदृश्य होती जायंगी।'

'नहीं! नहीं!! तुम उनको नहीं पहचान पाई हो।' सिमन बेचैन होकर कहने लगी, 'यह तो उनकी खान्दानी खासियत है। उनके परिवार के सभी व्यक्ति ऐसे ही हुए हैं। पचीसों बार उन्होंने इस बुरी लत को छोड़ने की कसमें खाई, पर आखिर क्या फर्क पड़ा? इसी उद्देश्य से एन्ज़म छोड़कर इस झाडखण्ड में आ बसे। सोचा, इस परिवर्तन से दिल की बेचैनी ठण्ढी हो जायगी। किन्तु यहाँ आकर जो नतीजा हुआ, वह देख ही चुकी हो, और मैं जानती हूँ कि उनकी भी दशा कम दयनीय नहीं है। उनके धार्मिक व्याख्यान अब हास्यास्पद हो चले हैं। लोग बिलकुल दिलचस्पी नहीं लेते। उनकी हालत अत्यन्त चिंताजनक है। पर... भी क्या किसी दर्जे कम दुःखी हूँ? मुझे उन्होंने ... कर दिया है कि चाहे बलात् मुझे जंजीर में बाँधकर ... जाय, तो भी उनकी ओर मैं ...

(१७)

अगले दिन बीमारी का बहाना बनाकर सिमन सुबह से शाम तक खाट पर पड़ी रही। किंतु रात्रि के भोजनोपरान्त जब नौकर-चाकर सो गए, वह उठ खड़ी हुई और पोशाक पहन कर बगल के कमरे में जा बैठी।

'तबीयत तो ठीक है ?' लोता ने चौंककर पूछा।

'बहुत अच्छी।' वह मुस्कुरा कर बोली।

लोता भाँप गई कि बीमारी का ढोंग रचकर वह घर से निकल भागने की तदबीर सोच रही है। पर, निश्चय न कर सकी, किस उपाय से उसका अनर्थकारी सङ्कल्प रोके। गत रात्रि की तरह आज भी वे दोनों घटों तक जागती रहीं, किंतु कल की तरह आज बातचीत का सिलसिला न छिड़ पाया, क्योंकि सिमन न जाने किस विचार में निमग्न होकर चुप्पी साधे बैठी थी और लोता में

लोता इस तरह ताकने लगी मानो सिग्नन के मन का विचार ताड़ गई हो। किन्तु सिग्नन बिना डगमगाए कहती रही, 'और इसमें संशय नहीं कि हमें यह कोठरी छोड़नी होगी, क्योंकि यहाँ की प्रत्येक वस्तु रोग के कीटाणुओं से दूषित हो चुकी है। पर अब हम जायगी कहाँ? क्या उसी पुराने मकान में—उसी दुःखदाई कारागार में?'

'नहीं, पादरी अपनी गलती समझ गये हैं, अतएव वह मकान अब दुःखदाई न होगा', लोता बोली, 'अब तो तुम्हारे सुख के दिन लौट रहे हैं। सिग्नन! ज्यों-ज्यों दिन बीतेंगे, तुम्हारे जीवन की समस्त चिन्ताएं शांत हो जायंगी।'

सिग्नन झुंझलाकर उठ खड़ी हुई। 'चलो, हमें मृतक की शांति में विघ्न न डालना चाहिए।' वह लैंप उठाकर बोली और साधिन का हाथ पकड़कर बगल के कमरे की ओर बढ़ी। उस समय दीपक के प्रकाश में उसका सलोना मुख-मण्डल ऐसी विचित्र आभा से जगमगा उठा कि लोता ठिठक कर वहीं खड़ी हो गई और उसके असाधारण सौंदर्य की प्रशंसा करती हुई सोचने लगी—'सचमुच ही यह स्त्री एक दुर्लभ और अनमोल रत्न है।'

'लोता!' पास के कमरे में पहुँच कर सिग्नन बोली, ... हो परमात्मा ने तुम्हें किस उद्देश्य से भेजा है? केवल ... कि आज-जैसी स ... में मुझे सहायता दे सको!'

लोता सिग्नन का ... गई, किंतु वह शीघ्र

सामने घुटने टेक झुक गई, लोला ! मैंने एडवर्ड से एक बार वादा किया था कि मृत्यु के सिवा कोई भी मुझे उनसे विभिन्न न कर सकेगा, और आज तक वह वादा मैंने अक्षरशः निभाया। प्रतिज्ञा भंग करने की अपेक्षा मर जाना लाख दर्जे बेहतर है। आज परमात्मा ने पुकार सुनकर ऐसा सुन्दर अवसर उपस्थित कर दिया है कि वादे की एक लकीर भी तोड़े बिना मैं सदा के लिये छूट कर सकती हूँ। जानती हो वह क्या है ? मृत्यु !'

लोला कुर्सी से खड़ी होने के लिये छटपटाने लगी, किन्तु सिम्रन ने एक न सुनी। उसने लोला को जबरन कुर्सी पर बिठा दिया और कहना जारी रखा—'यह परमात्मा की ही कृपा समझो कि एडवर्ड का जिक्र हुआए बिना अब मैं चाहे जहाँ जा सकूँगी अन्यथा योंही भाग खड़ी होती अथवा सम्बन्ध विच्छेद कर लेती तो क्या व एक क्षण व जिये भी सहन कर सकते ? ऐसी दशा में तो व दुनियाँ के कोने कोने में मुझे ढूँढते और पा लेने पर या तो मुझे ही मार डालते या स्वतः ही मर जाते। पर अब जो रास्ता सूझ पड़ा है, उसपर अग्रसर होने से, न उनके क्रोध का भय है, न संदेह का ही। सम्भव है, एकाध साल तक उन्हें रंज रहे, किन्तु उस रंज में आत्म कटुवाहट न रहेगी, क्योंकि औरों को चाहे जिस निगाह से देखें, मृत्यु को तो सन्दिग्ध दृष्टि से देखना असंभव है। सारांश यह कि हर तरह से इसमें उनकी भलाई ही है।'

'सम्भव है, किन्तु तुम्हारी ?'

'मेरी ? मेरी तो सबसे भारी भलाई इसी बात में है, जिससे सुखी हो सकें।' सिम्रन के ओठों पर स्वर्गीय ज्योति-तुल्य एक मुस्कान झलकने लगी।

'पर उनका तो सबसे भारी सुख इसी में है कि तुम उनके घर की शोभा बढ़ाती रहो !'

लोता इस तरह ताकने लगी मानो सिग्रन के मन का विचार ताड़ गई हो। किन्तु सिग्रन बिना डगमगाए कहती रही, 'और इसमें सशय नहीं कि हमें यह कोठरी छोड़नी होगी, क्योंकि यहाँ की प्रत्येक वस्तु रोग के कीटाणुओं से दूषित हो चुकी है। पर अब हम जायगी कहा? क्या उसी पुराने मकान में—उसी दु:खदाई कारागार में?'

'नहीं, पादरी अपनी गलती समझ गये हैं, अतएव वह मकान अब दु:खदाई न होगा', लोता बोली, 'अब तो तुम्हारे सुख के दिन लौट रहे हैं। सिग्रन! ज्यों-ज्यों दिन बीतेंगे, तुम्हारे जीवन की समस्त चिन्ताएं शांत हो जायंगी!'

सिग्रन झुंझलाकर उठ खड़ी हुई। 'चलो, हमें मृतक की शांति में विघ्न न डालना चाहिए।' वह लैंप उठाकर बोली और साथिन का हाथ पकड़कर बगल के कमरे की ओर बढ़ी। उस समय दीपक के प्रकाश में उसका सलोना मुख मण्डल ऐसी विचित्र आभा से जगमगा उठा कि लोता ठिठक कर वहीं खड़ी हो गई और उसके असाधारण सौंदर्य की प्रशंसा करती हुई सोचने लगी—'सचमुच ही यह स्त्री एक दुर्लभ और अनमोल रत्न है।'

'लोता!' पास के कमरे में पहुँच कर सिग्रन बोली, जानती हो परमात्मा ने तुम्हें किस उद्देश्य से भेजा है? केवल इसीलिये कि आज-जैसी सकटावस्था में मुझे सहायता दे सको!'

लोता सिग्रन का आशय भाँप गई, किंतु वह शीघ्र ही काबू में आनेवाली स्त्री न थी। बोली, क्या पता सिग्रन! शायद इसलिये भेजा हो कि आज-जैसी परिस्थिति में तुम्हारे रास्ते पर रोड़े अटका सकूं!'

'ओह लोता, तुम नहीं जानती!'–सिग्रन आवेश में उठी और लोता को बेंत की कुर्सी पर बिठाकर

सामने घुटने टेक झुक गई, लोला! मैंने एडवर्ड से एक बार वादा किया था कि मृत्यु के सिवा कोई भी मुझे उनसे विभिन्न न कर सकेगा, और आज तक वह वादा मैंने अक्षरशः निभाया। प्रतिज्ञा भंग करने की अपेक्षा मर जाना लाख दर्जे बेहतर है। आज परमात्मा ने पुकार सुनकर ऐसा सुन्दर अवसर उपस्थित कर दिया है कि वादे की एक लकीर भी तोड़े बिना मैं सदा के लिये कूच कर सकती हूँ। जानती हो वह क्या है? मृत्यु।'

लोला कुर्सी से खड़ी होने के लिए छटपटाने लगी, किन्तु सिमन ने एक न सुनी। उसने लोला को जबरन कुर्सी पर बिठा दिया और कहना जारी रखा—'यह परमात्मा की ही कृपा समझो कि एडवर्ड का दिल दुखाए बिना अब मैं चाहे जहाँ जा सकूँगी अन्यथा योंही भाग खड़ी होती अथवा सम्बन्ध विच्छेद कर लेती तो क्या वे इस दुःख के लिये भी सहन कर सकते? ऐसी दशा में तो वे दुनियाँ के कोने कोने में मुझे ढूँढते और पा लेने पर या तो मुझे ही मार डालते या स्वतः ही मर जाते। पर अब तो रास्ता साफ पड़ा है, उसपर अग्रसर होने से, न उनके क्रोध का भय है, न संदेह का ही। माना है, एकाध साल तक उन्हें रंज रहे, किन्तु उस रंज में अब कड़ुवाहट न रहेगी, क्योंकि औरों को चाहे जिस निगाह से देखें, मृत्यु को तो सहिष्णु दृष्टि से देखना असम्भव है। सारांश यह कि हर तरह से इसमें उनकी भलाई ही है ...'

'सम्भव है, किन्तु तुम्हारी?'

'मेरी? मेरी तो सबसे भारी भलाई इसी बात में है, जिससे वे सुखी हो सकें।' सिमन के ओठों पर स्वर्गीय ज्योति युक्त एक मुस्कान झलकने लगी।

'पर उनका तो सबसे भारी सुख इसी में है कि तुम रहकर उनके घर की शोभा बढ़ाती रहो।'

इसी समय लोशा चीख उठी, क्योंकि सिमन पानी में कूदने के लिये पुलिया के जंगले पर आ चुकी थी।

'अरे! अरे! भगवान के नाम पर ऐसा न करो', चाबूकवाला चिल्लाया और सिमन की ओर लपका। 'नहीं, मैं घर न लौटूंगी।' वह वहीं खड़े-खड़े दृढ़ता के साथ बोली।

'हां, हां, मत लौटिए। मैं किसी से एक शब्द भी न कहूँगा। आइए, गाड़ी में बैठ जाइए। मैं अगली सराय तक पहुँचा दूँगा, क्योंकि आप-जैसी महिला के लिये बर्फ में पैदल चलना आसान काम नहीं है।'

'आज तो सिमन सचमुच ही एक जादूगरनी बन गई,' लोशा ने आश्चर्य करते हुए सोचा, 'वह मनमाना काम करती है फिर भी कोई चूं नहीं करता।'

---

(१८)

वह दिन जिसका श्रीगणेश सिमन के पलायन से हुआ था, ऐसा लम्बा और उदासीन था कि लोता उसके अवसान की प्रतीक्षा करते करते ऊब उठी।

सिमन को पहुँचाकर वह कुटिया में वापस आई, उस समय तीन पहर रात बीत चुकी थी। सूर्योदय के पहले आगामी कठिनाई के लिये तैयार हो जाना आवश्यक था। इसलिए मृतक के कपड़े-लत्ते जलाकर उसने अस्त व्यस्त कमरे के पर्दे पूर्ववत लटका दिये और भय से काँपती हुई पड़ोस के कमरे की ओर बढ़ी, जहाँ उस अजनबी औरत की लाश अंधेरे में पड़ी थी। लोता ऐसी डरपोक तो न थी कि मुर्दे के नजदीक जाकर डर जाती, किंतु यह सोचकर काँप रही थी कि अनुचित बर्ताव से मृतक की आत्मा कहीं अप्रसन्न न हो उठे। अतएव शव के समीप जाकर उसने सबसे पहले दो तीन बार प्रार्थना

की तरह सिसक-सिसक कर रोने लगी, 'ओह! मुझे बचाओ, मुझे शरण दो!'

श्वेन उसके कंधों पर हाथ धरकर झुक गया। इतना अधिक झुक गया कि उसका कपोल सिग्रन के स्निग्ध ओठों से जा लगा। 'तुमने महान् संकट में एक बार मेरी रक्षा की थी—वह रुंधी आवाज से बोला, आज तुम्हारी कातर पुकार सुनकर उस उपकार का हजार गुना बदला देते भी मैं क्या हिचकिचाऊंगा?'

वह कुर्सी पर बैठकर हृदय का आवेग दबाता हुआ बोला—'आखिर इस दुःसह परिस्थिति का कारण क्या था?'

'क्या कहूँ? ऐसा लंबा किस्सा है कि न आरंभ सूझता, न अन्त ही।' वह कुर्सी की बगल में खड़ी होकर बोली, विवाह हमें सुखप्रद न हुआ। न वे ही सुख पा सके, न मैं ही!'

'यही हाल रूथ का भी था'—वह अपने-आप गुनगुनाया, 'मुझसे विवाह करके वह जरा भी सुख नहीं पा सकी।'

'आप अलजेरिद में वह अनीम वाला किस्सा तो सुन ही चुके होंगे!'

'हाँ, किंतु उसमें दुर्भाग्य की छाया न थी। केवल शोक! अनवरत शोक ही था।'

'तो सचमुच ही मेरे मरने में वहाँ किसी [illegible] किया!'

'हाँ, वहाँ तो सबका यही विश्वास थ[illegible] की छूत से मर गई।'

'ओह! तुम्हें क्या मालूम, चेचक थी, [illegible]' वह कहते-कहते अटक गई।

'कौन?' श्वेन चौंक उठा [illegible]?' [illegible] जा बैठी और आँखों [illegible]

एक कमरे में सन्नाटा छाया रहा, स्वेन चुपचाप कर चली हुक दम प्रशान्त था और सिमन रूमाल भिगाती हुई मन ही मन अपना भाग्य कोस रही थी।

सब टहलता टहलता वह वापस मेज के समीप आ बैठा और पूरा हाल सुनने के लिए बोला—'आगे ?'

और वह कहने लगी, किस तरह उस अजनबी स्त्री ने कमरे में प्रवेश किया था, किस तरह तड़प तड़प कर उसकी जान निकली थी, किस तरह वह चाकूवाला आ टपका हुआ था और अन्त में हगर तक पहुँचा फिर किस तरह उसके नोटों का पुलिंदा चुरा कर नौ-दो-ग्यारह हो गया।

स्वेन ध्यानपूर्वक-उसका प्रत्येक शब्द सुन रहा था। वह जानता था कि इस अभागिन औरत के लिये दुनिया के सभी द्वार अब बन्द हो गये थे। अतएव निकट भविष्य में आनेवाले उसके दुःखी जीवन की कल्पना कर, वह उदास हो रहा था। कह रहा था, 'यदि संसार में रहना चाहे तो इस अभागिन के लिए, अब कर्मों का कड़ुवा फल चखने के सिवा दूसरा मार्ग ही नहीं है।'

सिमन की राम कहानी समाप्त हो गई। फिर भी स्वेन की चुप्पी भंग न हुई। वह निश्चय नहीं कर पाता था, क्या करे, क्या न करे। और सिमन उसकी चुप्पी देखकर भयभीत हो रही थी 'वापस मुझे अलजेरद तो नहीं भेज देगा ? ओह ! कौन इस अभागिनी का वृथा भार उठाने को इजलत मजूर करेगा ?' वह निराश होकर पुनः मृत्यु का आह्वान करने लगी। पर, आखिरकार वह उठ खड़ा हुआ और अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण स्वर में बोला सिमन, यह मामला साधारण नहीं है। इस समय तो इसको सुलझाने ... रास्ता नहीं दिखलाई देता। पर, एक बात स्प...

की तरह सिसक-सिसक कर रोने लगी, 'ओह! मुझे बचाओ, मुझे शरण दो।'

स्टेन उसके कधों पर हाथ धरकर झुक गया। इतना अधिक झुक गया कि उसका कपोल सिमन के स्निग्ध ओठों से जा लगा। 'तुमने महान् संकट में एक बार मेरी रक्षा की थी—वह रुँधी आवाज से बोला, आज तुम्हारी कातर पुकार सुनकर उस उपकार का हजार गुना बदला देते भी मैं क्या हिचकिचाऊंगा?'

वह कुर्सी पर बैठकर हृदय का आवेग दबाता हुआ बोला—'आखिर इस दुःसमह परिस्थिति का कारण क्या था?'

'क्या कहूँ? ऐसा लंबा किस्सा है कि न आरंभ सूझता, न अन्त ही।' वह कुर्सी की बगल में खड़ी होकर बोली, विवाह हमें सुखप्रद न हुआ। न वे ही सुख पा सके, न मैं ही!'

'यही हाल रुथ का भी था'—वह अपने-आप गुनगुनाया, 'मुझसे विवाह करके वह जरा भी सुख नहीं पा सकी।'

'आप आलजेरद में वह मुनीम वाला किस्सा तो सुन ही चुके होंगे।'

'हाँ, किन्तु उसमें दुर्भाग्य की छाया न थी। केवल शोक! अनवरत शोक ही था।'

'तो सचमुच ही मेरे मरने से वहाँ किसी ने भी सन्देह न किया!'

'हाँ, वहाँ तो सबका यही विश्वास था कि तुम चेचक की छूत से मर गई।'

'ओह! तुम्हें क्या मालूम, चेचक से मरनेवाली कौन थी, '' वह कहते-कहते अटक गई।

'कौन?' स्टेन चौंक उठा, ... पर

... जा बैठी और आसों से आँसू ... देर

इक कमर में सन्नाटा छाया रहा, स्वेन चुपचाप कर चली इक दम म व्यस्त था और सिमन रूमाल भिगोती हुई मन ही मन अपना भाग्य कोस रही थी।

तब टहलता टहलता वह वापस मेज के समीप आ बैठा और पूरा हाल सुनने क लिए बोला—'आगे ?'

और वह कहने लगी, किस तरह उस अजनबी ने कमरे में प्रवेश किया था, जिस तरह तड़प तड़प कर उसकी जान निकली थी, किस तरह वह चाकूवाला आ खड़ा हुआ था और अन्त में हगर तक पहुँचा कर किस तरह उसके नोटों का पुलिंदा चुरा कर नौ-दो-ग्यारह हो गया।

स्वेन ध्यानपूर्वक उसका प्रत्येक शब्द सुन रहा था। वह जानता था कि इस अभागिन औरत के लिये दुनिया क सभी द्वार अब बन्द हो गये थे। अतएव निकट भविष्य में आनेवाले उसके दुःखी जीवन की कल्पना कर, वह उदास हो रहा था। कह रहा था, 'यदि संसार में रहना चाहे तो इस अभागिन के लिए अब दुःखों का कड़ुवा फल चखने के सिवा दूसरा मार्ग ही नहीं है।'

सिमन की राम कहानी समाप्त हो गई। फिर भी स्वेन की चुप्पी भंग न हुई। वह निश्चय नहीं कर पाता था, क्या करे, क्या न करे। और सिमन उसकी चुप्पी देखकर भयभीत हो रही थी, 'वापस मुझे अलजेरिया तो नहीं भेज देगा ? और ...
अभागिनी का बृथा भार उठाने को इलसन मजूर ...
निराश होकर पुन मृत्यु का आह्वान करने लगी। ...
वह उठ खड़ा हुआ और अत्यन्त सहानुभूतिपूर्ण ...
सिमन, यह मामला साधारण नहीं है। इस ...
भागने का कुछ भी रास्ता नहीं दिखलाई

वातावरण दिखलाई पड़ा। उसे आश्चर्य हुआ कि उसके दामाद जो पहले पत्नी को छोड़कर अन्य किसी की ओर आँख भी नहीं उठाते थे। अब इन छोकरियों की हँसी-मजाक और नखरे-बाजी में दिलचस्पी कैसे लेने लगे ? उसे पादरी क रंग-ढंग में बहुत फर्क नजर आया। पहले वे कितने गम्भीर रहते थे और अब कितने चञ्चल। पहले भूलकर भी अपने सम्बन्ध में एक शब्द न कहते। पर, अब स्वतः ही अपनी तारीफ के पुल बाँधने लगते—बतलाते स्कूल में कितने अच्छे नम्बर पाते थे, एग्जाम में कितनी अच्छी शैली से व्याख्यान देते थे और कैसे कैसे अद्भुत काम दिखलाते थे।

लड़कियाँ उनकी बातें सुनकर तालियाँ पीटतीं और हँसी मजाक करती थीं। पादरी उनसे प्रसन्न न थे, क्योंकि वे उन दोनों एक प्रकार की अवहेलना की दृष्टि से देखा करते थे। काम काज छोड़कर वे घण्टों तक उन युवतियों लड़ाया करते, मानो सास को दिखलाना चाहते उन्हें चाहती हैं। क्रिमन की माता को अपने अजीब परिवर्तन बहुत बुरा मालूम हुआ। वह शीघ्र ही वहाँ से निकल भागने का इरादा करने देखती, उधर उसे पुत्री का सलोना मुखड़ा याद होने लगा कि पादरी अपनी पत्नी को

दिन उसे रवाना होना था, अतएव और कुछ बातचीत करना तो करेंगे ही ? इस बार उतावलापन करने ही

वातावरण दिखलाई पड़ा। उसे आश्चर्य हुआ कि उसके दामाद जो पहले पत्नी को छोड़कर अन्य किसी की ओर आँख भी नहीं उठाते थे। अब इन छोकरियों की हसी-मजाक और नखरे-बाजी में दिलचस्पी कैसे लेने लगे? उसे पादरी के रग-ढग में बहुत फर्क नजर आया। पहले वे कितने गम्भीर रहते थे और अब कितने चञ्चल। पहले भूलकर भी अपने सम्बन्ध मे एक शब्द न कहते। पर, अब स्वत ही अपनी तारीफ के पुल बाँधने लगते—बतलाते स्कूल मे कितने अच्छे नम्बर पाते थे, एग्जम में कितनी अच्छी शैली से व्याख्यान देते थे और कैसे कैसे अद्भुत काम दिखलाते थे।

लड़कियाँ उसकी बातें सुनकर तालियाँ पीटतीं और हसी मजाक करती थीं। पादरी उनसे प्रसन्न न थे, क्योंकि वे उन दोनों को ... की अवहेलना की दृष्टि से देखा करते थे। फिर भी ... छोड़कर वे घण्टों तक उन युवतियों के साथ गप्पे ...ते, मानो सास को दिखलाना चाहते हों कि वे दोनों ...हनी हैं। रिचन की माता को अपने दामाद का यह ... परिवर्तन बहुत बुरा मालूम हुआ। वह अधीर हो उठी और ...ही वहाँ से निकल भागने का इरादा करने लगी। जिधर ...ी, उधर उसे पुत्री का सलोना मुखड़ा याद हो आता। उसे ... होने लगा कि पादरी अपनी पत्नी को इतने शीघ्र कैसे भूल गये।

...सरे दिन उसे रवाना होना था, अतएव रात को वह पादरी ... और कुछ बातचीत करना आवश्यक समझ कर बोली— ...ो तो करेंगे ही? इस बार जाँच-परखकर कीजिये ...ना उतावलापन करने से ही पहले धोखा हो

पादरी कुछ न बोले। वे उठे और द्वार पर पहुँचकर उसे अ कमरे में ले गये। वहाँ सिग्रन की सभी वस्तुएँ उन्होंने ऐसी स रखी थीं, मानो किसी नुमाइश में सजाई हों। दीवार पर उस भिन्न भिन्न आकार के चित्र टँगे हुए थे, आलमारी में उसकी चुनिन्दा पुस्तकें थीं और पलंग के पास मेज पर उसकी प्रार्थना पुस्तक पड़ी थी। पादरी ने उस पुस्तक को उठाकर कहा—'मैं प्रतिदिन सिर्फ यही पुस्तक पढ़ता हूँ, दूसरी छूता भी नहीं।' तब उन्होंने एक आलमारी खोली, जिसमें हाथी के दाँत का एक बक्स रखे थे। पादरी ने उसे चूम लिया और बोले—'वह इन्हें बहुत चाहती थी, अतएव इन वस्तुओं को न किसी को हाथ लगाने देता हूँ, न देखने देता हूँ।'

पश्चात मेज की दराज से महीन कागज में लिपटी हुई स्टॅगो क की वह तस्वीर निकाली, जिसे सिग्रन सबसे अधिक चाहती थी।

'इसको भी मैं सब लोगों को नहीं देखने देता।'—वे बोले और मेज का एक रूमाल उठाकर कहने लगे—'यह कपड़ा मैं हमेशा सामने रखता हूँ, चूँकि सिग्रन ने अपने हाथों से इसे बनाया था। जब धूप आती है, तो इसे दूसरे कपड़े से ढक देता हूँ, ताकि इसके फूलों का रंग न उड़े।'

इस तरह कई वस्तुएँ दिखाकर अन्त में उन्होंने दो अँगूठियाँ निकालीं, जो एक चमड़े के थैले में सावधानी के साथ रखी हुई थीं। 'इन्हें मैं हमेशा अपनी जेब में रखता हूँ,' वे बोले 'और रात को भी सिरहाने रखकर सोता हूँ।'

बुढ़िया सोफा पर बैठ गई और पादरी को समीप आने का इशारा किया—'आओ बैठो।' उसने माता की तरह उससे पूछा, 'आखिर तुम्हारे दिल का दर्द क्या है

पादरी फूट फूटकर रोने लगे। 'ओह! जाने से वह चली गई, मेरा जीवन अन्धकार-पूर्ण हो गया।'—वे सिसक सिसक कर कहने लगे, 'वह चली गयी, पर मुझे विश्वास नहीं होता कि वह मर चुकी है। लोग कहते, हैं, वह चेचक से मर गयी। पर, मुझे विश्वास नहीं होता। मुझे तो यही लगता है कि वह घर छोड़कर भाग गई है, क्योंकि मैं उसे सुखी नहीं बना सका। ओह! वह मुझसे कैसी भयभीत हो गई थी। मैं उसे ज़रा भी सुख न दे सका। इसका केवल एक ही कारण था कि मैं अपने स्वार्थवश उसे आजादी नहीं देता था। मैंने उसे दुनिया से छिपाकर एक तरह के कारागार में कैद कर रखा था। वही याद आज मेरे कलेजे को चीर डालती है। क्या ही अच्छा होता, यदि अपना अस्तित्व मिटाकर भी मैं उसे कुछ दिनों के लिये सुखी बना सकता।'

सिमन की माता को पादरी के शब्दों से ताज्जुब न हुआ, क्योंकि वह जानती थी कि अपने प्यारे की कब्र के सामने खड़ा होकर कोई भी मनुष्य पश्चात्ताप और शोक के आँसू बहाए बिना नहीं रह सकता।

कुछ सप्ताह बाद पादरी एक दिन दोपहर के वक्त अपनी बैठक में लेटे हुए थे, इसी समय लोना ने हाथ में एक पत्र लिए हुए कमरे में प्रवेश किया। आज वह ऐसी प्रसन्न मालूम होती थी, मानो अलाराम ही आई स्वर्गीय सम्पत्ति पाकर निहाल हो गई हो। उसकी आँखें चमक रही थीं, कपड़े ढंगदार थे और बाल सँवारे हुए थे। पादरी उसकी प्रसन्नता और शांति देख कर चौंक पड़े, क्योंकि जिस दिन छिन गई, तब से वह कभी इतनी खुश नजर न आई थी। पिछले कुछ दिनों से तो वह ऐसी बेचैन और घबड़ायी सी रहा करती थी कि दिन भर अपने आप बड़-बड़ाया करती और दिवा स्वप्नों का अद्भुत हाल सुनाती हुई कहा करती कि किस तरह दुनिया का प्रलय होगा। उसके वस्त्र अस्त व्यस्त रहते, बाल उलझे हुए और आँखें बेचैनी के साथ इधर उधर दौड़ा करतीं। वह लोगों से—विशेष कर पादरी से—मुँह चुराया करती थी पादरी की मेहमान लड़कियों से तो ऐसी चिढ़ा करती भी

पादरी फूट फूटकर रोने लगे। 'ओह! जब से वह चली गई, मेरा जीवन अन्धकार-पूर्ण हो गया।'—वे सिसक सिसक कर कहने लगे, 'वह चली गयी, पर मुझे विश्वास नहीं होता कि वह मर चुकी है। लोग कहते हैं, वह चेचक से मर गयी। पर, मुझे विश्वास नहीं होता। मुझे तो यही लगता है कि वह घर छोड़कर भाग गई है, क्योंकि मैं उसे सुखी नहीं बना सका। ओह! वह मुझसे कैसी भयभीत हो गई थी। मैं उसे जरा भी सुख न दे सका। इसका केवल एक ही कारण था कि मैं अपने स्वार्थवश उसे आजादी नहीं देता था। मैंने उसे दुनिया से छिपाकर एक तरह के कारागार में कैद कर रखा था। यही याद आज मेरे कलेजे को चीरे डालती है। क्या ही अच्छा होता, यदि अपना अस्तित्व मिटाकर भी मैं उसे कुछ दिनों के लिये सुखी बना सकता।'

सिमन की माता को पादरी के शब्दों से ताज्जुब न हुआ, क्योंकि वह जानती थी कि अपने प्यारे की कब्र के सामने खड़ा होकर कोई भी मनुष्य पश्चात्ताप और शोक के आँसू बहाए बिना नहीं रह सकता!

कुछ सप्ताह बाद पादरी एक दिन दोपहर के वक्त अपनी बैठक में लेटे हुए थे, इसी समय लोला ने हाथ में एक पत्र लिए हुए कमरे में प्रवेश किया। आज वह ऐसी प्रसन्न मालूम होती थी, मानो अनायास ही कोई स्वर्गीय सम्पत्ति पाकर निहाल हो गई हो। उसकी आँखें चमक रही थीं, कपड़े दगदार थे और बाल सँवारे हुए। पादरी उसकी प्रसन्नता और शांति देख कर चौंक पड़े, क्योंकि [illegible] निकल गई, तब से वह कभी इतनी खुश नजर न आई थी। पिछले कुछ दिनों से तो वह ऐसी बेचैन और घबड़ायी सी रहा करती थी कि दिन भर अपने आप बड़-बड़ाया करती और दिवा-स्वप्नों का अद्भुत हाल सुनाती हुई कहा करती कि किस तरह [illegible] दुनिया का प्रलय होगा। उसके बच्चे [illegible] व्यस्त रहते, बाल बिखरे हुए और आँखें बेचैनी के साथ इधर उधर दौड़ा करतीं। वह लोगों [illegible] पादरी से—विशेष कर पादरी से—मुंह चुराया करती थी [illegible] मेहमान लड़कियों से तो ऐसी चिढ़ा करती [illegible]

मिलती, उन्हें दो चार खरी-खोटी सुनाये बिना नहीं रहती थी। लड़कियाँ लोता को वापस स्टॅक्ॉटलैंड भेज देने के लिए पादरी से बार-बार अनुरोध किया करतीं थीं पर पादरी जानते थे कि उसकी बेचैनी का कारण सिमन का रञ्ज थो, इसलिए लाख शिकायत आने पर भी उसको घर छोड़ने के लिए नहीं कहते थे।

किन्तु आज उसके बदले हुए रंग ढंग को देखकर वे सोचे बिना न रहे कि लोता सिमन को भूल गई है। 'आह! मेरे सिवा अब कोई भी उसकी याद नहीं करता।'—उन्होंने मन-ही-मन कहा।

'कृपया ध्यान देकर सुनें!' लोता आते ही बोली, 'मुझे बहुत कुछ कहना है।' और तब गंभीर स्वर में एक प्राचीन किस्सा आरंभ कर उसने पादरी को चकित कर दिया।

'एक छोटा-सा गाँव था' वह उपदेशक की तरह कहने लगी, 'जिसके पड़ोस में थी, एक छोटी सी पहाड़ी। गाँव में एक किसान परिवार रहता था और पहाड़ी पर कुछ खानाबदोश बसते थे। एक दिन किसान की स्त्री, खानाबदोश की स्त्री को प्रसव के समय सहायता देने पहाड़ी पर गई। किन्तु जब बच्चे को नहलाया, बुढ़िया की आँखों में सहसा पानी का एक छींटा जा गिरा, जिससे ऐसी दिव्य-दृष्टि प्राप्त हो गई कि घर पर बैठे वह खानाबदोशों की चोरियाँ पकड़ने लगी। उस दिन से जब कभी खानाबदोश आते, बुढ़िया फौरन उन्हें जा पकड़ती थी। एक दिन हाट से लौटते वक्त राह में एक खानाबदोश से उसकी भेंट हो गई 'कहो जी यह कपड़ा कहाँ खरीदा?' उसने खानाबदोश के गट्ठरों देख कर पूछा—'अजी बहुत सस्ता हाथ लगा' आदमी ..., 'दो किसान आपस में लड़ रहे थे, मैं पीछे से ले भागा!' ... मुस्कराई और बहुत देर तक उसके साथ गप्पें लगाती ...। तब खानाबदोश बोला, 'बुढ़िया! तुम हम लोगों को ह

जगह कैसे देख लेती हो ? और भोली बुढ़िया ने आखों मे ह
पढ़ने का पूरा किस्सा कह सुनाया । बस, ज्योंही बुढ़िया ने अ
रहस्य खोला, खानाबदोश ने लपक कर उसकी आखें फोड़ द
और हमेशा के लिये उसे दिव्य दृष्टि से वचित कर दिया '
यही हाल मेरा भी हुआ महाशय । जब आपसे पहली बार मुल
क़ात हुई थी । आपने निर्दयता के साथ मेरे दिव्य चक्षु फो
कर हमेशा के लिए मुझे अधी बना दी । तब से मेरा जीवन इतन
अधकारपूर्ण हो गया कि मुझे न कुछ दिखाई पड़ता है,
सुनाई ।'

पादरी चुपचाप सुन रहे थे । 'कहे जाओ !' उन्होंने शाति के
साथ कहा, 'मैं जानता हूँ, तुम केवल किस्सा सुनाने नहीं
आई हो ।'

'हाँ, मैं कोई किस्सा सुनानेवाली नहीं हूँ' लाता साँस लेकर
कहने लगी, 'मैं एक जरूरी बात कहने आई हूँ । पर वह बात
कहूँ, इसके पहले मुझे एक किस्सा और कहना है । आपने सुना
होगा, यहाँ नजदीक ही हगर नाम की एक ऊजड़ बस्ती है । जहा
की विचित्र कथा आप सुन ही चुके होंगे, किस तरह वहा एक
पादरी का खून हुआ था । हा, तो जब कभी मुझे हगर का ध्यान
आता है, मेरे मन में विचार उठता है कि उस आदमी को—जो
वहा के शाप ग्रस्त निवासियों का वशज है और जानता है कि वहाँ
के लोग अधिकतर अकाल-मृत्यु पाते हैं—एक फूल जैसी कोमल,
निष्पाप और भोली लड़की से विवाह करते समय क्या तनिक भी
ख्याल न आया होगा कि वह एक भीषण अपराध करने जा
रहा है ।'

'लोता !' पादरी उसे चेतावनी देते हुए बोल उठे । पर
शान्त थी ।

कैसे हो सकती थीं, अगर उन पर किसी प्रभाव न होता? अगर तुम्हारी इच्छा अगाध शक्ति से बस पी का, जिसे तुम खींच लाने का दृढ़ संकल्प न कर लिए घटनायें कैसे हो सकती थी?'

'अच्छी बात है!' स्वेन ने आवेश कहा, 'यदि तुम्हारी यही इच्छा है कि लो बातों पर विश्वास किया जाय, तो करो, किन्तु यदि यह सच है कि रूथ के अ यहाँ तक खिंची चली आयी हो, तो मैं स दण्ड देने के लिए ही यह सिताप कराया थी कि तुमसे मिलकर मेरे प्रेम की ज्वाला उठेगी।'

'हाँ, वह जानती थी—लिमन ऐसे स्व किसी पारलौकिक व्यक्ति से बातचीत कर कि प्यार करने पर भी तुम प्रेम का अर

शिक्षा से अब मेरी रग रग मे कितनी गहरी पैठ गई हैं। अब मैं अलमेरद वापस जाऊगी तो एडवर्ड मुझे कितना परिवर्तित पायेंगे। व अब पहले से भी अधिक सुखी होंगे और इसके लिए तुम्हें किन शब्दों में धन्यवाद देंगे ?'

स्वेन की आँखों में आँसू उमड़ आये। वह सिग्रन का हाथ पकड़ कर झुक गया और सिसककर रोने लगा।

'और कल जब एडवर्ड आवेंगे' वह कहती रही, 'मैं उन्हें पूरा हाल सुना दूँगी, जिससे वे तुम्हें हार्दिक धन्यवाद दे सकें।'

'उन्हें ?'—स्वेन चौककर बोल पड़ा।

'सुनो स्वेन !' वह दृढ़तापूर्वक बोली, 'अब दुराव छिपाव का परदा बीच में रखना ठीक न होगा। मैं उन्हें बता दूँगी कि तुम मुझे चाहते हो। बता दूँगी, किस तरह मुझे प्रेम का सच्चा रहस्य ज्ञात हुआ। मैं उन्हें पूरा हाल कह सुनाऊगी, ताकि वे जान सकें कि प्रेम न किसी का आधिपत्य स्वीकार करता है, न प्रियतम के अतिरिक्त किसी की परवाह करता है। प्रेम का कानून निराला ही है। प्रेम बाद और हुक्म का गुलाम नहीं है। वह चाहे जब आता है, चाहे जब चला जाता है। और ये बातें उन्हें यहीं उनके बाप-दादों के प्राचीन निवास स्थान हगर मे बुलाकर बताऊगी, क्योंकि प्रकृति के इस सुन्दर वातावरण में प्रेम का रहस्य सुनकर वे जान सकेंगे कि वह ता व भी प्रकृति की तरह महान और सुन्दर बन सकते हैं।'

झाड़ी में छिपा हुआ व्यक्ति चोर की तरह लुककर बैठने में लज्जा का अनुभव करने लगा। सम्भव था कि क्षण भर बाद ही वह झाड़ी से निकलकर सिग्रन और स्वेन के सम्मुख आ खड़ा होता। यकायक उसने सम्मुख एक अजीब वस्तु देखकर वह

क्या नहीं दिख गया ! देखा, पत्थरों के ढेर हैं, जहाँ पहले कुछ भी नहीं था, फाटक का एक पुराना खंभा है, जो इतना ऊँचा और खड़ा हुआ है कि पत्थरों का नाश न होगा, [illegible] भर में, इच्छा [illegible] शायी हो जाना ! पादरी चौंक पड़े, क्योंकि, [illegible] उसको [illegible] का दूसरा खंभा था, न फाटक ही दिखाई पड़ता था। सोचा [illegible] भ्रम है और आँखें मलने लगे। फिर भी वह खंभा [illegible] मिटा, तो वे आश्चर्य करने लगे। इसी बीच ग्रेस [illegible] लगा कि बातचीत का प्रवाह और दूसरी ही [illegible] लगा है। मिरान कह रही थी—'हाँ सचमुच ही [illegible] पागल हो गए थे कि घटना की कुछ भी [illegible] ?'

'[illegible] भी नहीं है—ग्रेस अपने-आपने बोला, [illegible] कि मैं, उस काम में शामिल था, क्योंकि [illegible] छोटन-कटकारन [illegible] वे [illegible] किस तरह मुझे उन्होंने अन्दर लिया [illegible] बिलकुल अटक गयी माना आगे फिर वह [illegible]।'

'नहीं, नहीं, यह तुम्हारे मन की केवल भ्रान्ति है। वह [illegible] 'अतीत' है, तुमने स्वप्न में भी ऐसा काम न किया होगा।'

'फिजूल उल्टी बातें दोहरा रहे हो मिरान !' [illegible] कि मैं उसमें शामिल था [illegible]

'[illegible] !' यह [illegible] के साथ बोली, 'जो कोई भी है, वह ऐसी बात कदापि नहीं मान सकता। मैं, तो [illegible] माना करता हूँ कि [illegible] ने तुम्हें यह [illegible] बात बिलकुल झूठी है।'

का वहीं ठिठक गया। देखा, पत्थरों के ढेर हैं, जहाँ पहले कुछ भी नहीं था, फाटक का एक पुराना खम्भा है, जो इतना जर्जर और खड़ा हुआ है कि पत्थरों का सहारा न होता, क्षण भर में टूटकर धराशायी हो जाता। पादरी चौंक पड़े, क्योंकि वहाँ न उसकी जोड़ का दूसरा खम्भा था, न फाटक ही दिखाई पड़ता था। सोचा, मन का भ्रम है और आँख मलने लगे। फिर भी वह खम्भा खम्भा न मिटा, तो वे ताज्जुब करने लगे। इसी बीच सड़क की ओर देखा तो पता लगा कि यातायात का प्रवाह अब दूसरी ही दिशा से बहने लगा है। मिसेज कह रही थी—'तो सचमुच ही क्या उस समय तुम ऐसे पागल हो गए थे कि घटना की कुछ भी स्मृति न रह गई?'

'हाँ, स्मृति तो जरा भी नहीं है—रेवरेन्ड अटकते अटकते बोला, स्मरण सदा नहीं कि मैं उस काम में शामिल था, क्योंकि जरा पर जब हृदय डाँटने फटकारने लगा, तो वे खिलखिला कर कहने लगे, किस तरह मुझे स्मरण आए बिना सामान बिलकुल अटक गयी माया आगे के लिए यह सर्वथा था।

'नहीं, नहीं, यह तुम्हारे मन की केवल भ्रान्ति है' वह बोली। असम्भव है, तुमने स्वप्न में भी ऐसा काम न किया होगा!'

'फजूल कल्पना दौड़ा रहे हो मिसेज! इसमें सन्देह नहीं कि मैं उसमें शामिल था'

'कभी नहीं,' वह जोश के साथ बोली। 'जो कोई वह ऐसी बात कदापि नहीं मान सकता। मैं तो साफ कहता हूँ कि लोगों ने तुम्हें बात बिलकुल झूठी है!'

उसके शब्दों का विरोध करना दुस्तर था।

स्वेन ने कविता आरम्भ की। कवि अपनी प्रेमिका से अनुरोध कर रहा है कि मुझे स्वर्ग में भी मत भूलना—'यह मत समझो कि मैं तुम्हें नहीं चूम सकूंगा, क्योंकि तुम मर चुकी हो, या तुम्हारे गले में बांह नहीं डाल सकूंगा, क्योंकि तुम कब्र में सो चुकी हो—'

वह सिमन की ओर पीठ किये बैठा था। उसका मस्तक झुका हुआ था, और आंखें शून्य दृष्टि से न जाने किस वस्तु की ओर ताक रही थीं। सहसा उसके जी का गुब्बार, जो सायंकाल की इस सुहावनी वेला में अपनी प्रेमिका से अत्यंत समीप रहकर भी नहीं उमड़ पाया था, कवि के फड़कते शब्दों का धक्का खाकर बह चला 'देखो'—वह कविता का दूसरा पद्य सुनाने लगा, 'सूर्य की सुनहली किरणें हिमाच्छादित पर्वत शिखर एवं बगीचे में खिले हुए गुलाब को कैसे समान भाव से चूमती हैं।'

कुछ क्षण तक सिमन एकाग्रता के साथ सुनती रही। स्वेन की तरह वह भी मुंह फेरकर बैठ गयी मानो अपने चेहरे का भाव छिपा रही हो। पादरी को अब झाड़ी की ओट से उसका चेहरा साफ दिखलाई पड़ रहा था। उन्होंने देखा कि स्वेन की तरह वह भी अपने हृदय के भाव के आवेश में बह चली है। उसकी पलकें गिरी हुई थीं, बांहें कसी हुई थीं और ओंठ किसी अव्यक्त वेदना से मंद मंद फड़क रहे थे। पादरी को उसके शब्द तो नहीं सुनायी पड़े, पर उसके ओंठों के स्पंदन से उन्होंने अनुमान लगा लिया, मानो वह कह रही है—'आह! उन्हें मैं ऐसे शब्द नहीं कह सकती, कभी नहीं।'

'जब प्रबल झञ्झावात समुद्र के गंभीर वक्षस्थल को विडोलित कर रहा हो'—स्वेन उसी तरह कांपती आवाज से कह रहा था, 'और चन्द्रमा मेघ-मालाओं का घूंघट काढ़कर अर्द्धरात्रि के समय

विलुप्त हो गया हो, उस समय प्रेम का आवरण चीरकर हे सुन्दरी! अपने हाथों से वक्ष स्थल पर मुझे चिपका लेना और शिथिल न होना, जब तक मेरी आत्मा, शरीर और संसार के बंधन से मुक्त न हो जाय।'

झाड़ी में बैठे हुए व्यक्ति के शरीर में एकाएक भय मिश्रित भाव की एक कपकपी फैल गई। उसने देखा कि सियन एक उत्कंठा भरी दृष्टि से इस तरह बाहें फैलाकर ताक रही है मानो चिरन्तर काल से किसी वस्तु के लिए तड़प रही हो। उसके ओंठ पुनः एक वेदना भरे स्पंदन के साथ गुनगुना रहे थे—'नहीं, कभी नहीं।'

पत्रों की ओर से निगाह हटाकर पादरी खम्भे की ओर देखने लगे। वह उसी तरह निश्चल भाव से समाधि लगाये खड़ा था मानो मूक-भाषा में पादरी को संबोधित कर रहा हो—'तुम उन अपने बुजुर्गों की सन्तान हो, जो तिनके-जैसा अपमान भी नहीं सह सकते थे, क्योंकि वे जानते थे, बदला कैसे लिया जाता है।'

कविता समाप्त हो चुकने पर, बगीचे में गंभीर सन्नाटा छा गया। वे दोनों उठ खड़े हुए। सिग्रन मकान में घुस गई और स्वेन झाड़ी के समीप होता हुआ वृक्षों के झुरमुट में छिपे हुए एक तालाब के किनारे जा खड़ा हुआ।

वह एकाग्र होकर तालाब के गंभीर जल की ओर ताक रहा था। इसी समय पादरी के मनमें एक भयंकर विचार उठ खड़ा हुआ—'यह व्यक्ति सिग्रन को प्यार करता है। इसको जीवित रहने देना खतरनाक है।' और इसके ही साथ उन्हें सूझ पड़ा—'केवल पीछे से पानी में धक्का देने की आवश्यकता है। वह तनिक भी विरोध न करेगा। वह तो स्वतः मृत्यु का आवाहन कर रहा है।'

वह एक खतरे की घड़ी थी। पादरी विरोधी भावनाओं से

युद्ध कर रहे थे। तब अनायास ही एक विचार, जो बहुत दिनों से उनके अंतस्तल में छिपा था—उठ खड़ा हुआ और खतरे की घड़ी टल गई। 'तुमने एक दिन केवल इसी अपराध पर उसे पर्चे से धक्के देकर निकाल दिया था कि वह मृतक का अपमान कर चुका था। पर आज तुम खुद ही जिस भीषण काम के लिए बढ़ रहे हो, वह क्या है?' पादरी पशोपेश में पड़ गये। 'हे भगवन्!' वे सोचने लगे, 'मैं क्या करने चला था! उसने तो केवल मृतक की हत्या की थी, पर मैं जीवित को ही समाप्त करने जा रहा था। आह, सैकड़ों जन्म में भी ऐसे महापाप का कभी प्रायश्चित हो सकता है?' और अचानक ही उन्हें एक महान् सत्य ज्ञात हो गया—'क्या जीवन, मृत्यु से हजार गुना पवित्र, महान् और अमूल्य नहीं है?'

जब उन्होंने पुनः तालाब की ओर दृष्टि डाली तो देखा कि स्वेन गायब है। सिर्फ स्वेन ही नहीं, एक और वस्तु भी यकायक अदृश्य हो गई थी—वह पुराना खंभा भी न था।

पादरी को ऐसी भ्रांति हो गई मानो कुभावनाओं से युद्ध करते समय उन्होंने ही खंभे को उखाड़ कर जमीन पर पटक दिया था, जो ऐसा चकनाचूर हो गया था कि, बुरादे और छिलके की ढेरी के सिवा कुछ भी चिन्ह अवशिष्ट न रह गया था।"

तब धीरे धीरे उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा मानो वह खंभा बाहर नहीं था, प्रत्युत उनके ही अंतः   था।

हो गया है, क्योंकि उनके गात में एक विचित्र हलकापन भासित होने लगा था। उनके हृदय में प्रेम और त्याग की पुनीत भावनाओं की एक मधुर कल्याणमई धारा प्रवाहित होने लगी थी। उन्हें आज पादरी होने से एक अभूतपूर्व आनन्द मिल रहा था, क्योंकि धर्माचार्य के रूप में वे न सिर्फ असंख्य आत्माओं के पथ-प्रदर्शक, संरक्षक और नेता थे, प्रत्युत मानव जाति के विशाल परिवार के कुलपति, जगत के विस्तृत उद्यान के माली और भूले भटके मनुष्यों के गड़रिये थे। जब बसंत की उस सुहावनी संध्या के समय बीहड़ पहाड़ी प्रदेश में होकर वे वापस घर की ओर पलटे, उन्हें उस वस्तु के लिए आश्चर्य होने लगा, जिसने उनको हत्या के महा पाप से बचा लिया था। क्योंकि वह वस्तु न प्रेम की प्रवृत्ति थी, न त्याग की, प्रत्युत जीवन के पवित्रता की वह भावना थी, जो स्वप्न के कुमारत्व रूपी खेत में उगकर आज एक विशाल वृक्ष की तरह दृढ़ता के साथ खड़ी थी।

अगले दिन प्रातःकाल के समय बगीचे में आने पर सिमन ने देखा कि कविता की पुस्तक रात को वहीं चबूतरे के नीचे छूट गई थी। उसने किताब को जमीन से उठा लिया, किन्तु पन्नों के बीच एक छोटी-सी थैली देखकर वह चौंक पड़ी। थैली उसी पृष्ठ पर रखी गई थी, जहाँ उस कारागार मुक्त सैनिक की कहानी लिखी थी। सिमन के आश्चर्य का पारावार न रहा, जब उसने देखा कि थैली में स्वयं उसकी दो अंगूठियाँ और कुछ अशर्फियाँ रखी हैं। क्षण भर में वह सारा मामला ताड़ गई और उसकी आँखों से अविरल अश्रु धार बह चली।

जब एडवर्ड आया, वह फूट फूटकर रो रही थी। बहुत ढाढ़स बधाने पर बोली—कल रात को एडवर्ड यहीं थे। उन्होंने सब

बातें सुन लीं। जान लिया कि मैं तुम्हें चाहती हूँ। अतएव ये चीजें, छोड़ गये हैं।'

'चाहती हो ?' स्वेन आनन्द के मारे चिल्ला उठा, 'क्या सच-मुच ही तुम मुझे चाहती हो लिग्नन ?'

'पर वे नाराज नहीं हुए' वह कहती रही, 'अब मुझे लिवाने को वे नहीं आवेंगे स्वेन ! वे इस अगूठी द्वारा कह गये हैं कि मैं अब यहीं रहकर तुम्हारी हो सकती हूँ।'

दोपहर बाद पादरी का एक सन्देश लेकर लीना ने हगर में प्रवेश किया।

उसे बहुत सी बातें कहनी थीं, जिनमें एक दिवा स्वप्न का भी हाल था। बोली—'कल रात को मुझे हगर की भव्य इमारत फिर नजर आई। बुढ़िया उसी तरह खिड़की में बैठी ताक रही थी, और उसी तरह वह पुराना खंभा भी अटल भाव से खड़ा था। तब अचानक ही वह बुढ़िया स्वर्ग की ओर हाथ उठाकर उठ खड़ी हुई और उसका सिकुड़ा हुआ चेहरा हर्ष के मारे जगमगा उठा। 'हगर के प्राचीन निवासी शाप से मुक्त हो गये'—एक गंभीर आवाज सुनाई दी और दूसरे ही क्षण वह बुढ़िया, जो सदियों से वहाँ बैठी रही थी, जमीन पर गिरकर विलुप्त हो गई। साथ ही वह [illegible] हो गया और मकानात धड़ाधड़ गिरने लगे। मैं [illegible] कि यह दिवा-स्वप्न मुझे अब कभी नजर न आएगा, [illegible] हगर-निवासी शाप से मुक्त हो गये।

विचारों की विलक्षण गति इससे बढ़कर और आश्चर्यजनक नहीं होती ? एक ...... सोचता है, मेरा विचार मौलिक है और वो ...... अपनी खोज को अपूर्व समझकर फूलने लगता है, पर किसी अदृष्ट शक्ति द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी पर बोये गये बीज की तरह जब हजारों लोगों के मस्तिष्क में सहसा वे ही विचार उठ खड़े होते हैं, तो सृष्टि-कर्त्ता की अद्भुत लीला देखकर वे लज्जित हो जाते हैं। यही हाल पादरी के मन में उपजे हुए 'जीवन की पवित्रता' सम्बन्धी नवीन विचार का भी हुआ। अभी वे अपनी नई खोज का प्रकाशन भी नहीं कर पाये थे कि सहसा हजारों लोगों के मन में वही अद्भुत विचार उठ खड़ा हुआ।

जून में स्वीडन के पश्चिमी समुद्र तट के लोग वायु परिवर्तन के लिए आनेवाले यात्रियों का स्वागत करने के लिए प्रतिवर्ष हजारों तरह की तैयारियाँ करने में जुट रहते हैं। किश्तियाँ रंगी जाती हैं, बगीचे दुरुस्त किये जाते हैं, मकान पोते जाते हैं, और

हम्मामों में गरम पानी के हौज तैयार रखे जाते हैं। एक सप्ताह भी नहीं बीत पाता कि विश्रान्ति और मनोरञ्जन के इच्छुक हजारों स्त्री पुरुष, रोगी-निरोगी, बूढ़े और बालक, रेल गाड़ियों में लदकर सागर की हिलारें लेने के लिए आ धमकते हैं और कुछ दिनों के लिये नेपफोर्ड और आस-पास के टापुओं पर ऐसा खासा मेला मच जाता है, मानो सारा स्वीडन ही खाली होकर आ उमड़ा हो।

इस वर्ष भी हमेशा की तरह धूम-धाम से तैयारी की गई। मकान सजाये गये, नावें रंगी गईं, सड़कें सुधारी गईं और हम्माम भरे गये। पर यह तैयारी केवल उन्हीं यात्रियों के लिए थी, जो रेल में लदकर देश के भीतरी प्रान्तों से आये थे। अतएव मुसाफिरों का एक झुंड जब जहाज में लदकर समुद्र की ओर से आया, तो नेपफोर्ड बन्दरगाह पर किसी ने भी उनका स्वागत सम्मान न किया। पता नहीं, इसका क्या कारण था, पर एक बात स्पष्ट थी कि उस जहाज के सभी यात्री उदास और चिड़चिड़े दिखलाई पड़ते थे।

एक सप्ताह बाद हगर का एक व्यक्ति इन्हीं यात्रियों से मिलने के उद्देश्य से एल्लन के समीपस्थ रेल स्टेशन पर उतरा। क्योंकि उन लोगों में उसका छोटा भाई आगजाम भी शरीक था, जो दो-तीन वर्षों तक समुद्र की हवा खाकर पागल और बीमार होकर वापस लौटा था। जब स्वेन नेपफार्ड में भाई के मकान पर पहुँचा, आगजाम दीवाने की तरह कमरे में इधर-उधर दौड़ रहा था। उसे कोई खास बीमारी तो न थी, पर उसकी आँखें सूजकर ऐसी लाल हो गई थीं मानो महीनों से उस नींद [illegible] नहीं, उस बेचैनी का कार[illegible] है हा। एक दि[illegible]

अजीब भय घुस गया था, जिससे वह न लेट पाता था, न आँखें ही मूँद सकता था, प्रत्युत हर घड़ी इधर-उधर दौड़ा करता था, ताकि आँखें झपने न पावें।

'अगमाल ! यह क्या कर रहे हो ?' स्वेन ने घबराकर पूछा।

पर अगमाल ने सुना ही नहीं। वह उसी तरह कमरे में चक्कर काटता हुआ बाहें उठाकर अपनी भरी आवाज में चिल्ला रहा था - 'अरे हत ! मारा इन समुद्र पक्षियों को !'

कोने में उसकी नव विवाहिता पत्नी सिर लटकाये बैठी थी। स्वेन को देखकर वह बोल उठी, 'ओह ! किसी तरकीब से अगर इन्हें नींद आ जाय, तो पल भर में यह दवाई भी मिट जाय। पर, दुर्भाग्य से न जाने क्या डर समा गया है कि न तो लेटते हैं, न आँखें मूंदते हैं। दिन रात इसी तरह हवा में बांह फटकारते हुए दौड़ते रहते हैं—'

स्वेन ने उसका ध्यान खींचने का दूसरा रास्ता न देख किसी पुरानी स्मृति की याद दिलाते हुए कहा—'आल ! याद है, किस तरह मैंने पथरों के साथ तुम एक दिन मुझे मेरा साँप दिखाने मैमन आये थे ?'

अगमाल फौरन चलते चलते रुक गया। 'कौन, स्वेन ?' वह आँखें फाड़कर बोला, 'अरे आगे, अब मैं पागल होने के पहले तुम से क्षमा माँग सकूंगा।'

उसकी अलसानी आँखों से टपाटप कई बूंद आँसू चू पड़े। उसने कहना शुरू किया, किस तरह उत्तरी समुद्र के भयंकर युद्ध के बाद एक दिन उसका जहाज ऐसी जगह आ पहुँचा था, जहाँ युद्ध में मारे गए सिपाहियों की हजारों लाशें समुद्र के वक्ष-स्थल पर तैर रही थीं। 'वे चित्त नहीं थीं वह कहने लगा, 'प्र

गले में बँधी हुई रबर की थैलियों के कारण बिलकुल खड़ी तैर रही थीं, जिनसे उनके सिर पानी से ऊपर, साफ साफ दिखाई देते थे। ऐसी हजारों लाशें थीं, जिनसे सारा समुद्र भरा हुआ दिखाई देता था। ओह, स्वेन! जरा कल्पना तो करो, वह दृश्य कितना भयावना रहा होगा। पर सबसे भयंकर बात तो थी कि पानी पर तैरते हुए उन नर-मुण्डों की आँखें, सिर पर मंडराती हुई समुद्री चीलों ने नोंच खायी थीं। ओह! वह बीभत्स दृश्य अब भी आँखों के सामने नाचने लगता है। इसीलिए न सोता हूँ, न आँखें मूँदता हूँ, क्योंकि मुझे भय है, पलकें ढापते ही वे डरावनी नेत्र विहीन लाशें फिर न दिखने लगें।' वह भयभीत होकर बोलते बोलते रुक गया, पर क्षण भर बाद फिर कहने लगा, 'तब एक अजीब घटना हुई। जहाज के नायब-कप्तान, जो बहुत देर से उस भयंकर दृश्य को देख रहे थे, आँखें मूँदकर पानी में कूद पड़े। वह बीभत्स दृश्य उनके लिए असह्य हो उठा। वे समझ गये कि एक बार वह नजारा देख लेने पर जीवन भर शांति मिलना असम्भव है। ओह! आज पछता रहा हूँ कि उस समय मैंने भी अपने कप्तान का अनुकरण क्यों न कर लिया।'

'नहीं, नहीं ऐसा न कहो।' स्वेन बोला, 'उस बात को याद ही मत करो।'

पर अगल्सोल चुप न हुआ—'तब हमें अनोखी बातें सूझीं। हमें क्रोध आ रहा था, इसलिए बन्दूकें उठाकर लगे उन चीलों को दनादन मारने। कितनी भारी मूर्खता थी। भला इसमें उन निर्दोष पक्षियों का क्या अपराध? वे तो केवल मरी हुई लाशें नोच रहे थे। दोष उन राक्षसों की नृशंसता के समक्ष था ही जिन्होंने चुटकी बजाते समुद्र का वक्षस्थल हजारों

नौजवानों की लाशों से पाट दिया था? यही बात तुमसे कहना चाहता था स्वेन! कि जब मनुष्य के प्रति मनुष्य की नृशंसता का ...ार करता हूँ तो सिर लज्जा के मारे झुक जाता है। ओह! क्षमा करो भैया! एक दिन अपने आपको बड़ा मानता हुआ मैं तुम्हें ध्रुव की उस दुर्घटना के लिए घृणा की निगाह से देखा करता था, जबकि स्वयं सिवा जीवन का निरादर करने के दूसरा धन्धा ही नहीं करता था। मैंने आज तक न माता पिता की सेवा की, न किसी और को सहायता दी। तुमने तो उन चीज़ों की तरह एक मृतक का अपमान किया, पर मैंने सिवा जीवन का तिरस्कार करने के और क्या किया?'

वह भाई के चरणों में लड़खड़ाकर गिर पड़ा और क्षमा की भीख माँगता हुआ फूट फूटकर रोने लगा।

'सब अच्छा होगा जोल!' स्वेन ने भाई के बालों में अंगुली सुहराते हुए कहा, 'अब भी स्थिति सम्भल सकती है।'

'नहीं, अब वक्त चला गया है। वह नज़ारा सदा के लिये आँखों में स्थापित हो चुका है। मैं पागल हो जाऊँगा।

स्वेन ने अपने हाथों से भाई की आँखें मूद दीं। 'एनजोल! आओ, मेरा हाथ आँखों पर रहते तुम्हें वोह भी भयानक हाल न दिखेगी।'

'ओह, सच कहते हो स्वेन!' ...
जैसे परोपकारी के हाथों से चमत्का...

'आँखें मूद ...
अब हम दिस त...
सेवा कर सकते ...

अगजोल ने आँखें मूंद लीं और सारा हेलहल खड़ी तैर गोदी में मस्तक रखकर वह दखते ही-दखते गभीर फ़, दिखाई देते हो गया।

× × ×

यह दिन सचमुच ही निलक्षण और अद्भुत था। ऐसा प्रतीत होता था मानो नेपफार्ट के सभी मनुष्यों को सहसा उसी नवीन सत्य की अभिव्यक्ति हो गई थी, जो अगजोल के मस्तिष्क में उस दिन उठ खड़ा हुआ था।

जब अगजोल निद्रा में अचेत हो गया, स्वेन उठा, और बस्ती से होता हुआ टहलने के लिए समुद्र की ओर बढ़ा। किन्तु थोड़ी ही दूर गया होगा कि एक औरत ने सामने आकर उसका हाथ पकड़ लिया। स्वेन पहचान गया, वह नेद के मल्लाह फ़ेमपन की पत्नी थी। फ़ेमपन भी युद्ध में शरीक हुआ था और तीन वर्ष बाद अपनी दोनों टांगें और एक भुजा खोकर वापस घर लौटा था।

स्वेन औरत के साथ उसके मकान पर पहुँचा। 'ओह! कितने दिनों से मैं क्षमा माँगने के लिये आपकी प्रतीक्षा कर रही थी—यह बोली, 'क्योंकि अब मैं उन लोगों को जान गयी हूँ, जो ऐसे शैतानी हथियार बना रहे हैं, जिनसे कई निर्दोष प्राणी जन्म भर के लिए लूले लंगड़े हो जाते हैं, तो आपके प्रति किये हुए दुर्व्यवहार के लिए मुझे महान् पश्चात्ताप होता है। क्योंकि आपने तो केवल मृतक की हिंसा की थी, पर, वे दिन-दहाड़े हजारों जि- लोगों का जिबह करने के लिए छुरियाँ घिसा करते हैं।'

उससे बातचीत करने के बाद जब स्वेन आगे बढ़ा, -क औरत मिली, जिसे वह फौरन पहचान गया कि -की जूलिया है, जिसर आठ वर्ष पूरे उसकी वि-

को घृणा के साथ ठुकरा दिया था। 'क्षमा कीजिए!' वह समीप आकर बोली, 'उस समय मुझे मालूम न था कि मृत्यु से जीवन का निरादर कितना बदतर होता है। जब मैं देखती हूँ, कितने बच्चे इस भयंकर युद्ध से अनाथ हो गए हैं, कितनी स्त्रियाँ विधवा हो गई हैं, और दिन रात भूखों मरती हैं, तो आपके बारे में अपने पूर्व विचार के लिए मैं शर्म से गड़ जाती हूँ।' बस्ती के परले छोर पर उसे एक अपरिचित नवयुवक मिला, जो दौड़कर उसके पैरों में गिर पड़ा और आँखों में आँसू भरकर बोला, 'आप मुझे नहीं जानते होंगे, क्योंकि आप ग्राम छोड़कर गये, उस समय मैं केवल आठ बरस का लड़का था। पर मुझे आप से क्षमा माँगनी है, क्योंकि उस समय और लड़कों के साथ मैं भी आपको चिढ़ाया करता था, और जब कभी आप बाजार में निकलते मैं आपको गालियाँ सुनाता हुआ पीछे पीछे दौड़ता था। पर अब मैं जान गया हूँ कि आप बिलकुल निर्दोष थे। क्योंकि युद्ध में शामिल होकर जब मैंने अपनी आँखों से मनुष्यों को अपने भाइयों की हत्या करते देखा तो मुझे प्रतीत हुआ कि मृत्यु के प्रति अपराध करने की अपेक्षा जीव की हिंसा करना भारी पाप है।'

उस अपरिचित युवक से पैर छुड़ाकर स्वेन एक समीपवर्ती पहाड़ी पर चढ़ गया और समुद्र की अनन्त जलराशि पर आँखें दौड़ाता हुआ मन ही मन बोला, 'यदि मेरे जीवन के तूफान से लोगों को इस परम सत्य की कुछ भी झलक हो सकी कि मानव जीवन की हिंसा से बढ़कर दूसरा कोई पाप नहीं है, तो इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि मेरे दुर्भाग्य के पच्चीस बरस में भलाई के मोती भी अन्तर्हित थे।'

(२४)

जब आगमोस की तबीयत दुरुस्त हो गई, स्वेन टहलता हुआ एक दिन दोपहर के वक्त नेदफोर्ड के बंदरगाह पर आ पहुँचा। देखा, 'नेद' अपने पुराने घाट पर खड़ी है और ओलास आदि उसके पुराने मल्लाह मछली के शिकार पर जाने की तैयारी कर रहे हैं। गरमी के दिन थे, अतएव समुद्र की हवा खाने के लिए स्वेन का दिल ललचाने लगा। सोचा, दो एक रात समुद्र पर ही क्यों न बिताई जाय। ओलास राजी तो न था, पर इन्कार नहीं कर सकता था। अतएव स्वेन जा लदा और किश्ती रवाना हुई।

मौसिम बुरा न था, अतएव काफी शिकार हाथ लगने की उम्मीद थी। फिर भी स्वेन ने देखा कि नेद के मल्लाह न जाने क्यों उदास और चिड़चिड़े हो रहे हैं, न किसी से बोलते हैं, न मुस्कराते हैं, केवल मनहूस की तरह मुँह लटकाये चुपचाप बैठे हैं,

और बोलते भी हैं तो सिवा गाली-गलौज के बात नहीं करते, मानो एक दूसरे का मुँह भी देखना न चाहते हों। स्वेन को वह चुप्पी अखरने लगी। वह रात भर डेक पर अकेला बैठा रहा, पर किसी ने उससे कुशल क्षेम भी न पूछा, मानो सबके मिजाज किरकिरे हो रहे हों।

प्रातःकाल हुआ और जालें बाहर खींचे जाने लगीं। एक ओर ओलाफ खींच रहा था, दूसरी ओर कोरफीलोन। बाकी सब मछलियाँ निकालने को तैयार खड़े थे। पहला बाम आया और इन्द्रधनुष के रंग की बड़ी-बड़ी मछलियाँ देखकर सब लोग चहक उठे। पर ज्योंही जाल ऊपर उठा, चमचमाती मछलियों के साथ एक काली काली वस्तु देखकर सब लोग स्तब्ध हो गये। वह किसी आदमी की लाश थी, जो मछलियों के साथ जाल में उलझ गई थी। एक व्यक्ति उसे छुड़ाने के लिए लपका, पर ओलाफ ने डाँट कर कहा, 'छोड़ो उसे। यही आया, दूसरी आ पहुँची है।' और पाव-भर बाद आपस में चिपटी हुई दो और लाशें जाल में दिखलाई पड़ीं। इसी समय कोरफीलोन ने भी मछलियों के साथ एक भयंकर बोझ ऊपर खींचा। क्रमशः मछलियों, लाशों और जालों का ढेर पर ढेर लग गया। मछलियाँ जाल में उछलती हुई तड़प रही थीं जिससे ढेर की भयंकरता और भी अधिक बढ़ जाती थी। उस दृश्य को देखकर स्वेन की आँखों में आँसू छलक आये। उसने हाथ से बार बार आँखें पोंछी, पर आँसू न रुके। आखिरकार काम छोड़कर वह एकान्त में जा खड़ा हुआ और सिसक सिसक कर जी का गुबार निकालने लगा।

मल्लाह अनमने होकर जालों से मछलियाँ निकालने में व्यस्त थे और अब पहले से भी अधिक उदास, मौन और चुप हो रहे थे।

इसी समय मुखिया की आवाज आयी—'सब फालतू चीजें जाल से निकाल कर पानी में फेंक दो।'

स्वेन ने कहा था, पर सहायता देना आवश्यक समझ पुनः अपने स्थान पर आ खड़ा हुआ और मल्लाहों के साथ काम में जुट गया। वे फालतू कूड़ा निकालकर पानी में फेंक रहे थे और जाल सुलझाकर एक ओर बटोरते जाते थे। इसी समय स्वेन ने एक बड़ी-सी लाश को जाल की डोरियों से बाहर निकाली। किसी ने कहा—'सब फालतू चीजें पानी में फेंक दो।'

स्वेन ने उसे रोका। बोला, 'ओलास! क्या हर्ज है, यदि यह कब्रिस्तान में दफना दी जाय?'

पर ओलास कब मानने वाला था। 'नहीं, नहीं'—वह बोला, 'किसी न किसी पुराने वस्तुओं को झटपट दूर कर देना ही ठीक होगा।'

स्वेन की आँखों के आँसू और भी वेग से उमड़ पड़े। दृढ़ता के साथ वह बोला, 'मुझे चाहे पानी में धक्का दे दो, मैं इस लाश को नहीं फेंकने दूँगा!'

लोगों ने देखा कि जैसा वह कहता था, वैसा करने को भी तैयार था। ओलास गुर्राया और किनारे हट गया। स्वेन ने लाश उठायी। वह भारी थी, इसलिए अकेला न उठा सका। एक आदमी मदद करने आ गया। क्रमशः सभी लाशें जालों से निकालकर एक ओर रख दी गयीं। वैसी ही एक और लाश पाकर किसी ने कहा—'जर्मन मालूम देता है' और उस अंग्रेज वाली लाश की बाजू में लिटा दी।

स्वेन ने आश्चर्य के साथ देखा कि किनारे पर खड़े हुए लोग वे सब सहसा बदल गये। वे न जाने क्या थ—

शांत और गंभीर होकर खड़े थे, मानो उन्हें किसी से भी घृणा न हो। ऐसा प्रतीत होता था मानों डूबे हुए सैनिकों की लाशों को समुद्र में सड़ने से बचाकर उनके मन में भारी शांति आ गयी हो।

प्रत स्वेन भी अपने मन के आकस्मिक परिवर्तन से आश्चर्यान्वित हो रहा था। आज अनायास ही उसे वह अलौकिक शांति मिल गयी थी, जो वर्षों से--खासकर युद्ध से लौटा तब से—उसके लिए दुर्लभ हो गयी थी। आज मनुष्य की अमर, अविनाशी आत्मा के इन जर्जर कलेवरों को बचाने के उपलक्ष्य में उसे अपने चारों ओर साधुवाद की असंख्य अदृष्ट वाणी सुनाई पड़ रही थी—'तुम मुक्त हो गये। तुम्हारी कालिमा धुल गयी। तुमने इन मानव-शरीरों के लिए अपने प्राणों की भी परवाह न की, अत तुम्हारा प्रायश्चित हो गया।'

उसका हृदय आनन्द और शांति के साथ मंद मंद नृत्य करने लगा। वह मन ही मन कहने लगा—'अब लोग चाहे तिरस्कार और बहिष्कार करते रहें, मुझे चिन्ता नहीं है। क्योंकि मुझे संतोष है कि मेरी तपस्या परिपूर्ण हो गयी। मैंने अपने आपको जीत लिया।'

इसी समय मुखिया की आवाज़ आयी—'सब फालतू चीजें जाल से निकाल कर पानी में फेंक दो।'

स्वेन रो रहा था, पर सहायता देना आवश्यक समझ पुनः अपने स्थान पर आ खड़ा हुआ और मल्लाहों के भयंकर काम में योग देने लगा। वे फालतू चीज़ें निकालकर पानी में फेंक रहे थे और जालों सुलझाकर एक ओर बटोरते जाते थे। इसी समय स्वेन ने एक वर्दीवाली लाश को जाल की डोरियों से बाहर निकाली। किसी ने कहा—'सब फालतू चीजें पानी में फेंक दो।'

स्वेन ने उसे रोका। बोला, 'ओलास! क्या हर्ज है, यदि इसे कब्रिस्तान में दफना दी जाय?'

पर ओलास कब मानने वाला था। 'नहीं, नहीं'—वह बोला, 'किश्ती से इन घृणित वस्तुओं को झटपट दूर कर देना ही ठीक होगा।'

स्वेन की आँखों के आँसू और भी वेग से उमड़ पड़े। दृढ़ता के साथ वह बोला, 'मुझे चाहे पानी में धक्का दे दो, मैं इस लाश को नहीं फेंकने दूँगा।'

लोगों ने देखा कि जैसा वह कहता था, वैसा करने को भी तैयार था। ओलास मुखिया और किनारे हट गया। स्वेन ने लाश उठायी। वह भारी थी, इसलिए अकेला न उठा सका। एक आदमी मदद करने आ गया। क्रमशः सभी लाशें जालों से निकालकर एक ओर रख दी गयीं। वैसी ही एक और लाश पाकर किसी ने कहा—'जर्मन मालूम देता है' और उसे अंग्रेज वाली लाश की बाजू में लिटा दिया।

स्वेन ने आश्चर्य के साथ देखा कि किश्ती पर खड़े हुए लोगों [illegible] दल गये। वे न गाली देते थे, न [illegible]ति थे।

य ...

शांत और गंभीर होकर खड़े थे, मानो उन्हें किसी से भी घृणा न हो। ऐसा प्रतीत होता था मानों डूबे हुए सैनिकों की लाशों को समुद्र में सड़ने से बचाकर उनके मन में भारी शांति आ गयी हो।

अब स्वेन भी अपने मन के आकस्मिक परिवर्तन से आश्चर्यान्वित हो रहा था। आज अनायास ही उसे वह अलौकिक शांति मिल गयी थी, जो वर्षों से--खासकर युद्ध से लौटा तब से—उसके लिए दुर्लभ हो गयी थी। आज मनुष्य की अमर, अविनाशी आत्मा के इन ऊजड़ कलेवरों को बचाने के उपलक्ष्य में उस अपने चारों ओर साधुवाद की असंख्य अदृष्ट वाणी सुनाई पड़ रही थी—'तुम मुक्त हो गये। तुम्हारी कालिमा धुल गयी। तुमने इन मानव शरीरों के लिए अपने प्राणों की भी परवाह न की, अत तुम्हारा प्रायश्चित हो गया।'

उसका हृदय आनन्द और शांति के साथ मंद मंद नृत्य करने लगा। वह मन ही मन कहने लगा—'अब लोग चाहे तिरस्कार और बहिष्कार करते रहें, मुझे चिंता नहीं है। क्योंकि मुझे संतोष है कि मेरी तपस्या परिपूर्ण हो गयी। मैंने अपने आपको जीत लिया।'

---

२५)

आज एप्लम के कब्रिस्तान मे उत्तरी-समुद्र के भयकर युद्ध मे मर हुए नाविकों की कुछ लाशें, जो बहती हुई अन्ततः स्वीडन के पश्चिमी तट पर आ पहुँची थी, दफनाई जा रही है। गिर्जाघर के समीप श्मशान के हाते मे लगभग सत्रह लाशों के लिए लबी चौडी कब्र खोदी गई है, जिसके आसपास पड़ोस की ग्रामीण जनता कधे-से कधा भिड़ाकर गभीरतापूर्वक खड़ी है। यह एप्लम के इतिहास में एक असाधारण घटना मानी जायगी, क्योंकि इससे पहले उस छोटे-से कब्रिस्तान मे न कभी इतना बड़ा जनाजा आया, न इतना भारी जन समुदाय ही एकत्रित हुआ था।

भाड में माता और भाई के साथ स्वेन भी दृष्टिगत हो रहा है, जो पिछले आठ वर्षों से गिर्जाघर के इतने नजदीक कभी नहीं आया था और प्रवेश करते समय बहुत हिचकिचा रहा था, किंतु माता के प्रबल अनुरोध से उसे आने के लिए मजबूर होना पड़ा,

था। नालिया, जो अगनोस से मिलने के लिए नगर से आई थी, उसे आनाकानी करते देख बोल उठी थी, 'सुनो स्वेन ! मैं भी तुम्हारी तरह इस गिर्जे में क़दम रखना नहीं चाहती, पर सैनिकों की इन लाशों को कब्रिस्तान तक लाने के लिए तुमने इतनी दौड़-धूप की कि सप्ताह भर किनारे के टापू छानते फिरे, तो अंतिम समय मुँह छिपाये अलग खड़ा रहना कितना अनुचित होगा। और जब तुम देख रहे हो कि तुम्हारे प्रति लोगों की मनोवृत्ति अब पहले जैसी नहीं है, तो क्या कारण है कि गिर्जे की शक्ल देखते ही बगलें झाँकने लगते हो ?'

नालिया का कहना सोलहों आना ठीक था, क्योंकि लोगों की विचार-धारा में अब सचमुच ही आकाश पाताल का अंतर नज़र आने लगा था। पिछले युद्ध के भीषण हत्याकाण्ड और भयंकर दुष्परिणाम का नज़ारा देख चुके थे। इसलिए असंख्य स्त्री पुरुषों की बलि लेनेवाले उस वीभत्स मृत्यु यज्ञ की तुलना में स्वेन का छोटा सा अपराध उन्हें नगण्य प्रतीत होने लगा था। 'ओह ! मृत्यु से जीवन कितना अधिक पुनीत और महान् है'— अब वे स्वेन की परोपकार वृत्ति और युद्ध पीड़ितों की सहायता करने की लगन देखकर कहने लगे थे, 'निस्सन्देह स्वेन उन लोगों से लाख दर्जे श्रेष्ठ है, जो मानव-जीवन की पवित्रता का निरादर कर दिन-दहाड़े हजारों बेगुनाहों को तलवार के घाट उतार रहे हैं।'

इधर स्वेन की अन्तर्दशा में भी पहले की अपेक्षा भारी परिवर्तन दृष्टिगत होने लगा था। जिस दिन से उसने समुद्र में डूबी हुई लाशें बचाकर परोपकार और सेवा का व्रत ग्रहण किया था, उस दिन से ऐसी अभूतपूर्व शांति का अनुभव होने लगा था, जो न वैभव से उपलब्ध हो सकती थी, न असाधारण वीरता या यश से ही। अब उसे जीवन में पहले पहल

कि संसार में सुख नाम की भी कोई वस्तु है। 'आह! पहले कितना दुःखी और अबोध था!' वह अब सोचने लगा था, 'यह भी नहीं जानता था, जीवन किसे कहते हैं। किन्तु अब कलंक की कालिमा से मुक्त होकर वापस सिग्नन के पास जाऊँगा तो वह कैसी खिल उठेगी! अब लोग चाहे मेरा बहिष्कार करना न छोड़ें, तो भी मुझे दुःख या ग्लानि न होगी, क्योंकि मुझे विश्वास हो गया है कि मेरी अंतरात्मा अब मुझे दोषी करार नहीं देती। मेरे पापों का प्रायश्चित्त हो चुका है।'

पल्लम के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में शरीक होने के लिए अलजीरिद के पादरी भी आये थे। उन्हें देखकर पहले तो स्वेन के मन में एक बेचैनी होने लगी, किन्तु दूसरे ही क्षण वह सोचने लगा, 'आह! यह व्यक्ति मेरा कितना भारी हितेच्छु है! भला कौन मुझे इतना सुन्दर उपहार दे सकता था, जैसा सिग्नन-जैसे अनमोल रत्न के रूप में इस महात्मा ने मुझे प्रदान किया है। निस्संदेह यह एक महात्मा है, क्योंकि इसके चेहरे पर त्याग और आत्म बलिदान की एक असाधारण छाप है।'

जब लाशें दफना दी गई और अंतिम भजन समाप्त हो चुका,
की स्मृति में कुछ कहने के लिए कब्र के सम्मुख
। स्वेन को प्रारम्भिक शब्द नहीं सुनाई दिये,
। अपने भूतपूर्व जजमानों को धन्यवाद देकर पादरी
त्योंही पीछे से बाँह खींचकर किसी ने स्वेन का
कर दिया। पलट कर देखा तो वही अजनबी औरत
आई, जो दो वर्ष पूर्व उत्तर से आनेवाली रेल से उसे
ही एक दिन मिल गई थी।

'अकेली ही आई हूँ'—लोता ने गंभीर मुख मुद्रा
देखकर कहा, 'उनके साथ नहीं।' बसन

संकेत किया। पर व्याख्यान जोर शोर के साथ शुरू हो गया था, इसलिए स्वेन ने लोगों की बातों पर ध्यान न दिया। वह मचल कर उसी ओर गौर के साथ देखने लगा, जिधर सारी भीड़ एकाग्र दृष्टि से ताक रही थी।

'मित्रो!' पादरी सिद्धहस्त वक्ता की तरह गंभीर आवाज़ से कह रहे थे, 'इस समय समाधि के सम्मुख खड़ा होकर आज मैं मृत्यु और जीवन की पवित्रता के संबंध में कुछ कहूँगा। मुझे विश्वास है कि यहाँ एक भी व्यक्ति ऐसा न होगा, जो मृत्यु की अलंघ्य पवित्रता से अनभिज्ञ होकर न जानता हो कि मृतक का अपमान करनेवाला दोनों लोक में कठोर दण्ड का भागी होता है। आपको याद होगा कुछ वर्ष पूर्व यहाँ एल्जम में स्वेन नामक एक व्यक्ति रहा करता था, जिसे हम सब तिरस्कार और घृणा की दृष्टि से देखा करते थे, क्योंकि वह प्रकृति और समाज के एक महान नियम का अतिक्रमण कर मृत्यु की पवित्रता का निरादर कर चुका था। मैं समझता हूँ, आप में से कुछ लोगों ने तो उस दिन अपनी आँखों से देखा होगा, किस तरह इसी गिर्जाघर के मंच से उसके पाप की घोषणा की गई थी, किस तरह लज्जित और तिरस्कृत होकर वह नीचा सिर किये गिर्जे से चुपचाप निकला था, और उसके बाद किस तरह लोगों की व्यंगपूर्ण भर्त्सना सहता हुआ, वह अपने जीवन की निराश घड़ियाँ गिना करता था। आप को याद होगा, कितनी निठुरता से हम लोग तिरस्कार के तीखे बाणों से उसका कलेजा छेदा करते थे, कितनी भीषणता के साथ समाज के प्रबल अस्त्र—बहिष्कार से उसपर प्रहार करते थे, यहाँ तक कि चारों ओर से सता सताकर हम लोगों ने उसे एल्जम छोड़कर बाहर चले जाने के लिए विवश कर दिया था, तथापि व्यक्ति अपनी बेहद आजिज़ी, सहनशीलता और

विमुख नहीं होता था। वह दूसरों की राह से हमेशा छूत की तरह दूर रहता, चुपचाप सब लोगों के तीखे व्यंग्य और उपहास सहन करता और अधिकतर ऐसे ही लोगों के साथ मिलना-जुलता रहता था, जो निकृष्ट श्रेणी के होते। जैसे—अनाथ बच्चे, नहेतू भिखारी और बदमाश खानाबदोश "। और प्रतिदिन हम सुना करते थे कि आज उसके प्रयत्न से अमुक बदमाश रास्ते पर लग गया है और अमुक अनाथ बालक घर-द्वार पा गया है। पर हम उसकी बेहद आजिजी देखकर ऊब उठे थे, क्योंकि जब कभी कोई असाध्य काम आ खड़ा होता, वह फौरन आगे बढ़कर उसे पग पर डालता था, मानो किसी भी रास्ते से हमारी सहानुभूति वापस पाने का प्रयत्न कर रहा हो। हम उसकी असीम सहनशीलता देखकर घबराने लगे, चाहते थे, कि किसी तरह उस व्यक्ति से हमारा पिण्ड छूटे। पर इच्छा होने पर भी हम उसे समाज में वापस शरीक करने के लिए असमर्थ थे, क्योंकि उसे दण्ड देकर अपराध से मुक्त करना हमारी शक्ति से बाहर था। उसने हमारे प्रति कोई अपराध किया होता, तो हम उसे दण्ड भी देते। किंतु वह तो एक प्राकृतिक धर्म का उल्लंघन कर चुका था, तब भला ईश्वर के न्यायालय के उस महान् अपराधी को मुक्त करने या सजा देने की हममें क्या शक्ति थी! भाइयो, जरा कल्पना कीजिये, उस अभागे की उस समय कैसी दयनीय दशा रही होगी। वह दूसरों की भलाई करके अपने पापों का प्रायश्चित्त कर रहा था। तथापि मृत्यु उसके कंधों पर झुककर एक व्यंग्यमय मुसकान के साथ कह रही थी—'तुम उस शिकंजे में फँस गये हो, जिससे संसार की कोई भी शक्ति अब तुम्हें नहीं छुड़ा सकती!'

स्तेन की माता फूट-फूटकर रो रही थी। पर वह निर्भीक होकर वक्ता की ओर ताक रहा था। यद्यपि उसके मनप पुन उसी

आजिजी का अनुभव हो रहा था, जो समाज की सहानुभूति के लिए उसके चेहरे पर पहले झलकती थी, तथापि उसके मन में अब पहले-जैसी आत्म-ग्लानि न थी। वह निश्चित होकर वक्ता का एक एक शब्द सुन रहा था, माना लोगों में अपनी खुली चर्चा होने की उसे तनिक भी परवाह न हो।

किंतु पिछले कुछ दिनों से हम देखते हैं कि मृत्यु का साम्राज्य अधिकाधिक विस्तृत और प्रबल होता जा रहा है—' व्याख्यान जारी था, 'हम देखते हैं कि मृत्यु, हिंसा और अत्याचार के भयानक अस्त्रों से दिनोंदिन मानव जाति पर अपना आतंक जमा रही है। आज एक भी ऐसी बुराई नहीं, जो मृत्यु के राज्य में प्रोत्साहन न पाती हो। वह तरह-तरह के षड्यंत्र, रोग और अपराध फैला रही है, फसल के पहले ही कच्चे पौधे काट लेती है और युद्ध के भीषण वध यंत्र द्वारा घुटकी बजाते हजारों लाखों को तोपों के मुंह उड़ा रही है। आज कितनी विधवाएं मृत्यु के अत्याचार से तड़प रही हैं, कितनी माताएं अनाथ बालकों को लेकर रो रही हैं, कितने बूढ़े, जवान बेटों को खोकर नैराश्य के समुद्र में डूब रहे हैं। अब हजारों मनुष्यों का दिन-दहाड़े कत्ल होना और समुद्र में डूब जाना एक मामूली खेल हो गया है। तब प्रश्न उठता है—क्या मृत्यु के इस मनमाने जुल्म के विरुद्ध लो। लेनेवाली एक भी शक्ति संसार में मौजूद नहीं है, जो त्रस्त मानव जाति की भारी बेड़ियाँ काटकर उसे मुक्त कर सके? उत्तर मिलता है—है क्यों नहीं। मृत्यु का आजन्म शत्रु—जीवन क्या सभी अत्याचारों को तहस-नहस कर फिर से मानव जाति को हरी भरी करने के लिए समर्थ नहीं है? पर पुनः सवाल उठता है—तब क्यों हमारे पैरों की बेड़ियाँ नहीं टूटतीं? क्या हम जीवन को सबसे अधिक नहीं चाहते? भाइयो! इसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए मैं आपके सम्मुख खड़ा हुआ

क्योंकि मुझे प्रतीत होता है कि अभी तक हम लोगों ने जीवन को केवल उपेक्षा की दृष्टि से देखा है, मानो वह कोई बिना वेतन का गुलाम हो, जिससे काम तो पूरा ले सकते हैं, पर तनख्वाह नहीं देनी पड़ती। सच पूछा जाय तो हम लोगों ने जीवन को रोटी जैसा समझ रखा है, जिसे खाते तो सभी हैं, पर धन्यवाद कोई भी नहीं देता, मानो उसमें कोई भी गभीर तत्त्व निहित न हो, मानो उसका न कोई मूल्य हो, न स्वरूप ही!'

'आप लोग कहते होंगे कि यह जानते हुए भी कि हम जीवन को सबसे अधिक प्यार करते हैं, पादरी कोरी कल्पना भिड़ा रहा है। पर भाइयो! मैं पूछता हूँ, क्या जीवन को बलवान बनाने के लिए उसे केवल प्यार करना ही पर्याप्त है? यदि ऐसा ही हो, तो हमारे बच्चे कभी-कभी काटे-जैसे क्यों हो जाते हैं, यद्यपि हम उन्हें सबसे अधिक प्यार करते हैं। क्या इससे साफ पता नहीं लगता कि जिस तरह बच्चों को सुधारने के लिए प्रेम के अतिरिक्त बुद्धि, शिक्षा और शांति की जरूरत है, उसी तरह जीवन के लिए भी किसी और वस्तु की आवश्यकता है? भाइयो! जीवन एक नव-विवाहिता वधू है, जिसे सुशील बनाने के लिए न सिर्फ प्रेम की अपितु शांति, पवित्रता और सयम की आवश्यकता है। जीवन तब तक मृत्यु से लोहा लेने योग्य नहीं हो सकता, जब तक उसका रोम रोम अहिंसा, जाति प्रेम और पवित्रता से अभिमन्त्रित न किया जाय। मुझे प्रसन्नता है कि पिछले कुछ दिनों से हमें इस महान् सत्य की अभिव्यक्ति होने लगी है कि जीवन, मृत्यु से लाख गुना अधिक पवित्र, महान और मूल्यवान है, और जीवन के पुजारियों का सम्मान करना, अनाथों को आश्रय देना, पतितों को राह बताना और सबको समान भाव से देखना ही महान धर्म है। प्रसन्नता की बात है कि अब एल्बम के अधिकांश लोग स्पेन के

प्रति किये गये अपने अपराध के लिये पश्चाताप कर रहे हैं और उसकी परोपकार वृत्ति का सम्मान करते हुए उसे प्यार की निगाह से देखने लगे हैं। क्योंकि वे जान गये हैं कि कोई कैसा ही अपराध क्यों न हो, यदि वह जीवन का भक्त, लोगों का सेवक और गरीबों का सहायक है, तो वह सबसे अधिक आदर और प्रेम का पात्र है।'

'अतएव जीवन के सच्चे पुजारी से, यदि आप लोगों की ओर से, मैं आज पूर्वकृत अपराधों के लिये क्षमा मागूं और घोषणा करूं कि वह सर्वथा निर्दोषी है, तो आशा है कि आप में से कोई भी असहमत न होगा।'

सबकी आखों में आँसू छलक आये। किसी ने भी पादरी के शब्दों का विरोध न किया।

'मुझे प्रसन्नता है कि दूसरे जरिए से साबित होने के पहले ही आपने उसे बेगुनाह स्वीकार कर लिया—पादरी जेब से एक पत्र निकालते हुए बोले और तब विस्तारपूर्वक कहने लगे, किस तरह उत्तरी समुद्र के नाविकों की लाशों से कई कागज पत्र बरामद हुए थे, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण पत्र उस अंग्रेज की जेब से मिला था जिसकी लाश के लिए स्वेन नेद के मल्लाहों से झगड़ा हुआ था। पत्र अंग्रेजी में था, इसलिए उसका अनुवाद करते हुए पादरी पढ़ने लगे—

'प्यारी मेरी

कल हम लोग युद्ध के लिए कूच कर देंगे। पता नहीं, फिर मिलना नसीब होगा या नहीं। इसीलिए आज एक बात लिख रहा हूँ, जिसे प्रकट किये बिना मुझे कब्र में भी शांति न मिलेगी। मेरी ... स्प्रिंगफील्ड के यहाँ

सके, तो उन्हें सूचित कर देना कि उनका गोद लिया हुआ लड़का, ध्रुव यात्रा में हमारे साथ उस बीभत्स पाप में शरीक नहीं हुआ था। वह बेचारा घण्टों से बेहोश था। जब होश में आया, तो हमने उसे झूठमूठ ही बहका दिया था कि वह भी आदमी का माँस खा चुका है, जिससे बाद में हमारे विरुद्ध मुखबिरी न कर सके।"

पादरी बोलते-बोलते रुक गये। पर क्षण भर बाद स्वेन की ओर देखकर रुद्ध-कण्ठ से बोले, 'स्वेन! मैंने ही एक दिन इस गिर्जाघर के मच से तुम्हें दोषी करार देकर समाज से बहिष्कृत किया था। आज परमात्मा को धन्यवाद देता हूँ कि तुम्हें निर्दोषी घोषित कर पुनः समाज में सम्मिलित करने का सौभाग्य भी मुझे ही मिला है। मैं घोषणा करता हूँ कि तुम सर्वथा पवित्र हो। अब तुम्हें दुनिया से मुह छिपाने की आवश्यकता न होगी। अब तुम्हारी ओर एक बच्चा भी तिरस्कार के साथ अगुली नहीं उठा सकेगा × ×'

सुननेवालों के दिल में आनन्द और विस्मय की एक सनसनी फैल गई। वे वर्षों बहिष्कृत स्वेन को पुनः अपने बीच पाकर आनन्द के आँसू बहाने लगे। पर स्वेन उसी तरह शान्तभाव से अपने स्थान पर चुपचाप खड़ा था। उसे समाज में आने की इतनी खुशी न थी, जितनी इस बात से उसकी अन्तरात्मा भी आज उसे निरपराधी स्वीकार कर रही थी।

'किन्तु आप लोग शायद पूछने लगेंगे कि यदि स्वेन बेगुनाह था, तो उसे इतना कष्ट क्यों उठाना पड़ा?' पादरी पुनः भीड़ की ओर मुड़कर कहने लगे, 'तो इसके लिए मैंने दो उत्तर सोचे हैं। पहला तो यह कि परमात्मा सुख देने के पहले अधिकतर दुःख दिया करते हैं। अतएव स्वेन को भी उन्होंने तरह तरह के

कष्ट दिये, ताकि अंत में उसे मनोवांछित सुख उपलब्ध हो सके। दूसरे, कलियुग में ईश्वर हमें प्रत्यक्ष वाणी द्वारा नहीं, प्रत्युत मनुष्य के कर्म द्वारा आदेश दिया करते हैं, ताकि हम जान सकें कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में सृष्टिकर्त्ता का कोई निगूढ़ संदेश निहित है। भाइयो! मुझे विश्वास है कि परमात्मा ने स्वेन को भी एक महान संदेश देकर भेजा है, जिसके द्वारा घोर अज्ञानांधकार के इस युग मे हमें दुख के जाल से मुक्ति पाने का सच्चा रास्ता दिखलाई पड़े——'

स्वेन का हृदय इन शब्दों को सुनकर आनंद के मारे बाँसों उछलने लगा। 'आह! सिग्रन कितनी प्रसन्न होगी, जब कलंक की कालिमा से मुक्त होकर मैं वापस उसके पास आऊँगा।' वह भावी सुख की कल्पना मे गोते लगाने लगा। पर न जाने क्यों उसके पैर ऐसे काँपने लगे कि उससे खड़ा न रहा गया। वह घुटनों के बल ज़मीन पर झुक गया। उसका कलेजा धक-धक कर रहा था। पर भीतर-ही भीतर उसके जी में अब एक वेदना भी उठ रही थी।

'क्योंकि इस व्यक्ति ने हमें सिखलाया है कि बुराई के विरुद्ध युद्ध करने में निरे उपदेश और आदर्श के पाठ निष्फल रहते हैं'—वक्ता कह रहे थे 'आवश्यकता तो इस बात की है कि पतित को पाप मिटाने के लिए उसके मन में पाप के प्रति घृणा का ऐसा भाव भरा जाय कि उसकी आत्मा दहल उठे और तब तक चैन न ले, जब तक पाप की दुर्गन्ध उसके अंतराल से समूल नष्ट न हो जाय। भाइयो! नफ़रत की भावना को दुनिया की बुराई को नष्ट करने का साधन बनाकर, स्वेन ने हमें बतला दिया है कि मनुष्य अपने दुख के काँटे से समस्त बुराइयाँ उखाड़ कर मानव-जाति का महान उपकार कर सकता है।'

व्यापार-उद्योग से लाभ उठाकर, हर तरह से इस भीषण हत्या-काण्ड में योग दिया है। इसलिए ये भयङ्कर लाशें तैरती हुई आज हमारे तट की ओर आ रही हैं, ताकि हम देख सकें, युद्ध कैसी घृणित और वीभत्स वस्तु है।'

'मित्रो ! समुद्र के वक्षःस्थल पर तैरती हुई ये लाशें भूतों की कहानी जैसी कल्पित नहीं है। ये सत्य की तरह ठोस हैं और बतला रही हैं कि ये किसी दिन पुनः इस तट पर इसी स्वरूप में आ सकती हैं, क्योंकि युद्ध के विरुद्ध चाहे-जैसी वक्तृताएं झाड़ी जाती हों और शांति के उपासकों द्वारा उसकी चाहे जितनी खिल्ली उड़ायी जाती हों, तथापि युद्ध का अस्तित्व संसार से मिटा नहीं है। इसलिए मैं आपसे अनुरोध कर रहा हूँ कि आप इन लाशों पर से आँख न हटावें, ताकि एक दिन-'युद्ध' शब्द का उच्चारण भी आप लोगों के लिए कष्टकर हो जावे कि उसे न कोई सुने, न बोले। भाइयो ! युद्ध की भीषणता का यह अंतिम स्वरूप नहीं है। क्या पता, कुछ वर्ष बाद आज का वीभत्स नजारा भुला दिया जाय और हमारी भावी प्रजा नये जोश, उत्साह के साथ पुनः युद्ध के नगाड़े बजाने लगे। क्या पता भविष्य में इससे भी भयंकर हत्याकाण्ड हो और लोग पुनः उसकी वीरता की प्रशंसा और उपासना करने लगें। अतएव आवश्यक है कि मानव जाति के मन में हम अभी से युद्ध के प्रति घृणा की ऐसी भावना भर दें कि भविष्य में लड़ाई का दुनिया से [illegible] जाय। युद्ध मानव-जाति का सबसे प्रबल शत्रु है [illegible] युद्ध क [illegible] गे हुए भ [illegible] रूप में पलट [illegible] सकता है औ [illegible] जिसमें [illegible] स्वर्ण [illegible]

पादरी बोलते-बोलते रुक गये, क्योंकि पीछे से बाँह खींचकर सहसा किसी ने कहा—'स्वेन की हालत खतरनाक है, वह उत्तेजना उससे सहन नहीं हो सकी, उसका कलेजा टूट गया है।'

व्याख्यान जहाँ का तहाँ रह गया। पादरी भीड़ को चीरते हुए स्वेन की ओर लपके। वह माता की गोद में सिर रखे मुर्दे की तरह जमीन पर पड़ा था। उसकी छाती, हृदय की धड़धड़ धड़कन के मारे, धौंकनी की तरह काँप रही थी। पादरी को आते देखकर उसका पीला मुखमण्डल प्रेम की एक मधुर मुसकान से आलोकित हो उठा। वह हाथ बढ़ाकर, क्षमा माँगने के लिए अथवा धन्यवाद देने के लिये, अस्पष्ट स्वर में गुनगुनाया। पादरी उसके सम्मुख घुटनों के बल झुक गये। उनका हृदय स्वेन जैसे अनमोल मित्र को खोने की आशंका से काँप उठा। वे रोते हुए अवरुद्ध कण्ठ से चिल्ला उठे—'मेरे बन्धु, कहाँ जाते हो? ओह, यहीं रहो, कम-से-कम सिमन की ही खातिर।'

लोग उसे पड़ोस के एक मकान में उठा ले गये। भीड़ में से एक डाक्टर भी उसके पास जा पहुँचा था। परीक्षा करके उसने पादरी के कान में कहा कि रोगी एक-दो घंटे से ज्यादा वक्त का मेहमान नहीं है।

इस वक्त वक्ता की प्रतीक्षा में भीड़ ज्यों की त्यों कब्र के आस पास जुटी थी। उन्हें आशा थी कि जाते जाते पादरी और कुछ कहेंगे, जिससे उन्हें जीवन के दुःखों से मुक्ति उपलब्ध हो सके। पर बहुत देर तक बाट जोहने के बाद जब समाचार लाने के लिए आदमी भेजा गया, तो पता लगा कि पादरी मरणासन्न स्वेन को छोड़कर नहीं आ सकते। वे रोगी के गले में बाँह डालकर बैठे हैं। वह उन्हें अन्तिम वक्त अपने से अलग होने देना नहीं चाहता।

(२६)

व्याख्यान की समाप्ति के लिए भीड़ अभी पादरी की प्रतीक्षा में ज्यों की-त्यों खड़ी थी। इसी समय गिर्जे के हाते में अजीब आवाज सुनकर लोग विस्मय के साथ चारों ओर ताकने लगे। क्षण भर बाद उनकी दृष्टि घुटनों के बल गिरी हुई एक स्त्री पर पड़ी, जो बाहें फैलाकर अर्द्ध सुषुप्तावस्था में बोल रही थी। उसकी आँखें मुँदी हुई थीं और मस्तक पीछे की ओर लटक गया था, मानों बेभान होकर वह कोई अद्भुत दिवा-स्वप्न देख रही हो।

'मैं उन मृतकों की आत्माएं देख रही हूँ, जिन्हें इस श्मशान में हम लोगों ने आज दफनाया है', वह कहने लगी—'वे मृत्यु के धुंधले प्रदेश में प्रवेश कर चुके हैं और विद्यालय जैसे प्रतीत होने वाले एक विशाल भवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। द्वारपाल रोकता है, किन्तु वे भीतर प्रवेश करने के लिए हुल्लड़ मचाते हैं।

कहते हैं—'हम दुनिया के मदरसे से पास हो चुके हैं। अब अंतिम परीक्षा देने यहाँ आ उपस्थित हुए हैं।' द्वारपाल कहता है, 'तुम लोग समय से पहले पढ़ाई छोड़कर आ पहुँचे हो, पर अन्त में वह भवन का विशाल फाटक खोल देता है और सबको एक लंबे चौड़े दालान में ले जाकर खड़ा कर देता है। वे सब कठोर परीक्षा के भय से काँप उठते हैं। इसी समय एक दिव्य पुरुष प्रकट होते हैं, जिनके शुभ ललाट पर चाँदी जैसे उज्ज्वल केश तारा रेशम की तरह लहरा रहे हैं। 'पृथ्वी के विद्यालय से उत्तीर्ण विद्यार्थियो !' वे समीप आकर पूछते हैं, 'दुनिया मेरी दस आज्ञाएँ आज कल किस रूप में पालती है ?' विद्यार्थी इस सरल प्रश्न को सुनकर खिल उठते हैं। पर उत्तर देते समय न जाने क्यों, उनकी जबान तुतलाने लगती है, आवाज भर्रा जाती है और गला रुँधने लगता है। वे उत्तर नहीं समझ पाते, क्योंकि इन आज्ञाओं का उच्चारण करते समय उन्हें कठिनाई होने लगती है। अत्यन्त कठिनाई से वे उत्तर देते हैं—'मिथ्या देवों की पूजा न करो, 'प्रभु के नाम का दुरुपयोग न करो, 'रविवार को छुट्टी, मन से शुद्ध रहो,——माता पिता की सेवा करो——'

वृद्ध पुरुष उनको अटकते देख मुस्करा देते हैं। 'तुम लोगों ने ये शब्द क्यों त्यों रट लिए हैं' वे कहते हैं, 'पर ये तो चार ही हुई ! शेष छः आज्ञाएं क्या हैं ?' सुनकर इस बार फौरन बोल उठते हैं। उन्हें अपने विद्यालय में सीखी हुई आज्ञायें याद आ जाती हैं। न उनकी जबान तुतलाती है, न गला ही रुँधने लगता है। एक स्वर में, एक साथ ही सब बोल उठते हैं—'हत्या करो, चोरी करो, व्यभिचार करो, झूठ बोलो, पड़ोसी को लूटो, उसका मकान छीन लो, खेत काट लो, घर उजाड़ दो, स्त्री उठा लो ...

इतनी तेज़ ... देकर वे आनन्द के मारे ...

'हैं ! मैं कहाँ गई थी ? क्या बोली थी ? क्या सचमुच ही परमपिता ने मेरे मुख से अपना सदेश सुना दिया ?' लोला आश्चर्य करती हुई बोली। उसकी आँखों से आनन्द की अविरल अश्रुधारा बह चली थी



उपसंहार

एक वर्ष बाद

अलजेरद क पादरी की कुटिया के सामने एक घोड़ा गाड़ी आ खड़ी हुई। शोक सूचक काले वस्त्र पहन एक नवयुवती उससे उतरी और चुपचाप मकान क पिछले कमरे में चली गई। उसके आगमन से किसी को भी आश्चर्य न हुआ, क्योंकि उसके जीवित रहने की अफवाह पहले फैल चुकी थी। पुन उस छोटे-से परिवार में शांति का साम्राज्य छा गया। पादरी अब पत्नी क जीवन में हस्तक्षेप नहीं करते थे। स्वेन की मृत्यु के बाद वे अधिकतर अकेले ही एकान्त-जीवन व्यतीत करते थे। न दूसरों क काम में दखल देते थे, न अपनी ही स्वच्छंदता मे हस्तक्षेप करने देते थे।

× × + ×

एक दिन कार्यवश सिग्नन पति क कमरे में गयी, तो उसे ऐसी आनन्दमयी कपकपी का अनुभव हुआ, मानो किसी सूने प्रदेश से अचानक प्रेम क पुलकित वातावरण में आ पहुँची हो। उसने देखा कि दीवारों पर भिन्न भिन्न अवस्था के उसके ही अनेक फोटो लटक रहे हैं। अलमारियों में उसकी ही चुनिन्दा किताबें सजी हुई हैं। मेज पर उसके ही हाथों स बना हुआ बेल-बूटेदार रूमाल है और पलग के सिरहाने उसकी ही प्यारी भजन माला की पुस्तक है। उसे समझते देर न लगी, यह पति की ही कृति है। वह आनंद क मारे गद्गद् हो गयी।

'आपको शायद मालूम नहीं है कि स्वेन अपने सम्पत्ति छोड़ गया है' पादरी क समीप आकर वह

पाकर उस अंग्रेज सज्जन ने—जिसने उसको गोद लिया था—अपनी समस्त सम्पत्ति उसके नाम कर दी थी। वह रकम अब जोन और तालिया को मिली है। इसी के संबंध में जोन का आज एक पत्र आया है। वे हम लोगों को इंगर बतौर उपहार दे रहे हैं और स्वेन द्वारा आरम्भ किये हुए लोक-सेवा के कार्य को आगे चलाने का हमें अनुरोध करते हैं। मैं समझती हूँ, वहाँ हमें काम करने का अच्छा क्षेत्र मिल सकेगा।

पादरी का चेहरा गम्भीर हो गया। वे उठ खड़े हुए और कमरे में चहल क़दमी करने लगे।

'अच्छी बात है। यदि जाना चाहो तो मैं रोकूँगा नहीं!' वे लापरवाह की तरह बोले, 'चाहे जहाँ रहो मेरे लिए एक सा है!'

'ओह एडवर्ड! वह चौंककर बोल उठी, 'इस घर के सिवा मेरा दूसरा कौन-सा आश्रय है?'

'पर तुम्हारा घर में रहना ही क्या मेरे लिए पर्याप्त है?'

सिग्रन कुछ भी उत्तर न दे सकी। उसका गला रुंध गया। हाथ पकड़कर वह पति को खिड़की के समीप ले गई। फिर बग़ीचे की ओर संकेत करती हुई बोली—'याद है, हम आये थे उस समय यहाँ बनफशा के कुछ जंगली पौधे थे, जिनकी कोई भी देख-भाल नहीं करता था, तथापि वे प्रति वर्ष उगा ही करते थे। वे फले-फूले और बनफशों के रिक्त स्थान ने